चौ० चरण सिंह

एक चिन्तन एक चमत्कार

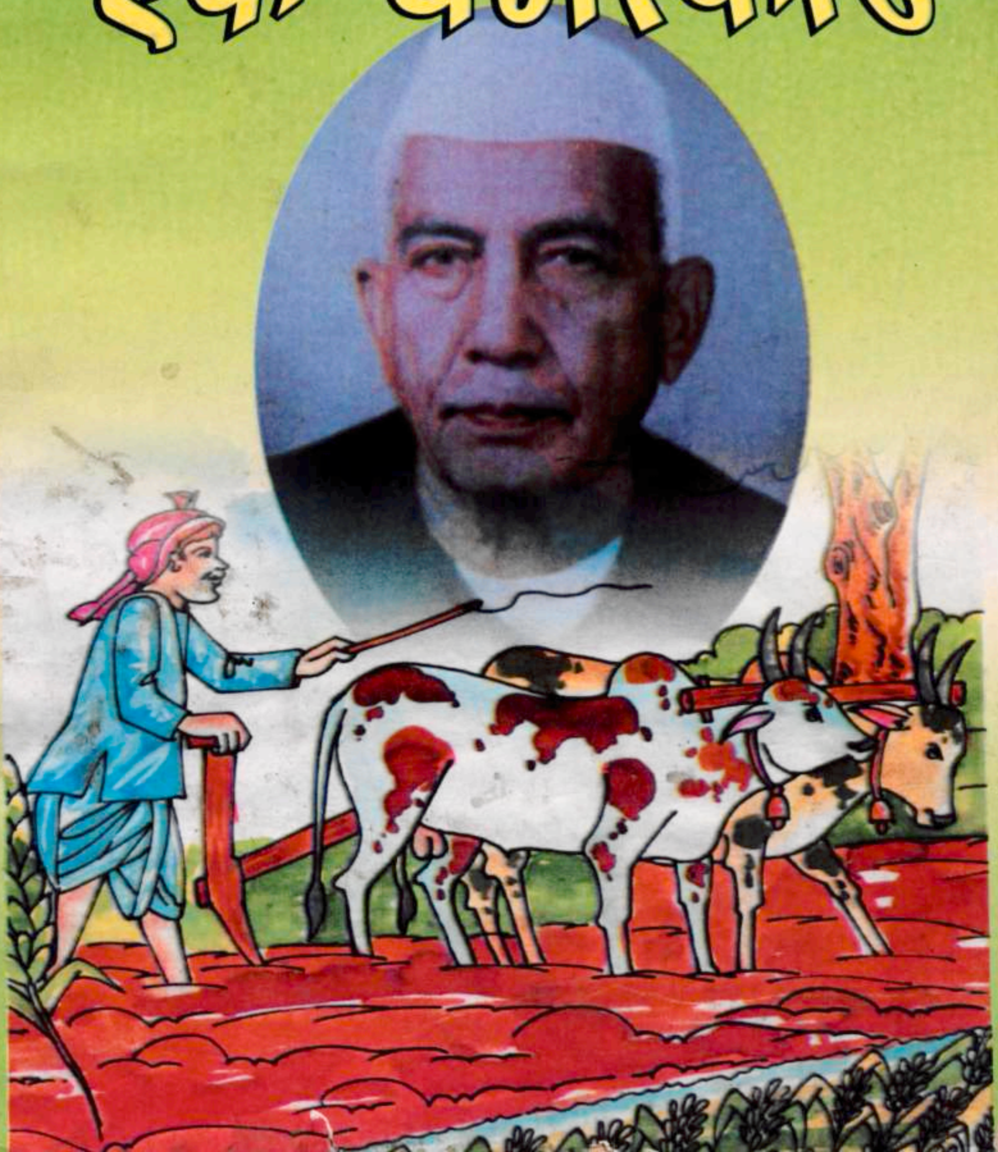

चौधरी साहब ईमानदारी, सादगी ओर संयम के प्रतीक थे। उनकी आवश्यकताएं बहुत कम थी। गरीबों व किसानों के लिये वे हमेशा चिन्तित रहते थे। वह जिस सादगी से रहते थे । वह हम सब लोगों के लिये आदर्श है।

चौधरी अजित सिंह
केन्द्रीय मंत्री

चौधरी चरणसिंह इस देश के महान सपूत थे। जिन्होने गांव व गरीब की पीड़ा को पहचाना व उसको दूर करने के ठोस उपाय सुझाये। उन्ही की छत्र-छाया में यह देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ सकता है।

रुस्तमेंजमां दारा सिंह
मुम्बई

मुझे सन १९७८ में किसान मसीहा चौधरी चरण सिंह जी को नजदीक से देखने और जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, आपातकाल के बाद कांग्रेस के तीस वर्ष के शासन के बाद केन्द्र मे जनता पार्टी की सरकार बनी। जनता पार्टी के गठन में चौधरी साहब की मुख्य भूमिका रही। जनता पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र चौधरी साहब द्वारा तैयार किया गया। सत्ता में आने के कुछ समय पश्चात तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई व पूर्व जनसंख्या घटक के नेताओं के पूँजी वादी व्यवस्था के प्रेम के कारण जनता दल में मतभेद शुरु हो गये। स्व० चौधरी साहब का अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत से ही स्पष्ट दृष्टिकोण था। कि अगर देश और समाज की उन्नति करनी है तो ग्राम विकास पर ध्यान देना होगा । गांव के विकास के बिना देश के विकास की कल्पना नही की जा सकती चौ० साहब का मानना था कि देश की ८० प्रतिशत जनता जो गांव में रह रही है। वह बैगर मूलभूत सुविधाओं के अपना जीवन व्यापन कर रही है। उपलब्ध संसाधनों से इतनी आमदनी नही है वह अपने जीवन स्तर को सुधार सके अपने बच्चों को अच्छी दिला सकें। आशा करता हूँ इस पुस्तक के माध्यम से आने वाली पीढ़ी चौ० साहब के बारे में जानेगी। और उनका अनुसरण करके समाज के उत्थान में अपना योगदान देगी।

युद्धवीर सिंह

महासचिव

अखिल भारतवर्षीय जाट महासभा

आज एक टीस सी महशूश होती है कि काश! चौधरी चरण सिंह पांच वर्ष भी इस देश के प्रधानमन्त्री रह गये होते तो ये टूटते गांव छोटे-छोटे विकसित शहर नजर आते और भारत विश्व में एक महाशक्ति के रुप में उभर कर आ गया होता ।

इसी दिशा में यह पुस्तक एक छोटा सा सार्थक प्रयास है । ग्रामीण भारत के समर्थक सभी नेताओ को इस पुस्तक के माध्यम से एक मंच पर आने का आहवान करता हूँ जो आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता व समय की पुकार हैं अन्यथा असली भारत व चौधरी चरण सिंह का सपना टूट जाएगा ।

प्रोफेसर ओउम सिंह
चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय
मेरठ।

चौ० चरण सिंह का नाम सुनते ही मेरे हृदय में उस महामानव का चित्र उभरकर सामने आ जाता है ,जिसने नारी जाति के उत्थान के लिए भगीरथ प्रयत्न किया । जीवन में आगे ही आगे बढ़ना सिखाया। किसानो के हित में अनेक आन्दोलन किए। उन्हे सत्ता में भागीदारी के लिए चेताया। उन्होने कहा था कि जिस समाज में नारी जाति शिक्षित व सम्मानित होती है वहाँ हर प्रकार से सुख व शान्ति का निवास होता है। किसी भी समाज की सभ्यता इसी बात से पहचानी जाती है कि वह महिलाओं के साथ किस प्रकार का व्यवहार करता है। चौधरी साहब ने नारी जाति पर जो उपकार किये है उन्हे कभी भी नही भुलाया जा सकेगा। उन्होने स्त्री शिक्षा पर जोर देते हुए कहा था पुरुष जब शिक्षित होता है तो वह एक अकेला शिक्षा पाता है। जब हम नारी की शिक्षित करते है तो पूरे परिवार को शिक्षित करते है तो परिवार को शिक्षित करते है। इस तरह नारी में आत्म सम्मान का भावउन्होने जगाया। उनके साधारण किसान परिवार में जन्म लेकर दिल्ली की राजगद्दी तक की आन्दोलन भर यात्रा सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। धन्य है वह मां जिसने चरण सिंह जैसा सपूत पैदा किया ।

श्रीमति निर्मल सिंह

21, हरि लोक,
साकेत, मेरठ।

चौ० चरण सिंह नाम है एक विश्वास का जो उन्होने जन जन में पैदा किया जहाँ व खड़े होते थे वही असंख्य हाथ उनका सर्मथन करते मिलते थे। वे अपनी बात पूरे आत्म विश्वास के साथ कहना जानते थे और जहाँ भी अन्याय व अनिति देखते थे विरोध का स्वर बुलन्द कर देते थे। वे आकड़ों में सिद्धहस्त थे और विरोधियों की जवान बन्द करना जानते थे। उन्होने ग्रामीण भारत के उत्थान के लिए एक सपना देखा था और आजीवन उसको मूर्तरुप देने के लिए संघर्ष किया। उन्होने सदाचार व सादगी का जीवन जिया तथा दूसरों को उदारहण देते हुए सत्ता के शिखर तक पहुँचें। उनका पूरा जीवन अनुकरणीय व वन्दनीय है। उनके जैसा नेता कभी कभी पैदा होता है। आज विदेशों में उनके आर्थिक दर्शन की मान्यता है। यह ग्रामीण भारत के लिए हर्ष का विषय है।

चौ धीरसिंह (एडवोकेट)
जेल चुंगी, मेरठ।

भूमिका

इस पुस्तक के लेखक माननीय श्री सी० पी० सिंह जी (भूतपूर्व जिला जज) के इस अनूठी कृति की भूमिका लिखने के लिए मै गौरवन्वित महसूस करता हूँ। आग्रह के अनुपालन में आज जब कि किसानों और गरीबों के मसीहा माननीय स्वर्गीय चौ० चरणसिंह हमारे बीच में नही है,के बारे में उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त जो सदैव प्रासांगिक रहेगे को शब्दो की भाषा देने का प्रयास अत्यन्त प्रंशसनीय और प्रेरणादायक है। जिसके लिए श्री सिंह बधाई के प्रात्र है।

आज देश भर में सर्वत्र किसान जागरण की हवा चल रही है। उसके पीछे चौ० चरण सिंह जी की ही आत्मा काम कर रही है जिन्होने अपने जीवन काल में असंख्य किसानों को एक मंच पर खड़ा किया तथा किसानों एवं गरीबों के शोषण व अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की। यह आवाज इतनी बुलन्द थी कि हर गांव में चौधरी साहब की चर्चा चौपालों पर होने लगी। उनकी कथनी व करनी में कोई अन्तर न था इसी कारण ग्रामीण भारत का उन पर विश्वास बढ़ता ही चला गया और वे कृषक क्रान्ति के अग्रदूत बन गये। जब भी किसान हित की चर्चा होती है चौधरी साहब का नाम आज भी हर गांव में आदर के साथ लिया जाता है। उनकी मृत्यु के उपरान्त उनका प्रभाव जिस तीव्रगति से बढ़ा है वह उनके चमत्कारी व्यवितत्व के ही कारण था। कोई अपना प्रभाव धन से बढ़ाता है कोई पद से बढ़ाता है, परन्तु चौधरी साहब का प्रभाव पद छोड़ने पर बढ़ता ही था घटता नही था क्योंकि वे अपने हृदय व मस्तिष्क की आवाज सुनकर पद त्याग का निर्णय......

करते थे। आजकल के समय में हृदय व मस्तिष्क की आवाज तो क्या अपनी आत्मा की आवाज सुनकर भी आजकल के अधिकांश नेतागण देश की आम जनता के हितों में अनीति एवं अन्याय के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने अथवा पद त्याग करने को तैयार नहीं है क्योंकि वे पदलोलुप एवं धनलोलुप हैं पदलोलुपता एवं धन लोलूपता ने उन्हें कायर बना दिया है। आज के समय के कुछ नेतागण कायर हैं। इस कायरता के कारण वे अपनी अधिनस्थ कार्यपालिका के अधिकारियों के विरूद्ध कोई ठोस कार्य करने में असमर्थ हैं। इस कारण कार्यपालिका के अधिकांश अधिकारीगण भी धन लोलुप एवम् भ्रष्टाचारी बन गये है देश के रक्षक देश के भक्षक बन गये हैं।

परन्तु चौधरी साहब ने आजीवन देश की आम जनता में अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए धन, बल एवं अन्य प्रकार के अनुचित बलों का सहारा नहीं लिया क्योंकि वे एक सच्चे इंसान एवं सच्चे देशभक्त थे इस कारण पद छोड़ने पर देश की आम जनता में उनका प्रभाव बढ़ता ही था घटता नहीं था। इस पुस्तक (चौधरी चरण सिंह का चमत्कार) के लेखक श्री सी० पी० सिंह चौधरी साहब के सच्चे अनुयायी हैं। यह पुस्तक चौधरी साहब एवं उनकी नीतियों के प्रति लेखक के प्रेम को उजागर करती है। चौधरी साहब के स्वच्छ चरित्र, नीतियों एवम् जीवन के सिद्धान्तों से प्रेरणा पाकर ही वे यह अमूल्य कृति चौधरी चरण सिंह एक चिन्तन एक चमत्कार लेखबद्ध करने में सफल हुए हैं।

अट्ठारह (18) अध्यायों में विभाजित यह पुस्तक चौधरी साहब के पूरे जीवन की सजीव गाथा है जिसमें उन्होंने जीवन के महाभारत के बीच खड़े रहकर हर चुनौती को स्वीकार किया। हर प्रकार की अनीति एवं अन्याय का विरोध किया। वे किसानों गरीबों के हितैषी एवं गरीब जनता के शोषण के सजग प्रहरी होकर जनता के सम्मुख खड़े हुये। किसी अध्याय में उन्हें मानव के मौलिक अधिकारों का सजग प्रहरी करके दर्शाया गया है। कहीं ग्रामीण भारत का परम हितैषी माना गया है। किसी अध्याय में सहकारी कृषि के विषय में देश के प्रधानमंत्री स्व: पं० जवाहर

लाल नेहरू के समक्ष उनकी सहकारी कृषि की नीति के विरूद्ध अपनी व्यक्तिगत कृषि नीति का सजग प्रहरी दर्शाया गया है। किसी अध्याय में नारी जाति की शिक्षा एवं उसके उत्थान के विषय में चौ० साहब का योगदान उजागर किया गया है। किसानों व गरीबों के परम हितैषी चौधरी साहब ने जो ग्रामोउत्थान का सपना देखा था उसके विषय में उनके विचारों का सजीव वर्णन इस पुस्तक में मिलता है। गांधी जी के समक्ष नतमस्तक चौधरी साहब ने उनमें जो तीन भूलें पाई थीं उनको उजागर करके लेखक ने यह दर्शाया है कि चौधरी साहब में न तो अन्ध श्रद्धा थी ना अन्ध विरोध स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा से प्रभावित चौ० साहब के जीवन में अखण्ड़ देशभक्ति थी। उनकी आत्मा किसानों एवं गरीबों के हितों को समर्पित थी। उनकी आत्मा देशभक्ति की पुजारी थी। उनकी आत्मा आर्य समाजी सिद्धान्तों से आन्दोलित होती थी। चौधरी साहब पर लिखी इस पुस्तक में उन्हें जातिवाद का घनघोर विरोधी तथा समतावादी समाज का समर्थक दर्शाया गया है, एक पूरे अध्याय में इस अनूठी पुस्तक में आर्य समाजी सिद्धान्तों व आर्यसमाजी कौन? इस विषय पर जो सूक्ष्म विवेचना की गयी है वह अन्यत्र देखने को नहीं मिलती। चौधरी साहब, महर्षि दयानन्द व आर्यसमाजी सिद्धान्तों के प्रशंसक थे। यह अध्याय सचमुच जीवन गीता है। चौधरी साहब के अमूल्य विचारों को **चौदहवें अध्याय** में बड़ी सहजता से समझा गया है जो दर्शाता है कि लेखक की उनके विचारों पर गहरी पकड़ है और उन्होंने चौधरी साहब के दर्शन पर गहन चिन्तनमनन किया है। चौधरी साहब के निधन के उपरान्त देश में श्रद्धा को जो सैलाब उमड़ा उसकी विस्तृत चर्चा अन्तिम अध्याय में की गई है।

वे सिर्फ किसानों के मसीहा नहीं थे। बल्कि वे गरीबों के भी मसीहा थे। दुर्भाग्यवश हम उनका दूसरा रूप नहीं देख पाये। क्योंकि इसका अवसर उन्हें जीवनभर प्राप्त नहीं हो सका। काश उनको अपनी विचारधारा व नीतियां, देश में लागू करने का अवसर प्राप्त हो जाता। तो आज हमें अपने देश की यह दुर्दशा देखनी न पड़ती जो आज के समय में है। दुर्भाग्यवश देश की आम जनता को

आज अपने देश की आर्थिक दुर्दशा का ज्ञान नहीं है। वास्तव में चौधरी साहब श्रद्धा व समझ के गौरीशंकर थे। मनुष्य का मानव बनना उसकी जीत है। दानव बनना उसकी हार है। और महामानव बनना उसका चमत्कार है। चौधरी साहब के व्यक्तित्व के संबंध में इस पुस्तक में काव्य रूप में जो उनके चमत्कार की चर्चा की गई है। वह जनमानस के हृदय में हर्ष की लहर, पैदा करेगी यह मेरा विश्वास है। इस पुस्तक में उठो जागो (उठिष्ठत जाग्रत) शीर्षक में जो कविता है वह जागरण का मूलमंत्र हैं जिसे प्रबुद्ध किसान को कंठस्थ करना चाहिये। इस पुस्तक में जो जगह-जगह पर चार पंक्तियों में काव्य की छठा है वह मौलिक व अनूठी है। श्री सी० पी० सिंह जी न्यायिक सेवा में रहते हुये भी सामाजिक मंचों पर उपस्थित रहे। तथा सामाजिक कार्यों से भी जुड़े रहे। उन्होंने दिल्ली, आगरा, ग्वालियर, व मथुरा आदि जिलों में अनेक स्थानों पर सामाजिक मंचों पर सक्रिय भागीदारी की। वे माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद से सन् 1998 में सेवा निवृत्त हुये।

सेवा निवृत्ति से पूर्व ही "महात्यागी महेन्द्र प्रताप" व "सच्चे सपूत" नामक पुस्तकें लिखकर उन्होंने ग्रामीण जनता व निर्धनों के प्रति अपने विचार प्रकट कर दिये थे। भाग्यवश मुझे उनके निकट आने पर उनकी अमूल्य पुस्तक (चौधरी चरण सिंह-एक चिन्तन : एक चमत्कार) पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ इस पुस्तक को पढ़ने के पश्चात मैंने अनुभव किया कि वे कुशल न्यायाधीश तो थे ही अपितु उनको ग्रामीण जीवन एवम् ग्रामों की ग्रामीण निर्धन जनता की समस्याओं का भी पूर्ण ज्ञान है। ग्रामीण जनता की समस्याओं व चौधरी चरण सिंह के पूर्ण व्यक्तित्व का ज्ञान होने के कारण ही वे इस अमूल्य कृति को लेखंबद्ध करने में सफल हुये हैं। इस अमूल्य कृति को जन-जन तक पहुंचाना भारत वर्ष के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। इसलिये इस पुस्तक को पढ़ने वाले प्रत्येक व्यक्ति से मेरा अनुरोध है कि वह इस अमूल्य पुस्तक को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयत्न करें ताकि हमारे आने वाली पीढ़ियां चौधरी साहब की जीवन शैली को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर अपने जीवन को सफल बना सकें तथा चौधरी साहब के समान एक सच्चे, चरित्रवान व ईमानदार इन्सान बन सकें।

माननीय चौधरी चरण सिंह जी ने एक निर्धन किसान परिवार में जन्म लिया तथा ग्रामीण समाज, कृषकों एवम् गरीबी की समस्याओं को अपनी बाल्यावस्था व युवावस्था में देखा। वे प्रतिभा के धनी थे इसी कारण उन्होंने किसानों, गरीबों, एवम् कामगारों की समस्याओं के समाधान तथा ग्रामोत्थान का बीड़ा उठाया। माननीय स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू जी देश में को आपरेटिव फार्मिंग (सहकारी खेती) के पक्षधर थे परन्तु चौधरी साहब नेहरू जी की इस विचारधारा से सहमत नहीं थे और उन्होंने नेहरू जी की कोआपरेटिव फार्मिंग (सहकारी खेती) की नीति का विरोध किया।

नेहरू जी चौधरी चरण सिंह जी की विचारधारा से सहमत हुये और उन्होंने देश में कोआपरेटिव फार्मिंग (सहकारी खेती) लागू करने की अपनी विचारधारा का परित्याग किया तथा भारतवर्ष में चौधरी साहब की व्यक्तिगत फार्मिंग की विचारधारा को लागू किया गया। यह चौधरी साहब की कृषक समाज के लिये प्रथम उपलब्धि थी। अन्यथा आज देश के किसानों की जो दुर्दशा होती तो उसे सोचकर कम से कम मेरा तो हृदय कांप उठता है। उसके पश्चात चौधरी साहब ने निर्धन किसानों की समस्याओं के निवारण हेतु उत्तर **प्रदेश जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार** अधिनियम 1951 तथा उसके पश्चात उत्तर प्रदेश **चकबन्दी अधिनियम 1954 लागू** कराये जिससे किसानों को जो लाभ प्राप्त हुआ। वह सर्वविदित है जिसका पूर्ण विवरण लेखक द्वारा दसवें अध्याय में किया गया है। वे अपने पूरे जीवन काल किसानों के हितों की लड़ाई लड़ते रहे। उन्होंने निर्धनों, कामगारो तथा निर्धन किसानों में से विधान सभाओं व लोक सभा में ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़े प्रतिनिधि पहुंचाने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। चौधरी साहब के कारण ही देश के अन्य नेताओं का ध्यान भी ग्रामों की ओर केन्द्रित हुआ तथा ग्रामों का थोड़ा विकास सम्भव हुआ।

चौधरी साहब का चरित्र आज भी जनता में निष्कलंक है। उनके चरित्र पर दाग नहीं, उनकी ईमानदारी पर किसी को सन्देह नहीं, वे एक सच्चे इन्सान व सच्चे

देश प्रेमी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में जो भी सोचा, जो भी किया, वह ग्रामीण समाज के लिये किया क्योंकि वे जानते थे शहरों में वास करने वाले अधिकांश व्यक्ति सक्षम हैं। देहातों में रहने वाले व्यक्ति मनुष्य होते हुये भी पशुओं के समान जीवन व्यतीत कर रहे हैं उन्हें अन्य सुविधा तो क्या सौंच सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। इसी कारण उन्होंने मुखर शब्दों में कहा था कि **"ग्रामीण समाज में अभी तक हमारी माताओं, बहुओ, बहनों व बेटियों के लिए शौंच सुविधा तक उपलब्ध नहीं है। हमें आजादी मिले तो इतने वर्ष हो चुके हैं परन्तु अभी तक हम अपनी माताओं, बहुओं, बहनों व बेटियों के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में शौच सुविधा भी उपलब्ध नहीं करा पाये हैं यह हमारे लिये शर्मनाक है।"** आज वर्तमान में हमें चौधरी साहब के विचारों से प्रेरणा लेनी होगी। विकास का रुख शहरों के साथ साथ ग्रामीण अंचलों की तरफ मोड़ना होगा अन्यथा देश का विकास अवरूद्ध हो जायेगा। चौधरी साहब शहरों के विकास के विरूद्ध नहीं थे परन्तु वे शहरों के विकास के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के भी पक्षधर थे।

यह पुस्तक लिखकर श्री सी० पी० सिंह ने समाज की एक बहुत बड़ी सेवा की है तथा चौधरी चरण सिंह के दर्शन को समझने के लिये एक नई दृष्टि दी है। मेरा विश्वास है कि ग्रामीण समाज एवम् शिक्षित वर्ग इस पुस्तक को पढ़कर हर्षित होगा। **"मेरा भारत सरकार से आग्रह है कि चौधरी चरण सिंह जी को मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया जाये जिसके वे सच्चे अधिकारी हैं।"**

अनिल चट्ठा

138, विजय नगर, मेरठ।

प्रस्तावना

जो स्थान स्वतंत्रता संग्राम में महात्मागांधी का है वही स्थान किसान आन्दोलन में धरती पुत्र चौधरी चरणसिंह का है। चौधरी चरणसिंह के चमत्कारी व्यक्तित्व की चर्चा करते हुये प्रसिद्ध नेता मधुलिमये ने एक बार कहा था कि उनके व्यक्तित्व में सरदार पटेल की झलक थी तथा नयी पीढ़ी के नेताओं में चौधरी साहब सबसे महत्त्वपूर्ण ही नहीं बल्कि कई अर्थों में सबसे ज्यादा असामान्य नेता भी थे। एक अन्य विचारक ए० बी० सेतु माधवन ने चौधरी साहब के चमत्कारी व्यक्तित्व को दर्शाते हुये कहा था कि—

"जब कोई देश संकट के दौर से गुजरता है तब उस देश के महान व्यक्तियों का जीवन वृत्त, उनका दिखाया रास्ता, उस देश के लोगों को संकट से जूझने की प्रेरणा देता है तथा अंधेरे से निकलने का रास्ता सुझाता है। महान व्यक्तियों की महानता इसी में निहित होती है कि उनका दिखाया रास्ता, उनकी नीतियाँ व सिद्धान्त उनके देश के समाज का हर दौर में पथ-प्रदर्शन करते रहें। वर्तमान से भटके हुये इस देश को राह दिखाने हेतु जिस प्रकाश स्तम्भ की जरुरत है उसी का नाम चरणसिंह है।"

समाज के विभिन्न वर्गों से अपार सम्मान व अपार ख्याति अर्जित करने वाले चौधरी का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को मेरठ कमिश्नरी की हापुड़ तहसील में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। जिस गाँव में उनका जन्म हुआ उसका नाम नूरपुर है जो बाबूगढ़ छावनी के पास स्थित है। नूर शब्द का अर्थ प्रकाश होता है। ज्ञानीजन कहते रहे हैं कि 'अधंकार से प्रकाश की ओर चलो, अज्ञान से ज्ञान की ओर चलो, मृत्यु से अमृत की ओर चलो'। चौधरी चरणसिंह आजीवन हाथ में मशाल लेकर देश को गरीबी, शोषण व अन्याय के अंधकार से निकलने का रास्ता

सुझाते रहे। उन्होंने 1925 में आगरा विश्वविद्यालय से इतिहास विषय में एम० ए० किया। उसके पश्चात 1926 में कानून की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् 1928 में गाजियाबाद में वकालत शुरू कर दी। 1929 में उन्होंने गोपीनाथ अमन के साथ मिलकर कांग्रेस का गठन किया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान वे जेल गये और उन्हें छः माह की सजा हुई। सन् 1940 वे देश की स्वतंत्रता के लिये जेल गये। कोई भी देश गुलाम रहकर कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। सन् 1929 से 1939 तक वे गाजियाबाद कांग्रेस को मजबूती देने में लगे रहे। अपने नेतृत्व शक्ति का परिचय देते हुये उन्होंने एक गुप्त संगठन खड़ा किया जो गाजियाबाद व उसके आस पास के नगरों में कार्यरत था और हरदिन सबल होता जा रहा था। इसी कारण उन्हें 1942 में गिरफ्तार कर लिया गया वे नवम्बर 1943 में रिहा हुए।

सन् 1936 में वे पहली बार केवल 34 वर्ष की आयु में छपरौली से उत्तर प्रदेश धारा सभा के लिये चुने गये। इस क्षेत्र ने आजीवन उनका साथ दिया। सन् 1939 में उन्होंने धारा सभा में एक प्रस्ताव रखा था कि जो जोतदार लगान का दस गुना जमा कर दे उस जमीन का स्वामित्व जोतदार को दे दिया जाये। यह बिल धारा सभा में पारित नहीं हो सका परन्तु उनके प्रयास की खबर गांव-गांव पहुँच गई थी। वे उसी समय से किसानों के परमहितैषी माने जाने लगे थे। उन्होंने अपनी किसान निष्ठा का प्रमाण दे दिया था। ज्ञानीजन सदैव से कहते रहे हैं कि जिन्हें भी धरती पर कुछ सार्थक करना है उन्हें जीवन दाव पर लगाना ही पड़ता है। उन्हें स्वार्थ से ऊपर उठना ही पड़ता है। उन्हें मोह की मोमबत्ती को, साहस की मशाल बनाना ही पड़ता है। जो चुनौती देखकर सुरक्षा की माँग करते है अथवा भाग खड़े होते हैं अग्रणी नेता नहीं बन सकते। चुनौती झेलकर ही जीवन का विकास होता है। जिसके पास इतिहास नहीं वह देश नहीं होता, जिसके पास दृष्टि नहीं वह दिव्य नहीं होता, जिसके पास साहस नहीं वह शूरवीर नहीं होता, जिसके पास ज्ञान नहीं वह गुणी नहीं होता और जिसके पास नारा नहीं वह नेता नहीं होता।

चौधरी चरणसिंह के जीवन में सादगी, सद्ज्ञान व सबलता की त्रिवेणी बहती थी। उनका नारा कि देश की समृद्धि का मार्ग देश के खेत खलिहान से होकर गुजरता है। आज भी देश के असंख्य किसानों के हृदय में बसा है।

मानव जीवन, अन्तहीन अवसरों का सिलसिला है। इन अवसरों को जो जितना ज्यादा पहचानता है वह उतना ही आगे बढ़ता है। समझदार वही है जो समय का संकेत पहचानता है। राजनीति में भाग लेने वाले हर नेता को यह सदैव याद रखना चाहिये कि आन्दोलन सत्य की भाषा बोलने से नहीं चलता अपितु हर सफल आन्दोलन समय की भाषा बोलने से चलता है। जिसे भी नेता बनना होता है वे जीवन की आज की समस्या से जूझते हैं, कल के सपनों में जनमानस को नहीं उलझाते। चौधरी चरणसिंह सत्य व समय दोनों की भाषा बोलना जानते थे तथा पुरूषार्थ को परममूल्य देते थे। जो भी उन्हें सार्थक व किसान हित में लगता था उसका बिगुल बजाने में वे देर नहीं करते थे। अपने जीवन को दाव पर लगाने में उन्हें लेशमात्र भी झिझक नहीं थी।

नव क्रांति का बिगुल
बजाना ही पड़ता है।
सोये पुरूषार्थ को
जगाना ही पड़ता है।
जिन्हें भी करना होता है।
अनूठा कर्म धरती पर,
जीवन उन्हें दाव पर
लगाना ही पड़ता है।

चौधरी चरणसिंह इसी तरह के अनूठे कर्म के शिखर थे। वे आजीवन हलधर के हित में बिगुल बजाते एवम् किसानों के सोये पुरूषार्थ को ललकारते मिलते थे।

सन् 1939 में चौधरी साहब ने कांग्रेस विधानमण्डल दल के सम्मुख एक अनूठा प्रस्ताव रखा था कि लोक सेवाओं में प्रवेश के समय किसी भी हिन्दू से उसकी जाति के बारे में नहीं पूछा जाना चाहिये। उसी तरह शिक्षण संस्थाओं में भी जाति के बारे में नहीं पूछा जाना चाहिये। केवल मात्र इतनी जांच भर की जानी चाहिये कि प्रत्याशी अनुसूचित जाति वर्ग से है अथवा नहीं। सन् 1948 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिया गया फैसला उन्हीं के प्रयासों का परिणाम था कि भविष्य में भू-राजस्व अभिलेखों में किसी भी पट्टेदार की जाति का उल्लेख न करने का निर्णय लिया गया। चौधरी चरणसिंह ने समय-समय पर स्पष्ट भाषा में यह दर्शा दिया था कि वे जाति की सीमा के बंधे साधारण जन नहीं थे। जाति प्रथा से ऊपर उठकर देशहित व किसान हित के लिये ही उनका पूरा जीवन समर्पित था। उनके लिये देश में केवल दो ही जातियाँ रहती थी। एक शहरों में बसने वाले व्यापारी वर्ग की शोषकों की जाति, दूसरी ग्रामीण भारत (असली भारत) में बसने वाली किसान मजदूरों की शोषितों की जाति। सन् 1946 में महात्मा गांधी ने कहा था कि मैं भारत के गांवों को पुनर्जीवित करना चाहता हूँ। आज हमारे गांव शहरों के केवल उपांग हैं। उनका अस्तित्व शहरों द्वारा शोषण किये जाने के लिये हैं और गांव शहरों के दमन से आक्रांन्त हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि :—

"ब्रिटिश सत्ता ने शहरों के माध्यम से भारत का शोषण किया है। गांवों का रक्त ही सीमेन्ट है जिसके द्वारा शहरों के भव्य भवनों का निर्माण हुआ है। मैं चाहता हूँ वही रक्त शहरों की धमनियों से प्रवाहित होकर पुनः गावों की रक्त धमनियों में प्रवाहित हो।"

चौधरी चरणसिंह गांधी जी के ग्राम उत्थान के सपने में अभिभूत थे। उन्होंने इस सपने को साकार करने के लिये आजीवन श्रम किया। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक किसानों को एकता के सूत्र में पिरोया। वे चाहते थे कि ग्रामीण भारत भाग्य भरोसे बैठने की अपनी मानसिकता का परित्याग करे क्योंकि भाग्य भरोसे बैठे रहने से बड़ा कोई दुर्भाग्य नहीं है। आदमी जैसा सोचता है वैसा ही

हो जाता है। बिना सोच बदले जीवन नहीं बदलता। उन्होंने एक बार कहा था कि किसी देश की गरीबी व अमीरी उस देश के निवासियों की मानसिकता पर निर्भर है। वास्तव में पक्ष बदलने से दृष्टि बदलती है सोच बदलने से सृष्टि बदलती है। जब कोई विचार बलवती होता है और उस पर सच्चे मन व सच्ची लगन से कार्य किया जाता है तो फिर संसार की कोई भी शक्ति उसे फैलने से नहीं रोक सकती।

आज जब देश की अधिकतर विकास योजनाएं ग्रामीण भारत के विनाश की ओर अग्रसर है। आज जब गाँवों में रहने वाले करोड़ों बच्चे दोनों हाथ उठाकर नौकरी मांग रहे हैं, आज जब मानव का मानव की हर व्यवस्था से विश्वास उठ रहा है, आज जब किसान आत्महत्या करने को मजबूर है तब चौधरी साहब सादगी, श्रम व कुटीर उद्योगों पर आधारित भारत के विकास का सपना ही एकमात्र विकल्प है। चौधरी चरणसिंह धरती पुत्र थे। उन्होंने देश के नेताओं को याद दिलाया था कि वे जनजागरण के अपने दायित्व से मुकर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि—

"हमारे देश के नेताओं का यह कर्त्तव्य है कि वे जनता को उसकी अधिक समय की निद्रा से जगाये। और शिक्षित नवयुवकों का, विशेषकर जो गाँवों से आये हैं, उनका यह दायित्व है कि वे इस आन्दोलन के सिपाही बनकर काम करे।"

उनके इन विचारों से यही झलकता है कि जो चलता है वही पहुँचता है, जो सोता है उसका भाग्य भी सोया रहता है। राजनीति अगर स्वस्थ है, राजनेता अगर सजग है तभी वह दूसरों को जगा सकता है। अगर नेतृत्व अपने दायित्व से भागता है तो सामान्य जन को भटकने से नहीं बचाया जा सकता। चौधरी चरणसिंह को गगनचुम्बी भवनों में कोई रुचि नहीं थी। उन्हें गावों की चौपालों में रुचि थी। महलों में रुचि नहीं थी बल्कि खेतों की माटी में रुचि थी। उनके विचारों को इस प्रकार कहा जा सकता हैं कि—

"मैं नहीं कहता कि तुम
चर्चे करो आसमान के।

गगन चुम्बी भवन के या
शिखरों पर प्रस्थान के।
गर चाहते हो कि तुम्हें दुनियां
धर्म धर कहे
होंठ पर लादो हंसी किसी
शोषित थके इन्सान के।"

आज के आतंकवादी दौर का कारण चौधरी चरणसिंह व सरदार पटेल की नेतृत्व शैली से हटना है। आज न तो संसद के भीतर सुरक्षित जीवन का भरोसा है और न ही बाहर। आज की विचित्र स्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है कि—

"संसद में हर कुर्सी बार बार
कंप रही है।
जिन्दगी बनी जर्जर बीमार
कंप रही है।
तुम ताले लगाकर भी चैन
से सो नहीं सकते
देश के भवन की हर दीवार
कंप रही है।"

चौधरी चरणसिंह कहते थे कि देश पर महात्मा गांधी के हजारों उपकार हैं परन्तु फिर भी वे अपने जीवन में तीन भूल कर गये। प्रथम सरदार पटेल को प्रधानमंत्री नहीं बनाया दूसरा देश का विभाजन स्वीकार कर लिये एवम् तीसरी भूल वे बताते नहीं थे। परन्तु यह गांधी जी के बुढ़ापे में तंत्र प्रयोग से सम्बन्धित थी। चौधरी चरणसिंह की भावधारा को इस तरह व्यक्त किया जा सकता है कि—

"पूरे देश के किसानों में
अखण्ड मेल चाहिये।

शत्रुसंग महाभारत जैसा
एक खेल चाहिये।
आतंकी अभियान देख
बोलता हूँ आज
भारत को आज एक
पटेल चाहिये।"

सरदार पटेल की लौहपुरूष की छवि से चौधरी साहब प्रभावित थे परन्तु इन दोनों में भी एक बात पर मतभेद था कि सरदार पटेल जमींदारी उन्मूलन नहीं चाहते थे जबकि चौधरी चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश में जमीदारी उन्मूलन कराया, जो 1 जुलाई 1952 को पास हुआ।

किसानों के खेत बिखरे थे। वे टुकडों में बिखरे खेतों पर पैदावार करते थे जिसके कारण उन्हें कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। चौधरी साहब ने 1953 में चकबन्दी कानून पास कराया जो 1954 से लागू हुआ। वे सन् 1967 व 1970 में दो बार उत्तर प्रदेश सरकार में मुख्य मंत्री चुने गये। 26 जून 1975 की रात को श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में देश में आपात् स्थिति लागू करके देश के बड़े बड़े नेताओं को जेल में डाल दिया। काली रात के बाद प्रभात की आशा से भरे चौधरी साहब ने जो भाषण इस आपातकाल के विरोध में दिया वह उनके अदम्य साहस को दर्शाता है। यह भाषण 23 मई 1976 को दिया गया। उन्होंने आपात्काल की तीव्र भर्त्सना करते हुये कहा था कि—

"ठंडे दिमाग से सोचना चाहिये कि इस देश में क्या हो रहा है। यह देश किसी के बाप-दादों का नहीं हैं, किसी के परिवार का नहीं है, हमारा सबका है, साठ करोड लोगों का है। यह जो हो रहा है आप सबको क्यों नहीं अखरता है? व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिये गांधी जी ने कितना कहा है लेकिन आप लोग आवाज ही नहीं उठा सकते हैं, क्या चीज आड़े आ रही है?"

इस भाषण को जनता ने खूब सराहा और चौधरी साहब का कद अब बहुत

ऊँचा हो गया था। परिस्थिति आदमी को कमजोर या बलवान नहीं बनाती। वह दिखाती भर है कि आदमी का असली रूप कितना गहरा है।

सन् 1977 में देश में आम चुनाव हुये तथा जनता पार्टी, जिसके गठन में चौधरी साहब ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, सत्ता में आई। इन्दिरा कांग्रेस पराजित हुई। चौधरी चरणसिंह गृहमंत्री बने। उन्होंने पिछड़ी जाति वालों के लिये मण्डल आयोग का गठन किया। 1979 में वे उपप्रधानमंत्री बने तथा 24 जुलाई 1979 को देश के प्रधानमंत्री बने। उनके सम्मान में निम्न पक्तियाँ उनके संघर्ष व सत्ता शिखर तक पहुँचने को दर्शाती हैं।

शोषण व अन्याय विरूद्ध
लड़ते ही चले गये।
ग्राम उत्थान नैतिकता मंत्र
पढ़ते ही चले गये।
नूरपुर में जन्म ले आजीवन
संघर्ष किया।
दिल्ली की गद्दी तक वो
बढ़ते ही चले गये।

अपने लम्बे राजनैतिक जीवन में उन्होंने जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे। उनका निधन 29-5-87 को हुआ। इस लम्बे राजनैतिक जीवन में वे ना कहीं रुके ना किसी दबाव के आगे झुके। जो अन्याय के सामने झुक जाता है उसकी आत्मा मृत्प्राय हो जाती है। जो अपनी ही नजरों में गिर जाता है, संसार की नजरों में नहीं चढ़ पाता। जो चलता हैं वही पहुँचता है, जो संघर्ष करता है वहीं चमकता है, जो स्वाभिमानी है वही लोगों के सर माथे पर बैठता है। उनकी मान्यता थी कि त्याग व निष्ठा के दो पंखों पर ही जीवन उड़ान भरता है। उनके लिये लोकतंत्र में नागरिक अवज्ञा के लिये कोई स्थान नहीं है परन्तु स्वस्थ विरोध का जन्मसिद्ध अधिकार है। आज समाज में भृष्टाचार हैं क्योंकि अपवाद छोड़कर कोई भी सादा जीवन उच्च विचार के महामंत्र को अपनाने के लिये राजी नहीं है। आज जीवन में सर्वत्र गिरावट

है क्योंकि अपवाद छोड़कर जनमानस का सम्पर्क उन महान सिद्धान्तों से टूट गया जिनके बल पर शरीर स्वस्थ बनता था, मन अखण्ड निष्ठा से भरपूर रहता था, बुद्धि वरदानी बनती थी तथा आत्मा जागृत होती थी, हृदय विशाल बनता था।

चौधरी चरणसिंह के विस्तृत कर्म क्षेत्र व धन्यता की वर्षा करते विराट धर्म क्षेत्र में जो थोड़ी घटनाएं पकड़ में आ सकीं उन्हीं को आधार बनाकर पुस्तक में उनके चमत्कारी व्यक्तित्व की चर्चा की गई हैं। इस पुस्तक में गद्य व पद्य में चौधरी साहब के चमत्कारी व्यक्तित्व की चर्चा की गई है। इस पुस्तक के अठारह अध्याय हैं।

- प्रथम अध्याय में उनके प्रभाव व व्यक्तित्व के चमत्कार को दशनि का प्रयास किया गया है।
- दूसरे अध्याय में उनको जन्म से साधारण कर्म से सबल दर्शाया गया है।
- तीसरे अध्याय में उनको मौलिक अधिकारों का सजग प्रहरी करके दिखाया गया है।
- चौथे अध्याय में उनको ग्रामीण भारत का सच्चा हितैषी बताया गया है।
- पांचवे अध्याय में जातिवाद का घनघोर विरोधी कहकर उनकी महानता उजागर की गई है।
- छटे अध्याय में उनके द्वारा बताई गई गांधी जी की तीन भूलों को उजागर करने की चेष्टा की गई है।
- सातवें अध्याय में जनसंख्या विस्फोट की समस्या और उसका निदान सुझाया गया है।
- आंठवे अध्याय में बेरोजगारों के बढ़ते असन्तोष को दिखाया गया है।
- नवे अध्याय में उनको देश की अखण्डता का पुजारी कहा गया है।
- दसवें अध्याय में उनके जमींदारी उन्मूलन व चकबन्दी कानून की चर्चा की गई है।
- ग्यारहवें अध्याय में उनको सहकारी कृषि का विरोधी वह हलधर का परम हितैषी बताया गया है।
- बारहवें अध्याय मे उनको भ्रष्टाचार का घनघोर विरोधी बताया गया है।

- तेरहवें अध्याय में उनको समतावादी समाज का पक्षधर माना गया है।
- चौदहवें अध्याय में उनको आर्यसमाजी आस्था का मूर्तरूप माना गया है। आर्यसमाज के मूल मंत्रों की चर्चा की गई है।
- पन्द्रहवें अध्याय मे उनको स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित व्यक्तित्व माना गया है।
- सोलहवें अध्याय में नारी जाति के उत्थान मे उनके महादान की चर्चा की गई है।
- सत्तरहवें अध्याय मे उनके चमत्कारी चिन्तन का उल्लेख है।
- अठारहवें अध्याय में उनके चमत्कारी व्यक्तित्व और उनके चमत्कारी प्रभाव के प्रति प्रबुद्ध समाज के द्वारा जो श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये हैं उनको लिपिबद्ध करने का प्रयास किया गया है।

चौधरी चरणसिंह के चमत्कारों की चर्चा करते हुये विभिन्न उच्च पदस्थ लोगों ने उनको एक महान किसान नेता, प्रेस की स्वतंत्रता के प्रबल सरंक्षक, एक अनूठे व्यक्ति, देश व समाज की गहन वेदना को आवाज देने वाला, ग्रामीण भारत के जागरुक जीवंन्त प्रहरी, किसानों के हित में भागीरथ प्रयास करने वाला, युग परिवर्तन के प्रणेता, अल्पसंख्यकों के आशा के दीप, सामाजिक क्रान्ति के जनक, देशभक्ति के बेजोड़ शिखर, अनुकरणीय आचरण के धनी, नैतिक मूल्यों के प्रबल समर्थक, इस युग के भीष्मपितामह, एक सार्थक सन्देश देने वाले युगपुरूष, किसान एकता के सूत्रधार, एक विराट बोध विराट संवेदना एवम् एक विशाल ह्रदय से जन-जन को प्रेरित करने वाले कृषक मसीहा कहकर उनको पुकारा गया। चौधरी चरणसिंह के अनुसार महर्षि दयानन्द का सबसे महत्त्वपूर्ण महादान इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने इस विश्वास को चुनौती दी कि यह संसार विकारों का भण्डार है अतः इसका त्याग कर देना चाहिये। उन्होंने बताया था कि जीवन के प्रति उदासीनता का सिद्धान्त, व्यक्तिवादी चेतना तथा जातिवादिता हमारे समाज के पतन के मुख्य कारण हैं। उन्होंने नारी वर्ग के समान अधिकारों की वकालत की थी। उन्होंने हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में देखा था।

'इस देश की राजनीति पर शहरी वर्ग का आधिपत्य है'—यह उद्घोष करते हुये चौधरी चरणसिंह ने सरकारी सेवाओं में किसान संतान के लिये सन् 1946 में पचास प्रतिशत आरक्षण की वकालत की थी। आज का भारत मेरी पीढ़ी के सपनों का भारत नहीं है, इस तरह का उद्घोष करते हुये उन्होंने कहा था कि देश के विकास के लिये जनसंख्या नियंत्रण आवश्यक है। भटके नेतृत्व ने समस्याओं के अम्बार लगा दिये हैं छोटे मोटे सुधार दशा परिवर्तन के लिये काफी नहीं हैं। इसके लिये मूलभूत आर्थिक व राजनैतिक दर्शन खड़ा करना होगा।

महात्मा गांधी व सरदार पटेल दोनों के प्रति चौधरी चरणसिंह के मन में अपार सम्मान था। उन्होंने महात्मा गांधी के महादान को उजागर करते हुये कहा था कि—

"गांधी जी के उपदेशों को तथा जो उपकार उन्होंने भारत की जनता तथा मनुष्यमात्र पर किये हैं उनको गिनाना मुझ जैसे व्यक्ति की सामर्थ्य से बाहर है। वे जादूगर थे उन्होंने हमारे जीवन के जिस अंग पर भी दृष्टि डाली, उसमें क्रान्ति कर दी। धन्य है भारत माता जिसकी कोख से ऐसा लाल पैदा हुआ।"

सरदार पटेल को चौधरी चरणसिंह लौहपुरूष ही नहीं अपना पथ प्रदर्शक भी मानते थे। वे सरदार पटेल की क्षमताओं को अच्छी तरह से पहचानते थे। वे चाहते थे कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री सरदार पटेल ही बनते तो देश सही दिशा पकड़ता। उन्होंने सरदार पटेल के निधन पर कहा था कि—

"आज भारत लुट गया। आज उसका वह लाल जिसके बल पर वह निर्बल होते हुये भी अपने को सशक्त समझता था, उससे रुठ गया। आज उसका लौह पुरूष जिसकी गरज सुनकर देशद्रोही तथा देश के दुश्मन दहला करते थे, विदा हो गया। आज हमारा सरदार सदा के लिये सो गया। आज अभागे देश का सहारा व निर्बल की लकड़ी जाती रहीं। सरदार पटेल ने मातृभूमि की जो सेवा की वे बिरले ही कर पाते हैं।"

जब 1977 में पहली बार देश की राजनीति ने करवट बदली तथा काग्रेंस बुरी तरह पराजित होने पर जनता पार्टी सत्ता में आई तो चौधरी चरणसिंह ने एक सत्ताइस सूत्री प्रस्ताव तैयार किया था जिसका एक एक शब्द उनकी गहन पकड को उजागर

करता है। 'कर्म का मूल्य परिणाम में है, न्याय का मूल्य प्रमाण में है धर्म का मूल्य कल्याण में है'। इन सभी सूत्रों का उल्लेख पुस्तक के सत्तरहवें अध्याय में किया जा रहा है। देश वो सफल होता है जो अपनी सबसे बड़ी शक्ति का उपयोग करने की कला जानता है। देश का भाग्य किसान मजदूरों के भाग्य से जुड़ा है चौधरी साहब ने आजीवन यह अलख जगाया था।

चौधरी साहब अनुशासन प्रेमी थे। वे कानून का सम्मान करना व कराना चाहते थे। वे जीवन को जंगल की तरह नहीं वरन् एक बगिया की तरह बनाना चाहते थे जिसमें गीत तो हो परन्तु शोरगुल ना हो। जहां अनूठापन तो हो अराजकता ना हो। जहां उत्साह तो हो उद्धण्डता न हो। जहां स्वतंत्रता तो हो स्वच्छन्दता ना हो। उनहें सविनय अवज्ञा का अधिकार उसी दशा में सहन था जब कानून के रक्षक ही भक्षक बन जायें। माया त्यागी काण्ड में जब पूरा मेरठ मण्डल और पूरा देश ही आन्दोलित हुआ था तब उन्होंने यह कहा था कि—

"जब राज्य ही अपराध कर्म को संरक्षण देने पर आमादा हो जाये तो सविनय अवज्ञा का ही रास्ता अख्तियार करना पड़ता है।"

इस केस मे पुलिस कर्मचारीगण पर कत्ल का मुकदमा चला था जो बुलन्दशहर जनपद में सुना गया और तत्कालीन अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश विष्णुदत्त दूवे ने फांसी की सजा देते हुये जो तर्क दिये थे उनसे न्यायाधीश के गहन ज्ञान, निष्पक्षता तथा अपराधीगण के चरित्र एवं उन्हें बचाने के लिये किये गये अनुचित प्रयासों का पता चलता है। यह निर्णय 23.1.1988 को सुनाया गया।

चौधरी चरणसिंह के अनुसार भृष्ट राजनेता, भृष्ट नौकरशाह, भृष्ट पुलिसकर्मी एवं भ्रष्ट व्यापारी जो सत्ता पर कब्जा करने के लिये आमादा हैं उनके नैतिक पतन से पुरातन घोषित मूल्यों की रक्षा समय की पुकार है। उन मूल्यों की रक्षा का समय आ गया है। उनका एक एक शब्द उनको युग द्रष्टा बना देता है। उन्हें समय के संकेत की पहचान थी। भृष्टाचार ऊपर से नीचे की ओर फैलता है अगर दिल्ली भृष्टाचार में डूबती है तो अन्य शहरों को इसके चंगुल से नहीं बचाया जा सकता। अगर गंगोत्री ही दुर्गन्ध भरी हो जाती है तो गंगा का पानी तो प्रदूषित होगा ही।

भृष्टाचार की बढ़ती विषबेल को काटने के लिये उन्होंने जो उपाय सुझाये वे, अनुपम व सटीक थे।

जब राष्ट्रभाषा की बात आती है तो चौधरी साहब बोलतें मिलते हैं कि अगर मुल्क को एक राष्ट्र रहना है तो एक भाषा होनी चाहिये एक जुवान होनी चाहिये। जब साम्प्रदायिकता व हठधर्मी को रोकने की बात आती है तो वे बोलते मिलते हैं कि साम्प्रदायिक संगठन के किसी भी सदस्य को राजनैतिक क्षेत्र में काम करने की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिये। उनके कहने का अर्थ यही था कि जिसकी सोच राष्ट्रवादी नहीं है उसे संसद व विधान सभाओं में घुसने का अधिकार नहीं होना चाहिये। दुर्भाग्य देश के लोग धर्म, जाति व भाषा के आधार पर बंट गये हैं। क्षेत्रीयता जड़ जमा रही है। यही कारण था कि जुल्फिकार अली भुट्टो ने अपनी एक पुस्तक में लिखा था कि अपनी राष्ट्रीयता की भावना के बल पर भारत एक नहीं रहा है बल्कि पाकिस्तान एवं साम्यवादी चीन से उठने वाले खतरों के कारण भारत एक रहा है अगर इस खतरे का अन्त हो जाये तो भारत तत्काल बिखर जायेगा।

चौधरी साहब ने समाधान सुझाते हुये कहा कि पूरे देश में एक लिपि हो। उन्होंने कहा था कि वे छोटे राज्यों के समर्थक जरूर है परन्तु अखण्ड भारत में उनकी असीम निष्ठा है। आजीवन वे अपनी इस निष्ठा का प्रमाण देते रहे। उनकी मान्यता थी कि भारत की समस्याओं का समाधान उसकी जनता के संघर्ष व सहयोग के बल पर ही हो सकता है और जनता का सहयोग तभी मिल सकता है जब सत्ता का विकेन्द्रीकरण गांव-गांव तक किया जाये। उन्होंने महलों में बसने वालों को चेतावनी देते हुये कहा था कि अब गांव व शहर दोनों स्थानों व बसने वाला गरीब जाग गया है अब उन्हें दबाकर नहीं रखा जा सकता। नागरिक अधिकारों को सुरक्षित रखकर ही विकास की ठोस आधारशिला रखी जा सकती है। हिटलरशाही उनके स्वभाव से मेल नहीं खाती। मानव के आत्मसम्मान को सुरक्षित रखकर ही जीवन को धन्य बनाया जा सकता है। मनुष्य का सत्य इस धरती का असली सत्य

है। मानव उत्थान का पहला चरण गांव की मिट्टी पर ही पड़ना चाहिये क्योंकि देश का भविष्य देहात के भविष्य से जुड़ा है। देहात के हित की अनदेखी देश के हित की अनदेखी है।

साधारण रहकर भी असाधारण क्षमता रखने वाले चरणसिंह सच्चे अर्थों में चमत्कारी थे। उन्होंने देश की ज्वलन्त समस्याओं के बारे में जो भी कहा वह उत्तर नहीं समाधान है। महान वे नहीं होते जो बटोरते हैं महान वे होते हैं जो बांटते हैं। महान वे नहीं होते जो सजाते हैं, महान वे होते हैं जो जगाते हैं। महान वे नहीं होते जो मित्र होते हैं, महान वे होते है जो पवित्र होते हैं। महान वे नहीं होते जो बलशाली होते हैं, महान वे होते हैं जो शक्तिशाली होते हैं। महान वे नहीं होते जो अनुरागी होते हैं, महान वे होते हें जो वीतरागी होते हैं। महान वे नहीं होते जिनमें धन बल होता है, महान वे होते हैं जिनमें आत्मबल होता है। इन सभी अर्थों में चौधरी साहब महान थे इसी कारण चरणसिंह जैसा व्यक्तित्व कभी-कभी पैदा होता है। इसी कारण उनके बारे में चार पंक्तियों से सम्मान व्यक्त करता हूँ।

दिशा भटकों तो एक
ध्रुवतारा खोजो।
इतिहास बदलना है तो
एक नारा खोजो।
गर बदलनी है
खेत खलिहान की तकदीर
चरणसिंह जैसे एक नेता का
सहारा खोजो।

इन शब्दों के साथ एक पुस्तक जनमानस को समर्पित है यदि इसका कोई भी अंश एक भी किसान या कामगार के हृदय में हर्ष की लहर उठा सका तो लेखक अपना प्रयास सफल समझेगा।

स्व० चौधरी चरणसिंह जी के सम्पूर्ण जीवन के महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम

1902 दिसम्बर 23 को जन्म, नूरपुर जिला मेरठ, माता-नेत्रकौर, पिता-मीरसिंह।

1923 विज्ञान स्नातक (आगरा कॉलेज, आगरा)

1925 स्नातकोत्तर (इतिहास) आगरा कॉलेज, विवाह गायत्री देवी के साथ।

1926 विधि स्नातक (आगरा कॉलेज)

1928 गाजियाबाद में स्वतंत्र वकालत प्रारंभ।

1929 मेरठ स्थानांतरित, राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल, स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। कई बार जेल यात्रायें की। गाजियाबाद कांग्रेस कमेटी की स्थापना की।

1932 मेरठ जिला बोर्ड के अध्यक्ष।

1937 बागपत-गाजियाबाद चुनाव क्षेत्र से प्रांतीय धारा सभा (उ० प्र० विधानसभा) के लिए विधायक निर्वाचित। ऋण निर्मोचन विधेयक पारित कराना, जिससे किसान ऋण मुक्त हो गये तथा उनके खेत-घर नीलाम होने से बच गये।

1947 संसदीय सचिव,-गोविन्द वल्लभ पंत मंत्रिमंडल में।

1949 मंडी बिल पारित कराना।

1951 गोविन्द बल्लभ पंत मंत्रिमंडल में न्याय, सूचना एवं कृषि मंत्री। जमींदारी-उन्मूलन के विधेयक का प्रारूप तैयार किया।

1952 राजस्व एवं कृषि मन्त्री गोविन्द बल्लभ पंत मंत्रिमंडल में।

जमींदारी उन्मूलन विधेयक पारित। उ० प्र० के सभी 26000 पटवारियों के इस्तीफे स्वीकार एवं नये लेखपालों की नियुक्तियाँ। कुशल एवं सफल कठोर प्रशासन का प्रदर्शन।

1954 राजस्व एवं परिवहन मंत्री संपूर्णानन्द मंत्रिमंडल में भूमि संरक्षण कानून बनाकर पारित कराया।

1957 राजस्व एवं परिवहन मंत्री उत्तर प्रदेश

1958 राजस्व एवं वित्तमंत्री, बाद में वित्त के स्थान पर सिंचाई तथा बिजली मंत्री-डॉ सम्पूर्णानन्द मंत्रिमंडल

1959 नागपुर कांग्रेस महाअधिवेशन में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की सहकारी खेती की नीति की कड़ी आलोचना। अप्रैल में मंत्रिमंडल से इस्तीफा।

1960 गृह एवं कृषि मंत्री, चंद्रभानु गुप्त मंत्रिमंडल में।

1962 कृषि एवं वन मंत्री, श्रीमति सुचेता कृपलानी मंत्रिमंडल में।

1965 कृषि मंत्री पद से त्यागपत्र।

1966 स्थानीय निकाय विभाग के प्रभारी।

1967 मंत्री-चन्द्रभानु गुप्त मंत्रिमंडल में, मंत्रिमंडल एंव कांग्रेस पार्टी से त्यागपत्र, राज्य विधानसभा में पहले गैर कांग्रेसी विपक्षी संयुक्त विधायक दल के नेता। नये मंत्रिमंडल का गठन 13 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ।

1968 भारतीय क्रांति दल की स्थापना।

1969 उत्तर प्रदेश के मध्यावधि चुनाव में 98 सीटों पर विजयी।

1970 17 फरवरी को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री

1973 अगस्त 29, को लोकदल का गठन (भारतीय क्रांतिदल, संयुक्त सोशलिस्ट और स्वतंत्र पार्टी का विलय) विधान सभा चुनाव में 107 सीटों पर विजयी एवं विपक्ष के नेता।

1974 भारतीय क्रांति दल, स्वतन्त्र-पार्टी, संयुक्त सोशालिस्ट पार्टी (राज नारायण), उत्कल कांग्रेस (बीजू पटनायक), राष्ट्रीय लोकतांत्रिक संघ (बलराज मधोक), किसान मजदूर पार्टी, पंजाबी खेतीबाड़ी, यूनियन में मिलकर चौधरी साहब की पहल पर एक ही पार्टी 'भारतीय लोकदल' की स्थापना की।

1975 जून 26 को इमरजैन्सी के दौरान गिरफ्तार।

1976 मार्च में जेल से रिहा।

1977 जनता पार्टी के गठन में भूमिका, लोकसभा के लिए प्रथम बार निर्वाचित एवं देश के गृहमंत्री (जनता पार्टी सरकार) में।

1978 जून 30 को प्रधानमंत्री मोराजी देसाई के साथ मतभेद के कारण मंत्रिमंडल से त्यागपत्र। 23 दिसम्बर को दिल्ली में अभूतपूर्व ऐतिहासिक किसान रैली को संबोधित किया।

1979 फरवरी 24 को जनता पार्टी सरकार में उप प्रधानमंत्री एवं वित्त मंत्रालय का कार्यभार। मोरारजी देसाई से मतभेद बने रहे और अंत में अपने अनुयायी सांसदों सहित जुलाई में पार्टी से सामूहिक त्यागपत्र जिसके कारण देसाई मंत्रिमंडल सहित सरकार का पतन। 28 जुलाई को प्रधानमंत्री पद की शपथ। देश के पांचवें प्रधानमंत्री बने। 20 अगस्त को कांग्रेस द्वारा अपना समर्थन वापिस और चौ० चरणसिंह सरकार गिर गई। राष्ट्रपति को लोकसभा भंग करने की सलाह। दलित मजदूर किसान पार्टी (दमकिपा) का गठन।

1985 दमकिपा का नाम लोकदल रखा। 26 नवम्बर को बीमार।

1986 मार्च 14 को इलाज के लिए अमेरिका के मैरीलैण्ड राज्य के जान होवकिस इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसन गए। सारा व्यय केन्द्र सरकार ने किया।

1987 मई 29 को प्रातः 2.25 बजे निधन।

—: अनुक्रमणिका :—

अध्याय 1	चौधरी चरण सिंह—चमत्कार चर्चा	3–23
अध्याय 2	जन्म से साधारण, कर्म से सबल चरणसिंह	27–29
अध्याय 3	मौलिक अधिकारों के सजग प्रहरी चरणसिंह	33–38
अध्याय 4	ग्रामीण भारत के सच्चे हितैषी चरणसिंह	41–46
अध्याय 5	जातिवाद के घनघोर विरोधी चरणसिंह	49–50
अध्याय 6	गाँधी जी की तीन भूलें गिनाने वाले चौधरी चरणसिंह	53–54
अध्याय 7	जनसंख्या विस्फोट एक गम्भीर समस्या	57–59
अध्याय 8	बेरोजगारों का बढ़ता असन्तोष	63–68
अध्याय 9	देश की अखण्डता के पुजारी चरणसिंह	71–73
अध्याय 10	जमींदारी उन्मूलन और चकबन्दी अधिनियम	77–84
अध्याय 11	सरकारी खेती के प्रबल विरोधी हलधंर हितैषी चरणसिंह	87–98
अध्याय 12	भ्रष्टाचार का विषैला जाल	101–105
अध्याय 13	समतावादी समाज के पक्षधर चरणसिंह	109–112
अध्याय 14	आर्य समाजी आस्था में मूर्तरुप चौधरी चरणसिंह	115–143
अध्याय 15	स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित व्यक्तित्व	147–152
अध्याय 16	नारी शिक्षा व समानता के प्रबल समर्थक चौधरी चरणसिंह	155–164
अध्याय 17	चौधरी चरणसिंह का चमत्कारी चिन्तन	167–187
अध्याय 18	श्रद्धा शिखर चौधरी चरणसिंह	191–218
	चमत्कारी चौधरी चरणसिंह—मेरी दृष्टि में	219–239

अध्याय 1

चौधरी चरणसिंह-चमत्कार चर्चा

स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि—

"यदि गांव समाप्त हो जाता है तो भारत ही समाप्त हो जायेगा। भारत फिर कभी भारत नहीं होगा। विश्व के सामने उसका जो उद्देश्य है वही समाप्त हो जायेगा। गांव का उद्धार केवल उसी समय सम्भव है जब उसका शोषण न हो।" उन्होंने यह भी कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है।

उन्होंने यह भी कहा था कि जब तक कोई वस्तु आम आदमी की पहुंच तक न आ जाये तब तक उसका उपयोग करना नैतिक दृष्टि से वर्जित है।

चौधरी साहब ने स्पष्ट शब्दो में कहा था कि—

"नगरों व गांवों के बीच जो 'औपनिवेशिक' सम्बन्ध विकसित हुआ है वह केवल उसी समय मिटेगा जब उपभोक्ता वस्तुएं जैसे साबुन से लेकर कपड़े तक गांव में ही पैदा की जाएं और उन्हें वहाँ पर बेचा जाये।"

वास्तव में आज की सम्यता एक पक्षीय विकास से बीमार हो गई है। जीवन का स्वाद रोज फीका होता चला जा रहा है। शहरों व गावों के बीच एक शीत युद्ध छिड़ गया है। आज का असली संघर्ष पूँजी व श्रम के बीच नहीं, शहर और देहात के बीच है। यह संघर्ष अब सड़कों पर आन्दोलन के रूप में आ गया है। इसके हर दिन सबल होने की सम्भावना बलवती होती जा रही है। यदि प्रगति की धारा से गावों को नहीं जोड़ा गया और नीतिगत वायदे केवल कागजों तक सीमित रहे तो भारत स्वतंत्र होते हुये भी असख्य लोगों की दृष्टि में स्वतंन्त्र कहने का अधिकारी नहीं होगा।

चौधरी चरणसिंह ने इसी बात को बड़े अनूठे ढंग से इस प्रकार कहा था कि—

"मैं भारत को उस दिन तक स्वतंत्र नहीं मानता जब तक हर हाथ को काम, हर पेट को भोजन और हर सिर को छत नहीं मिल जाती।"

वे मानते थे कि वही व्यक्ति स्वतंत्र है जो अपने पैरों पर खड़ा है और जिसका भिक्षापात्र गिर गया है। वही देश स्वतंत्र है जो अपने स्वाभिमान को गिरवी नहीं रखता। जब-तक करोड़ों बच्चे दोनों हाथ उठाकर नौकरी माँग रहे हैं और देश बाहरी कर्जों पर निर्भर हैं तब तक चौधरी चरणसिंह का स्वतंत्र भारत का सपना अधूरा रहेगा। यह सपना तभी साकार होगा जब देश का भविष्य देहात से जोड़कर राष्ट्र का असली उत्थान होगा।

आज देश में भृष्टाचार का बोलबाला है। इसका एक मात्र कारण यही है कि कोई भी साधारण जीवन जीने को राजी नहीं है। 'सादा जीवन उच्च विचार' के स्थान पर 'सजा जीवन तुच्छ विचार' राजनीति पर हावी हो रहे हैं। भ्रष्टाचार दिल्ली की कोख में पलता है तथा वहीं से नगरों में फैलता है, अगर उसे रोकना है तो सबसे पहले उसके प्रस्थान बिन्दु पर उसे रोको। जो बड़े करते हैं छोटे उसी की नकल करते हैं। चौधरी चरणसिंह की निष्ठा व पकड़ के कारण ही उन्हें उनके जीवनकाल में ही विश्व भर के गरीब किसानों तथा मजदूरों का मसीहा बताया गया था।

चौधरी चरणसिंह का सूर्य आजीवन मध्य में चमका। वे सादा जीवन उच्च विचार के दर्शन के मूर्तरूप थे। उनके धमकाने पर भी उनका अनुयायी उनके पास से नहीं हटता था यहीं उनकी महानता थी। उनमें सरदार पटेल की कुशलता, गाँधी जी की सादगी तथा महर्षि दयानन्द की दिव्यता साथ-साथ मौजूद थी। वे ग्रामीण भारत के लिये गाण्डीवधारी अर्जुन की तरह आजीवन महाभारत के समर में डटे रहे। उन्होंने जाट, अहीर, राजपूत, गूर्जर, लोधी, कुर्मी, काछी आदि को एक मंच पर एकत्र करके दिल्ली को ग्रामीण भारत की एकता का एहसास हीं नहीं कराया अपितु ग्रामीण भारत को असली भारत का स्वरूप प्रदान किया। उनका प्रभाव चमत्कारी था। उनका बोला हर शब्द आज भी ग्रामीण भारत में प्रेम व आदर से सुना जाता है। इसी कारण उन्हें किसानों का मसीहा ही नहीं कलियुग का अवतार भी कहा गया। यह उनके चमत्कारी व्यक्तित्व के कारण ही था। अपने परिवार के मोह ने उन्हें नीचे नहीं गिराया। वे सच्चे अर्थों में वीतरागी थे तथा एक महान् उद्देश्य के लिये उनका जीवन समर्पित था। कलियुग की कालिमा उन्हें विकृत नहीं कर सकी तथा उनके चेहरे पर तपस्वी का तेज था। वे अनुरागी नहीं त्यागी थे। वे हीन नहीं दिव्य थे। वे कूटनीति में नहीं कर्म की कुशलता में विश्वास करते थे। वे आर्य आस्था के मूर्तरूप थे। उनमें गजब की प्राणशक्ति थी। वे प्रत्येक कर्म में चमत्कारी थे यहीं कारण है कि उनका जादू उनके मरने के बाद भी सबके सिर पर चढ़कर बोलता है और हर दल उनका नाम लेकर अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है। उनकी कीर्ति हर दिन बढ़ रही है, वे मरकर भी जिन्दा हैं।

"हर दल करता उन्हें युगपुरुष स्वीकार, यही है कलियुग का सबसे बड़ा चमत्कार"

चौधरी चरणसिंह जब देश के प्रधानमंत्री थे और उनके सत्ता में रहने के दौरान ही चुनाव हुये थे और यह चुनाव लोक सभा के लिये थे। उन्होंने अपने दल की कार्यकारिणी की बैठक में स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि हमारी पार्टी चाहे विजयी हो चाहे पराजित, चाहे शिखर चढ़े चाहे मिट्टी में मिल जाये, चाहे बहुमत में आये चाहे अल्पमत में रहे परन्तु किसी भी दशा में मिल मालिकों से चन्दा नहीं लेना है। उद्योगपतियों से हाथ नहीं मिलाना है। यही पूँजीपति अपनी सम्पदा दूनी करने के चक्कर में देश को महँगाई के दौर से गुजार देंगे। वास्तव में जिनका सनातन धर्म शोषण है वे देश का उद्धार नहीं कर सकते। चौधरी चरणसिंह इस धन लोलुप युग में धनियों से दूर रहना पसन्द करते थे। यह उनका चमत्कार है। पूरे भारत के इतिहास में एक भी घटना ऐसी नहीं घटी जिसमें किसी प्रदेश के एक मन्त्री ने अपने ही दल के मंच पर गर्जना करते हुये देश के प्रधानमंत्री को चुनौती दी हो। **यह मंत्री चौ० चरणसिंह थे और प्रधानमंत्री पण्डित जवाहर लाल नेहरु और विषय था सहकारी कृषि।** उनको सुविधा का लोभ नहीं था उन्होंने जीवन को परखा था और उससे ही जीवनदर्शन का सृजन किया था। सिद्धान्त को सुविधा से वे बड़ा मानते थे। उनके चमत्कार के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि—

"फौलादी ढाँचों में जिसने स्वयं को ढाला था।
उस किसान नेता का हर प्रस्थान निराला था।
जिन तूफानों में और टेक देते घुटने
उन तूफानों ने चरणसिंह को पाला था।"

जय प्रकाश नारायण व चौधरी चरणसिंह इन्दिरागाँधी के शासनकाल में उनके विरोध में एक मंच पर आ गये थे। बुलन्दशहर में एक सभा थी। उसमें जयप्रकाश नारायण ने एक भाषण में यह कह दिया कि किसान की फसल को सस्ते दामों में खरीदकर जनता को दिलाया जाना चाहिये, तभी समाज का भला होगा और जनता जनार्दन को सस्ता अनाज मिलेगा। चौधरी चरणसिंह मंच पर खड़े होकर बोलते हैं कि किसान की फसल का दाम कम करने से समाज व देश का कोई भला नहीं होगा, इससे किसान का ही अहित होगा। शहरी वस्तुओं, खाद, ट्रैक्टर, सीमेन्ट आदि के दाम कम करने से ही पूरे देश का व किसानों का भला होगा। इस प्रकार चौधरी चरणसिंह किसान हित के सम्बन्ध में विरोध करने में बड़े से बड़े राजनेता को भी करारा जबाव देने में नहीं चूकते थे। चाहे वह नेता लोकनायक जयप्रकाश नारायण

हों चाहे लोकप्रिय प्रधानमंत्री पण्डित नेहरु हों। चौधरी चरणसिंह का पूरा जीवन चमत्कारी था।

"समय के संकेत की सही
पहचान थे चरणसिंह।
जो सिंहासन छोड़कर मिले वो
सम्मान थे चरणसिंह।
आतंकी हवा में रहे।
जो सुमेरु की तरह अकम्प
वेद गीता का वो पावन
ज्ञान थे चरणसिंह।"

चौधरी चरणसिंह के इन्हीं गुणों को परखकर अटलबिहारी वाजपेयी ने एक सभा में एक बार कहा था कि चौधरी चरणसिंह जैसा राष्ट्रवाद उन्होंने किसी नेता में नहीं देखा है।

ओशो जिन्होंने पूरे विश्व में खण्डन व मण्डन का भूचाल मचाया था तथा चाहे शंकराचार्य हो या अन्य सद्गुरु सभी को आलोचना का निशाना बनाया था। गाँधी जी की उन्होंने भूरपूर आलोचना करते हुये अस्वीकृति में हाथ उठा दिया था। उन्होंने कहा था कि नये मनुष्य के जन्म के अलावा मानव जाति का कोई भविष्य नहीं है। राजनीति को जीवन का घनघोर पतन कहने वाले तथा किसी भी राजनेता से अपने आश्रम की नींव डालने व पत्थर रखवाने के विरोध करने वाले ओशो बोल उठते हैं कि "राजनीति असत्य के सिंहासन पर विराजमान होती है तथा धर्म सत्य के सिहासन पर खिलता है।" उन्होंने कहा था कि "वे उस अतीत से विद्रोह सिखाते हैं जिसके कारण मानव के सर पर दुखों की काली घटा है। वे उन शास्त्रों से विद्रोह सिखाते हैं जो मानव-मानव के बीच दीवार खड़ी करते हैं। वे उन शब्दों से विद्रोह सिखाते है जो तोतारटन्त को ही धर्म का रूप देते हैं। वे विद्रोह सिखाते हैं, उस परम्परा से जिसके कारण भारत आठ सौ साल मुगलों व अग्रेजों का गुलाम रहा। उन्होंने कहा कि भारत पुनः जगत का शिरमौर बन सकता है अगर उसमें सच्चे धर्म की प्रतिष्ठा हो। यह सच्चा धर्म है : गीता, महागीता, बुद्ध, महावीर, नानक, रैदास, मीरा, कबीर दादू के द्वारा दिया अनुभव पर आधारित हंसता खेलता धर्म।"

ओशो ने जहां एक ओर मोरारजी देसाई की भरपूर आलोचना की वहीं उन्होंने एक अवसर पर कहा था कि राजनीति में चरणसिंह ही वो नेता हैं जो सत्य बोलते हैं। ओशो जैसे मनीषी के मुख से चरणसिंह की प्रशंसा इस युग का चमत्कार है।

स्वतंन्त्र भारत के इतिहास में यह पहली बार हुआ था कि एक राजनेता जनता के बीच जाता है चुनाव लड़ता है परन्तु राजनैतिक मंच से जनता को कोई वायदा नहीं करता, उन्हें सुनहरे भविष्य के सपने नहीं देता। साफ शब्दों में अपनी बात कहता है और समय-समय पर उन्हें फटकार भी देता है, परन्तु किसान मजदूर जहां वे खड़े हो जाते हैं नया दल बनाने को खड़े हो जाते हैं। यह उनका सबसे बड़ा चमत्कार है।

चौधरी चरणसिंह का चमत्कार इस तथ्य से उजागर होता है कि वे प्रश्नों के उत्तर देने में कोई रुचि नहीं रखते थे। गाँव व गरीब की हर समस्या का समाधान देकर गये थे।

गाँव व गरीब पर दिया
अवधान उन्होंने।
भविष्य का बनाया
वर्तमान उन्होंने।
औरों ने बनाये केवल
सपनों के दुर्ग
असली भारत को दिया
समाधान उन्होंने।

सम्मान करना किसान और मजदूर का, क्योंकि वे पेट की भूख मिटाते हैं। सम्मान करना शिल्पकारों, चित्रकारों, कवियों का क्योंकि वे मन की भूख मिटाते हैं। वन्दनीय सद्गुरुओं का सम्मान करना क्योंकि वे आत्मा की भूख मिटाते हैं। सम्मान करना त्यागमूर्ति समर्पित राजनेताओं का क्योंकि वे देश को राह दिखाते हैं। सम्मान करना शहीदों का क्योंकि वे प्रेरणा देकर जागरण लाते है। कभी धनी का सम्मान मत करना क्योंकि अपवाद छोड़कर हर धनी भीतर से खण्डहर होता है। यही चौधरी साहब के चमत्कारी दर्शन का सार है। भारतीय राजनीति के इतिहास में 'सादा जीवन व उच्च विचार' के मूर्तरूप चौधरी चरणसिंह ही गान्धीवादी परम्परा

के अनूठे राजनेता है जो अपने जीवनकाल में सक्रिय राजनीति में भाग लेते हुए भी ग्रामीण भारत की एकमात्र बुलन्द आवाज बने रहे जनमानस के हृदयों में बसे रहे और उनका प्रभाव मृत्यु के बाद भी रत्ती भर कम नही हुआ। चौधरी साहब उन बिरले नेताओं में से थे जिनका सम्मान उनके विरोधी भी करते थे। चरणसिंह का समर्थन पाये बिना अन्य दल सत्ता के सपने नही देखते थे और उनका नाम आते ही या तो आदमी पक्ष में गीत गाने लगता था अथवा विपक्ष में बोलने लगता था। एक विचारक ने कहा था कि महान आदमी की एक ही पहचान है कि आदमी उसका नाम सुनते ही मौन न रह जाये या तो पक्ष में खड़ा हो जाये या विपक्ष में। चौधरी साहब इस अर्थ में भी चमत्कारी थे।

व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का विधाता है और अपने भाग्य का निर्माण करने के लिये सबसे पहले भाग्यवाद की धारणा से मुक्ति पाना होगा। समय से पहले व भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नही मिलता इस तरह की भाग्यवादी धारणा के प्रबल विरोधी चौधरी बोल उठते हैं कि तेजस्वी पुरुष भाग्य की वक्र दृष्टि से नहीं डरता वह जानता है कि पुरूषार्थ प्रारब्ध से बड़ा है। पुरूषार्थ में व्यक्ति व राष्ट्र दोनों के निर्माण करने की शक्ति होती है। भाग्यवाद की धारणा को ध्वस्त करना ज्ञान का पहला लक्षण है। देश भक्ति की भावना व्यक्ति व समाज दोनों के लिये गौरव का प्रतीक होती है तथा दूर दृष्टि व्यक्ति के लिये सफलता का द्वार खोलती है। इस तरह का विचार रखने वाले चौधरी ग्रामीण किसानों को भविष्य का सार्थक संकेत देते हुये बोल उठते हैं कि—"हे भारत के किसानों ! तुम अपने पूरे परिवार को खेती पर निर्भर मत करो। खेती के इर्द गिर्द पूरे परिवार की यह परिक्रमा भविष्य में मुसीबतों का अम्बार खड़ा करने वाली है। जमीन को रबड़ की तरह खींचा नहीं जा सकता। भाईयों के मध्य बटँवारा जीवन का यथार्थ हैं। वास्तविक व्यक्ति वही है जिसके नेत्र यथार्थ पहचानते हैं। तुम अपने एक पुत्र को खेती में लगाओ शेष को अन्य पेशों नौकरी इत्यादि में भेजों तभी तुम्हारा भला होगा। तभी तुम उन्नति के सोपान चढ़ोगे। तभी तुम असली भारत के भविष्य के निर्माता बनोगें।" चौधरी साहब की दूर दृष्टि से उपजा यह सत्यवचन आज से पचास वर्ष पूर्व भी सही थी आज से पाच सौ साल बाद भी सही होगा। यह सलाह किसान हितैषी गांधी व पटेल भी नहीं दे पाये थे। यह दूर दृष्टि चौधरी साहब का चमत्कार है।

स्वतंन्त्रता प्राप्ति से पूर्व पटवारी, किसानों का उतना ही शोषण करते थे जितना साहूकार। पटवारी की मानसिक सोच अंग्रेजों की शोषक नीति से मेल खाती थी।

स्वतंन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् चौधरी साहब का ध्यान समाज के इस कोढ़ की ओर गया। अंग्रेजी मानसिकता से ग्रसित, शोषण के स्रोत इस पटवारी वर्ग को सहन करना उनके लिये अन्याय से समझौता करना था। समझौता अकसर कमजोर करते हैं। आत्मबल की प्रधानता के लिये सजग प्रहरी समझौतों पर विश्वास नहीं करते, समाधान देते हैं। जो अंग व्यर्थ का बोझ विषभरा हो जाये उसकी सर्जरी ही समझदारी है। चौधरी साहब की मान्यता थी कि अत्याचार सहना पाप है। अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक दोषी होता है। अपराधी को उचित दण्ड देना जनता जनार्दन पर दया करना है। अकारण क्षमाभाव समाज में समस्या पैदा करता है। उन्होंने परख लिया था कि पटवारी वर्ग कभी भी समाज सेवा की भावना से काम नहीं कर सकता। उसकी आदत अर्जन की है। उसकी मानसिकता किसान हित से मेल नहीं खाती। उसकी सोच कभी भी अग्रेंजी दासता से मुक्त नहीं होगी अतः पटवारी वर्ग को समाप्त करना समय की पुकार है। इस तरह की गहन समझ के आधार पर पटवारी वर्ग से किसानों को मुक्ति दिलाकर उन्होंने अपने चमत्कारी व्यक्तित्व का परिचय दिया। उनके इस कदम की हर किसान आज भी प्रशंसा करता है।

जब चौधरी साहब उत्तर प्रदेश की राजनीति में अपनी पहचान बनाने में लगे थे तभी अग्रेंजी दैनिक "इन्डियन एक्सप्रेस" में एक लेख छपा था जिसका शीर्षक था 'इन्दिरा सावधान' इस लेख में कहा गया था कि यद्यपि चौधरी चरण सिंह नाम के इस नेता ने उत्तर प्रदेश को अपना कार्यक्षेत्र चुना है परन्तु इन्दिरा सावधान इस नेता की आखें दिल्ली की राजगद्दी की ओर लगी हैं। पश्चिम के जाट व पूरब के यादव आदि किसानों ने इसे बेताज बादशाह बना दिया है। यह व्यक्ति उत्तर प्रदेश तक सीमित रहने वाला नहीं है। इस प्रकार हापुड़ के एक ज्योतिषी ने इनकी जन्मपत्री देखकर भविष्य वाणी कर दी थी कि यह नेता एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगा। इस प्रकार चौधरी साहब ने अपने व्यक्तित्व से लोगों को यह एहसास करा दिया था कि यह यू० पी० में कार्यरत नेता जो आज बीजरूप में है कल देवदार बनेगा। राजा महेन्द्रप्रताप ने एक बार कहा था कि "जो शक्तिशाली हैं उनको शब्दों से प्रभाव जमाने की जरुरत नहीं होती उनकी मौजूदगी ही उनका प्रभाव बयान करती है।" चौधरी साहब ने समय से पूर्व ही भविष्य में होने वाली घटना का अनुमान करा दिया था। यह उनका चमत्कार है।

छपरौली जिस क्षेत्र ने चौधरी साहब का आजीवन साथ दिया उन्हें पाकर धन्य हो गई और छपरौली को पाकर चौधरी साहब धन्य हो गये। छपरौली देश पर छा गई और लोगों के हृदयों में घर बना गई। छपरौली ने उनके देहान्त के बाद भी उनका साथ नहीं छोड़ा और छपरौली से जो भी विधायक चुनकर विधानसभा में जाता है उसकी अलग ढंग से ही मान्यता होती हैं। उसको विशेष सम्मान मिलता है। जब वर्तमान विधायक या पूर्व विधायक विधानसभा में यह बताता है कि वह छपरौली चुनाव क्षेत्र से चुनकर आया है तो ग्रामीण भारत से आये विधायक उसे सर-आखों पर उठा लेते हैं। यह चौधरी साहब का चमत्कारी प्रभाव व उनके व्यक्तित्व का जादू है जो आज भी सबके सिर पर चढ़कर बोल रहा है। आज विभिन्न दलों को अधिकांश नेता चौधरी साहब का नाम लेकर ही राजनीति में जिन्दा रहने की कोशिश कर रहे है यह उनका सबसे बड़ा चमत्कार है।

चौधरी चरण सिंह 1989 में अपने जन्म के गाँव नुरपूर गये। उससे पूर्व वे भारत सरकार में गृहमंत्री, उपप्रधानमंत्री व प्रधानमंत्री रह चुके थे। गाँव वालों ने उनका स्वागत करने के लिये विशेष प्रबन्ध किये। कुर्सी मेजों पर खाना खिलाने की व्यवस्था की। चौधरी के गाँव जाने के लिये कच्ची सड़क थी। विश्व के पहले प्रधानमंत्री जिन्होंने अपने गाँव के लिये पक्की सड़क नहीं बनवाई थी। गाँव वालों ने उनके आगमन से पूर्व उस सड़क पर नलकूप चलाकर पानी छोड़ दिया ताकि उन्हें यह पता चले कि उनका पैत्रिक गाँव उपेक्षा का शिकार है। चौधरी साहब ने सड़क पर पानी देखा उसमें जीप फंस सकती थी अत: उन्होंने अपने ड्राईवर से गाड़ी रोकने को कहा और अपने परिवार वालों से गाँव तक पैदल चलने को कहा। वे एक मील पैदल चलकर अपने गाँव पहुँचे। उनके चेहरे पर क्रोध की कोई झलक नहीं थी।

उन्होंने गाँव वालों से कहा कि जिस गाँव में जन्म से पैदल घूमा करता था आज पैदल घूम कर उन्हें बचपन की याद आ गई। उन्होंने चरण सिंह पर आज बड़ा उपकार किया है। गाँव की मिट्टी पैरों पर लगे तो प्रस्थान है मस्तक पर लगे तो पूजा है। गाँव वाले चौधरी साहब की बात पर नतमस्तक थे। जब खाने का समय आया तो चौधरी साहब ने मेज कुर्सी देखी उन पर कपड़ा बिछा देखा वे बोले अपने ही गाँव में वे कुर्सी मेज पर बैठकर खाने को तैयार नहीं हैं इन्हें हटाओ और जमीन पर कपड़ा बिछाकर वे गाँव वालों के साथ जमींन पर बैठकर पंगत में खाना खायेंगे। उन्होंने यही किया। गांव वाले उनकी सादगी के सामने नतमस्तक थे।

आज वे अपने ही गाँव के प्रधानमंत्री रह चुके किसान हितैषी के साथ जमीन पर बैठकर खाना खा रहे थे। असाधारण क्षमता लिये चरणसिंह की सादगी उनका चमत्कार थी।

सफलता व पहचान की सीढ़ी पर चढ़कर भी जो संवेदनशील बने रहते हैं उनका प्रभाव चमत्कारी होता है। लखनऊ से मुख्यमंत्री, दिल्ली में प्रधानमंत्री रहने के बाद भी लोगों ने उनकी आंख में आंसू देखे थे। धन का अम्बार नहीं सन्तोष की प्रधानता आदमी को चमत्कारी बनाती है। प्रकृति के तीन गुण तमोगुण, रजोगुण, व सतोगुण आदमी को चमत्कारी नहीं बनाते जो तामस को ऊर्जा बना लेता है सत्व को सद्ज्ञान बना लेता है चमत्कारी होता है। अथक श्रम करने से आदमी चमत्कारी नहीं होता निष्काम कर्म करने से चमत्कारी होता है। धनबल पर प्रभाव स्थापित करने से आदमी चमत्कारी नहीं होता अपने स्वभाव में थिर होने से आदमी चमत्कारी होता है और जो अपने स्वभाव में थिर हो जाता है उसके आस पास बहुत से अनुयायी इकट्ठा होते हैं जो उसका अनुसरण करके धन्यता का अनुभव करते हैं। चौधरी साहब अपने स्वभाव में थिर थे, अपनी मान्यताओं पर अडिग थे। वे ऊर्जा, ओज व सद्ज्ञान के धनी थे और इन्हीं के बल पर उनका प्रभाव बढ़ता ही गया। उन्होंने समझौते किये लेकिन अपना मार्ग नहीं छोड़ा। उन्होंने सफलता अर्जित की लेकिन सादगी नहीं छोड़ी उन्होंने पहचान बनाई लेकिन भारतीय संस्कृति की परम्परा नहीं छोड़ी। इसी कारण उनका व्यक्तित्व चमत्कारी था।

जमींदार का किसान से सम्बन्ध साहूकार व कर्जदार जैसा था। यह शोषण का जाल चौधरी चरण सिंह को सहन नहीं था। वे शोषण मुक्त समाज के पक्षधर थे। उन्होंने जमींदारी उन्मूलन का प्रारूप तैयार किया, जिसमें किसानों के अधिकार सुरक्षित रखते हुये उन्हें भूमिधर सीरदार इत्यादि बनाने की व्यवस्था थी। इस प्रारूप की भरपूर आलोचना की गई। इस आलोचना से वे जरा भी विचलित नहीं हुये और उन्होंने आलोचना का उत्तर देते हुये कहा कि—

"इस कानून से एक ऐसे किसान का उदय होगा जो एक साथ जमींन का मालिक और रोजी कमाने वाला होगा। इस अवधारणा के तहत उनका भूमिधर जनंतत्रं का आधार होगा।"

इन शब्दों से यही उजागर होता है कि जो पेड़ अपनी जड़ों की उपेक्षा करता है वह तूफान नहीं झेल पाता। जो मकान बनाने वाला नींव पक्की नहीं रखता उसका भवन हिलता रहता है। चौधरी साहब के चमत्कारी प्रभाव में जमींदारी विनाश से

किसान के विकास की धारणा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जमींदारी उन्मूलन के समय से ही वे किसानों के सरक्षंक व परमहितैषी माने जाने लगे थे। अपने बलिष्ठ शरीर का प्रमाण आदमी को चमत्कारी नहीं बनाता अपितु परहित में किया कल्याण आदमी को चमत्कारी बनाता है।

एक सज्जन निवासी रोहटा फौज में अधिकारी के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में तैनात थे। जब वे किसान वर्ग के लोगों के बीच जाकर यह सुनाते थे कि वे चौधरी चरण सिंह के क्षेत्र में पैदा हुये तो वहाँ यादव, कुर्मी आदि तख्त छोड़कर खड़े हो जाते थे और उनसे निवेदन करते थे कि वे अकेले सम्मानपूर्वक तख्त पर बैठे क्योंकि वे पूज्य चौधरी साहब के क्षेत्र के निवासी हैं। यह सम्मान देखकर वे दंग रह जाते थे और सोचते थे कि जब उनके क्षेत्र के निवासी का इनके मन में इतना सम्मान है तो चौधरी चरण सिंह का उनके मन में कितना सम्मान होगा? वास्तव में चौधरी साहब की पूरब में किसान पूजा करते थे। आज पूरे भारत में एक भी नेता चरणसिंह की तरह सम्मान के शिखर पर नहीं है। एक भी नेता में उनके जैसी जन जन को आन्दोलित करने की शक्ति व जनता पर पकड़ नहीं है। एक भी नेता के पास उन जैसा जनाधार व उनके जैसी छवि नहीं है। इस कलियुग की कलकल में उनके जैसी कीर्ति का नेता दूरबीन से खोजने से भी मिलने वाला नहीं है। अगर कोई उनके जैसा वक्ता है तो उनके जैसा वजनी नहीं है। अगर कोई उनके जैसा ज्ञानी है तो उनके जैसा गुणी नहीं है। अगर कोई नेता उनके जैसा ईमानदार है तो उनके जैसा चरित्रवान नहीं है। यही चौधरी चरणसिंह का चमत्कार है।

आज का भारत मेरे सपनों का भारत नहीं है। आज का व्यक्ति मेरे सपनों का व्यक्ति नहीं है। आज का नेतृत्व अपने जनजागरण के दायित्व को नहीं निभा पा रहा है ऐसे विचार रखने वाले चरणसिंह आदर्शवादी नहीं थे। उनके लिये वह आदर्श व्यर्थ था जिसे धरती की धूल मे न उतारा जा सके वह धरती भी व्यर्थ है जो किसी आदर्श समाज की कल्पना करने में समर्थ नहीं हे। देश का नेतृत्व शहरीकरण व गाँवों की उपेक्षा के कारण भटक गया है। पुरुष भाग्यवादी धारणा के कारण भटक गया है। स्त्री अशिक्षा के कारण भटक गई है। नवयवुक पश्चिमी सभ्यता की अन्धी नकल के कारण भटक गया है। चौधरी चरणसिंह आजीवन इस भटकन की ओर ध्यान दिलाते हुये यथार्थवादी समाधान देते रहे। भाग्यवादी धारणा के स्थान पर प्रखर पुरूषार्थ के हिमायती बनकर उन्होंने सन्देश दिया कि हर व्यक्ति

पुरुषार्थ के बल पर अपना कायाकल्प करने में समर्थ है। नारी शिक्षा पाकर भव्य बनेगी तथा नवयुवक स्वदेशी भाव अपनाकर भटकन से बचेगा। इस प्रकार चौधरी साहब के पास जौहरी की परख भरी निगाह थी। वे पहचानते थे कि भ्रष्टाचार की जड़ें बड़े लोगों में बड़े शहरों में जमी हैं। भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की ओर फैलता है। अगर गगोंत्री ही दुर्गन्ध से भर जायेगी तो गंगा निर्मल नहीं हो सकती। चौधरी साहब को व्यक्ति समाज व देश की समस्याओं की पहचान थी। उन सभी समस्याओं का उनके पास चमत्कारी समाधान था।

गीता में कहा गया है कि ज्ञान के समान पवित्र करने वाला इस धरती पर कुछ भी नहीं है। शास्त्रों में विद्यादान को सर्वोत्तम बताया गया था। विद्या को व्यक्ति के विकास में सहायक माना गया है। शिक्षा के बल पर विकास का नाम ही असली जीवन है। गीता में यह भी कहा गया है कि "हे अर्जुन ! तू चाहे कुछ भी छोड़ देना परन्तु तीन चीज कभी मत छोड़ना और वे हैं तप, दान व यज्ञ क्योंकि ये तीनों विद्वानों को भी पवित्र करने वाले हैं।" चौधरी चरणसिंह आजीवन तप, दान व यज्ञ की त्रिवेणी बहाते रहे। जीवन का यह यथार्थ है कि वही नदी स्वच्छ रहती है जो बाँटती है, वही कुंआ ताजा रहता है जो पानी बांटता रहता है। तालाब सड़ जाता है क्योंकि वह बांटना बन्द कर देता है। धर्म का मूल दान इसी कारण बन गया क्योंकि जो बांटता है, वह सम्मान अर्जित करता है, फैलता जाता है, जो छीनता है, दुर्जन माना जाता है। दान ही दिव्यता में प्रतिष्ठित करता है। चौधरी चरणसिंह का चमत्कारी प्रभाव इसी कारण था क्योंकि उनका जीवन तपस्वी का जीवन था। उनके जीवन का आधार संयम था। जो भी उन्होंने जाना था उसका उन्होंने भरपूर बांटा। ज्ञान दान उनके जीवन की शैली थी और यज्ञ उनके जीवन का आधार था। गीता उनमें सजीव हो उठी थी। उनका चमत्कारी प्रभाव इसी कारण था।

भारत बहुत लम्बे समय तक गुलाम रहा परन्तु भारतीय संस्कृति पर कोई भी हमलावर हानि पहुँचाने में असमर्थ रहा। कोई भी हमलावर हमसे हमारी सबसे पवित्र धरोहर योग-वेद वेदान्त दर्शन नहीं छीन पाया और न ही उसे विकृत कर पाया। भारत के नागरिकों की पूरी आत्मा विदेशी प्रभाव से मुक्त रही और यही कारण था कि गुलामी के दौर मे भी भारतीय मनीषा "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध

अधिकार है" का उद्घोष करती रही। महर्षि दयानन्द ने साफ शब्दों में स्वराज्य का नारा दे दिया कि कोई भी कितना ही करे अपना शासन ही सर्वश्रेष्ठ होता है। चौधरी चरणसिंह का युग आते आते विदेशी हमला संस्कृति का चीर हरण करने की दिशा में गतिमान हो चला था जिसे समझने में उन्हें जरा भी देर नहीं लगी और उन्होंने यह घोषणा कर दी कि भारत देश, यह राष्ट्र तभी जिन्दा रह सकता है जब हम पश्चिम के परिवेश से अपने आपको सुरक्षित रख सकें उन्होंने कहा था कि यदि इस राष्ट्र को हमें जिन्दा रखना है तो पश्चिम के सामाजिक व आर्थिक दोनों ढाँचों का अनुकरण करने से बचना होगा। सभ्यता है बाहर की सजावट, संस्कृति है भीतरी गुणों की खिलावट। इस घनघोर कलियुग में श्रेष्ठ व शुभ को बचाने का संकल्प उनका चमत्कार था जिसको उन्होंने व्यवहार में उतारा था। दूसरों को उदाहरण देते हुए जीना ही श्रेष्ठता है और उन्होंने इस घोर कलियुग में सत्यम्, शिवम्-सुरन्दरम् तीनों की साधना की थी। और जो यह साधना कर लेता है उसका चमत्कार देवदार की तरह आकाश से बात करता है।

चौधरी चरणसिंह के चेहरे पर सरदार पटेल की कर्मठता की झलक थी। उनके चरित्र में महात्मा गांधी की सादगी, नैतिकता व निष्ठा थी। उनके हृदय पर महर्षि दयानन्द की आर्य आस्था की स्पष्ट छाप थी जो भाग्य से पुरूषार्थ को बड़ा मानती थी। भृष्टाचार ऊपर से नीचे की और फैलता है और सदाचार भीतर से बाहर की और फैलता है। यदि बाहर केन्द्र दूषित हो जाये तो भृष्टाचार की जड़े पूरे देश में फैल जाती हैं। यदि भीतर केन्द्र दूषित हो जाये तो समाज में सदाचारी खोजना मुश्किल हो जाता है। स्वयं के सुधरने से संस्कृति पैदा होती है और संघ के भटकने से विकृति पैदा होती है। आज देश की दुर्दशा का कारण बड़ों का पथविमुख होना है। जो विदेशों की भटकी सभ्यता की अन्धी नकल कर रहे हैं उन्होंने देश को मुश्किल में डाल दिया है। बापू की **"सादा जीवन उच्च विचार व कुटीर उद्योगो"** की नीति इस देश के लिये सर्वहित कारी थी। देश जबसे इस नीति से हट गया उसी दिन से भारत के दुर्भाग्य की कहानी शुरु होती है। जब तक अगणित हाथों को काम नहीं मिलता देश का उद्धार सम्भव नहीं है। शरीर की

आवश्यकताओं को पूरा करना प्रकृति की पुकार है। रोटी, कपड़ा व मकान तीनों के मिलने पर शरीर शांत हो जाता है परन्तु मन की माँग को सिकन्दर भी पूरा नहीं कर पाता है। शरीर मोटा पहनकर तथा साधारण भोजन पाकर भी तृप्त हो जाता है परन्तु मन सारी दुनियां जीतना चाहता है यही कारण है कि सभी सिकन्दर आधी यात्रा में मर जाते हैं। चौधरी जी चाहते थे कि मानव शरीर से सादगी पसन्द तथा मन से सन्तोषी बने तभी वह माया के बढ़ते प्रभाव से बच सकेगा। उन्हें यह वेदमंत्र अति प्रिय था कि

"उठो जागो और जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये मत रुको।"

आर्य वही है जिसकी ऊर्जा श्रेष्ठ के लिये समर्पित है। पशु बच्चे पैदा करता है भोजन करता है अपना पेट भरता है पशु भी सोता है तथा अपनी आत्मरक्षा करता है। जो मनुष्य इन्हीं चारों की चिन्ता में जीवन बिता देता है वह आर्य नहीं पशु तुल्य होता है। आर्य वह है जो अपने पुरुषार्थ से अपने भाग्य का कायाकल्प करने में समर्थ है तथा अपने मन की अराजक शक्तियों को एक जुट करके वीर, बलिष्ठ व तीव्र बुद्धि वाला बनकर वेद वचनों के अनुसार अपना जीवन पालता है। जो जीवन समस्या का समाधान खोजने में लीन रहता है वही आर्य है। चौ० चरणसिंह आजीवन आर्य समाजी रहे तथा उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि

"आर्य समाज मेरी माँ है महर्षि दयानन्द मेरे गुरु है।"

सत्य के मार्ग पर झेली गई पीड़ा एक दिन वरदान बन जाती है। असत्य के मार्ग पर प्राप्त हर सुविधा एक दिन अभिशाप सिद्ध होती है। यह सौभाग्यशाली दिन आज भी नहीं आया है जब सुकरात व महर्षि दयानन्द को विष व गांधी को सीने पर गोली के घाव न झेलने पड़े। महर्षि दयानन्द ने समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों के विरूद्ध खुलकर बिगुल बजाया तथा बदले में उन्हें गाली, पत्थर व विष मिला। उन्होंने बहुत सी पुरानी सड़ी गली मान्यताओं पर तीखे प्रहार किये तथा उन्हें धराशायी किया। उन्होंने पत्थर पूजा के स्थान पर प्रज्ञा की पूजा करना सिखाया। पत्थर जो खुद मुर्छा में सोया है आदमी को नहीं जगा सकता। जो आकार में सिमित है निराकार की महिमा प्राप्त नहीं कर सकता। जो स्वयं नहीं चल सकता

दूसरे को मंजिल तक नहीं पहुँचा सकता। जो स्वयं जड़ है चैतन्य का सहारा नहीं बन सकता। चौधरी चरणसिंह आजीवन सच्चे वैदिक धर्म की दुहाई देते रहे। उनकी आर्य आस्था आजीवन अकम्प रही।

चौधरी चरणसिंह ने भी अतीत से प्रेरणा ली थी। जब वे प्रशासन को चुस्त व चैतन्य बनाने चलते थे तो उनके हर कर्म पर सरदार पटेल की छाप मिलती थी। जब वे गाँव, गरीब, किसान व कुटीर उद्योगों की अर्थनीति की बात करते थे तो महात्मा गांधी जी का जीवन दर्शन उनका मार्ग दर्शन करता था। जब वे धर्म व आध्यात्म के सजग प्रहरी बनते थे तो उनकी आखें महर्षि दयानन्द व उनके सत्यार्थ प्रकाश की ओर निहारती मिलती थी। इन तीनों की प्रेरणा से उन्होंने अपने जीवन पर महानता के फूल खिलाये। उन्होंने देश के भविष्य को देहात के भविष्य से जोड़ा तथा देश की समृद्धि के रास्ते को गाँव के खेत व खलिहान से होकर गुजारने का आग्रह किया। उनका असली भारत गाँवों में बसता था। उनकी मान्यता थी कि खेती का उत्थान ही देश का उत्थान है। उन्होंने स्वयं कहा था कि जब तक खेतिहर की क्रयशक्ति नहीं बढ़ती तब तक उद्योगों का विकास नहीं होगा।

भीड़ में अपनी श्रेष्ठता दिखाना पुरुषकार है।
भीड़ में अपनी सभ्यता दिखाना शिष्टाचार है।
भीड़ में अपनी सज्जनता दिखाना सदव्यवहार है।
भीड़ में अपना स्वामित्व दिखाना अधिकार है।
भीड़ में अपनी सहमति दिखाना स्वीकार है।
भीड़ में अपनी विनम्रता दिखाना नमस्कार है।
भीड़ को अपने अनुकूल बनाना सत्कार है।
भीड़ पर भरोसा दिखाना आभार है।
भीड़ के मतों के अनुसार चलना लोक व्यवहार है।
भीड़ में चलते हुये

शिखर बनकर अपनी अलग पहचान बनाना चमत्कार है।

चौधरी साहब ऐसे ही चमत्कारी थे। उनके इस चमत्कार की चर्चा पद्य में की जा रही है जो इस प्रकार है।

चरणसिंह चमत्कार चर्चा

(1) सूरज की तरह बढ़ता एक प्रभाव आया था।
शोषण तंत्र को एक करारा जवाब आया था।
चौधरी चरणसिंह नाम इस धरती पर मित्रों
कृषक क्रान्ति का एक इन्क़लाब आया था।

(2) दिशा जाननी हो तो ध्रुवतारा खोजो।
सोया पौरुष जगाना हो तो एक नारा खोजो।
असली भारत का भविष्य बदलना हो तो मित्रो
चरणसिंह जैसे एक नेता का सहारा खोजो।

(3) प्राण की पुकार से विश्वास बदल जाता है।
तलवार की धार से इतिहास बदल जाता है।
चरणसिंह जैसे नेता करते जब सिंहनाद
जमीन की छोड़ो आकाश बदल जाता है।

(4) मानव तब जिन्दा जब स्वाभिमान जिन्दा है।
शहीद तब जिन्दा जब बलिदान जिन्दा है।
अन्तःकरण की आवाज बुलन्द कर बोले चौधरी
भारत तब जिन्दा जब खलिहान जिन्दा है।

(5) षडयन्त्र हो रहा है तूफान चल रहा है।
किसान लुट रहा है खलिहान जल रहा है।
शोषण के समर्थक अब हो जा सावधान!
किसान अब जाग करवट बदल रहा है।

(6) जो मौत से करे मुठभेड़ वो शपथ थे चरणसिंह।
जो विजय धाम ले जाये वो रथ थे चरणसिंह।
गाँव गाँव उतार लाये सुख की गंगा जो
इस युग के सच्चे भागीरथ थे चरणसिंह।

(7) आर्य विचार के भूचाल के समर्थक थे।
असली भारत खुशहाल के समर्थक थे।
चरणसिंह नहीं थे समर्थक आकाशी सपनों के
वे धरती के हल कुदाल के समर्थक थे।

(8) किसान को सम्मान से बुलाना होगा।
गांवों का जीवनस्तर उठाना होगा।
किसान नहीं जायेगा मांगने कुछ दिल्ली
दिल्ली को खलिहान आ सर झुकाना होगा।

(9) चाह से नहीं चरित्र से नमस्कार मिलता है।
पसन्द से नहीं कौशल से पुरुस्कार मिलता है।
श्रम व संघर्ष का नाम है जीवन मित्रों
माँगने से नहीं छीनने से अधिकार मिलता है।

(10) वेद आस्था आर्य विश्वास के पक्षधर थे।
ग्राम संस्कृति ग्राम विकास के पक्षधर थे।
गांधी, पटेल व दयानन्द हो जिसके आदर्श
चौ० चरणसिंह उस इतिहास के पक्षधर थे।

(11) समय के संकेत की पहचान से गुजरेगा।
जनपथ पर किसान सम्मान से गुजरेगा।
देश की समृद्धि का मार्ग मेरे मित्रों
गाँव के खेत और खलिहान से गुजरेगा।

(12) चौधरी पर लागू संसारी नियम नहीं है।
मरने के बाद प्रभाव हुआ कम नहीं है।
उनका चमकता नाम जो धरती से मिटा दे
मौत में भी मित्रों इतना दम नहीं है।

(13) सहकारी खेती का घनघोर प्रतिवाद करते थे।
जीवन के अर्थशास्त्र का अनुवाद करते थे।
शोषणतंत्र के विरुद्ध किसानों छेड़ो धर्म युद्ध
चौधरी हरदिन यह शंखनांद करते थे।

(14) ग्रामीण भारत के उद्धार की लड़ाई लड़नी होगी।
हरित क्रान्ति के नवविचार की लड़ाई लड़नी होगी।
चौधरी चरणसिंह की शपथ ले डटे रहना
इस बार लड़ाई आर पार की लड़नी होगी।

(15) जीवन का महामंत्र केवल संघर्ष होता है।
पीड़ा झेलकर ही जीवन में उत्कर्ष होता है।
खेत की धूल लगाता जब कोई अपने मस्तक
चरणसिंह की आत्मा को अपार हर्ष होता है।

(16) भृष्टाचारी देख उनका रुख कड़ा होता था।
कद उनका हर रोज हर वर्ष बड़ा होता था।
जहां भी चौधरी खड़े होते थे देकर ललकार
चुनौती बन वहीं एक नया दल खड़ा होता था।

(17) सत्य पर किया प्रहार सफल नही होता है।
जीवन का प्रश्न टालने से हल नहीं होता है।
एक चौपाल पर करे जो सौ शीशमहल अर्पित
वह चरणसिंह मरकर भी ओझल नहीं होता है।

(18) ना आंकडों ना अनुमान से देश बनता है।
ना शपथ ना संविधान से देश बनता है।
पुराने की समझ में नये की निष्ठा जोड़ो
हल और कुदाल के समाधान से देश बनता है।

(19) जिसने स्वयं को फौलादी ढाचों से ढाला था।
उस चरणसिंह का हर मोड बड़ा बोलबाला था।
जिन खतरों में और टेक देते हैं घुटने
उन तूफानों ने उस सुजान को पाला था।

(20) जब भी मैं गावों मे निवास करता हूँ।
परिक्रमा खलिहान के आस पास करता हूँ।
घूमता हूँ जब भी संसद के इधर उधर
एक और चरणसिंह की तलाश करता हूँ।

(21) खेत में खड़े हैं मैदान में खड़े हैं।
आज भी सभी उनके सम्मान में खड़े हैं।
हर किसान का ह्रदय आवाज देता रोज
आज भी चरणसिंह खलिहान मे खड़े हैं।

(22) बिजली का बल लिये हमारी बोली होगी।
अब नहीं किसी केन्द्र पर घट तोली होगी।
असली भारत हेतू लडेंगे निर्णायक जंग
एक ओर दिल्ली दूजी ओर छपरौली होगी।

(23) लोभ दे ध्यान हमारा बटा नहीं पाओगे।
भय दे प्रभाव हमारा घटा नहीं पाओगे।
हम हैं हरित क्रान्ति सेना के अंगद
पैर एक इन्च पीछे हटा नहीं पाओगे।

(24) तुम हमें मुट्ठी लिये अधिकार खड़ा पाओगे।
लखनऊ छोड़ दिल्ली दरबार खड़ा पाओगे।
हमारे सब्र की और परीक्षा मत लेना
हमें शांति क्रान्ति दोनों को तैयार खड़ा पाओंगे।

(25) उन्होंने कुटिया में बलवान छिपे पाये थे।
हल कुदाल मे वरदान छिपे पाये थे।
पत्थर की मूरत में नहीं छिपे थे देव
उन्होंने खलिहान में भगवान छिपे पाये थे।

(26) दुरबीन ने भी खोट उनमें पाया नहीं था।
एक भी किसान उन्हे पराया नहीं था।
आतंकवादी देते रहे आजन्म उन्हें धमकी
एक पग कभी पीछे हटाया नहीं था।

(27) संकल्प भरी सौगन्ध सब पर भारी रहेगी।
निश्चित विजय अन्त में हमारी रहेगी।
शहरों का सनातन धर्म केवल शोषण
लड़ाई विरुद्ध उसके युगों जारी रहेगी।

(28) बादलों सम आकाश पर छाता ही मिला है।
धर्मयुद्ध का बिगुल हरदम बजाता ही मिला है।
चरणसिंह का चेला भी होता है प्राणवान
काम अधूरा आगे बढ़ाता ही मिला है।

(29) जन्म भर रणसिंहा बजाते रहे थे।
जो पर्दे में छिपा था दिखाते रहे थे।
गांधी जी को मानते थे युगपुरूष जरुर
पर तीन भूलें उनकी भी गिनाते रहे थे।

(30) देश विभाजन स्वींकार क्यों कर गये बापू।
तंत्र साधना बिन विचार क्यों कर गये बापू।
सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाने में चूके
भूल तीन आप क्यों बेकार कर गये बापू।

(31) वृक्ष बदलकर वृष्टि बदलने आये थे चरणसिंह।
पक्ष बदलकर दृष्टि बदलने आये थे चरणसिंह।
साज बदल मन बहलाने नहीं आये थे हरगिज
सोच बदलकर सृष्टि बदलने आये थे चरणसिंह।

(32) वे अर्थ व धर्म का ठोस आधार देते थे।
नवयुवक हाथ पौरुष की तलवार देते थे।
शोषण की काली रात नहीं लेती खात्मे का नाम
जूझने की उससे हरदिन पुकार देते थे।

(33) सादा वेष में वो वजनी विचार लिये थे।
नेहरु तक से जूझने का अधिकार लिये थे।
चरणसिंह नहीं थे मोह के पिजड़े में बन्द
वो अनन्त श्रद्धा अनन्त सदाचार लिये थे।

(34) वो सोई सम्भावना जगाने पर लगे थे।
वो बोलकर अपनों को बुलाने पर लगे थे।
मुरारजी के शिष्यों से पूछों फौरन कहेंगे
चरणसिंह के सब तीर ठिकाने पर लगे थे।

(35) सपनों का हर महल फुका हुआ पाता हूँ।
रथ प्रगति का आज रुका हुआ पाता हूँ।
अटल बोले चरणसिंह थे इस युग के चमत्कार
बिन झुकाये सर अपना झुका हुआ पाता हूँ।

(36) चौधरी गौरीशंकर गिरनार सरीखे थे।
चौधरी पेड़ों में देवदार सरीखे थे।
उनका वजन तोले धरती ऐसी तुला नहीं
चरणसिंह इस युग में अवतार सरीखे थे।

(37) सादा रह असाधारण होना चमत्कार होता हैं।
महाभारत मध्य डटे रहकर बेड़ा पार होता है।
धरती करती जब सदियों तपस्या मित्रों
तब पैदा उनक जैसा एक ईमानदार होता है।

(38) जिधर से चुनौती मिली चढ़ते ही चले गये।
जीवन का अर्थशास्त्र पढ़ते ही चले गये।
नूरपुर में जन्म ले पंख तोलते ही रहे
दिल्ली की गद्दी तक बढ़ते ही चले गये।

(39) सिंचाई हेतु एक नहर हर गांव तक ले जानी है।
दिल्ली से जुड़ी एक डहर गांव तक ले जानी है।
चरणसिंह ने जो छेड़ा था हरित क्रान्ति का युद्ध
उस आन्दोलन की लहर हर गांव तक ले जानी है।

(40) वेद निष्ठा के सच्चे सार थे चरणसिंह।
विवेक व वरदानों के अम्बार थे चरणसिंह।
किसान चेतना को दी जिन्होंने आकाशी बुलन्दी
कलियुग में अनूठे चमत्कार थे चरणसिंह।

■□■

अध्याय 2

जन्म से साधारण, कर्म से सबल चरणसिंह

साधारण रहकर भी असाधारण काम करने की क्षमता रखने वाले चौधरी चरणसिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को नूरपुर जिला गाजियाबाद में हुआ था। साधारण किसान परिवार में एक सकंल्पी का जन्म हुआ। उनमें जन्मजात प्रतिभा थी तथा गजब की प्राणशक्ति थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में अपने पुत्र की राजनीति में कोई सहायता नहीं की और राजनीति में पनपती "पुत्र प्रोत्साहन" परम्परा को नकार दिया। चौधरी चरणसिंह ने आगरा विश्वविद्यालय से वकालत की डिग्री ली तथा गाजियाबाद में वकालत शुरू की। सन् 1929 में वे राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य बने तथा अपने राजनैतिक जीवन की यात्रा शुरू की। देश की राजनीति मे उस समय काग्रेस पार्टी का बोलबाला था देश के अनेकों सपूत काग्रेस में रहकर देश की आजादी के लिये संघर्ष कर रहे थे। महात्मा गांधी, सरदार पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, गोपालकृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, अब्दुल कलाम आजाद आदि दिग्गज नेता शनैः शनैः आजादी की जंग में कूद पड़े थे और कांग्रेस देश की आवाज बनती जा रही थी। चौधरी चरणसिंह में बचपन से ही सरदार पटेल की छवि थी और वे समाज में अनीति, अनाचार व स्वच्छन्दता के कट्टर विरोधी थे। वे संयम व सादा जीवन उच्च विचार के मूर्तरूप थे। वे आर्य संस्कृति के समर्थक बने रहे तथा जीवन भर वेदों के वरदान का लाभ उठाने का सन्देश देते रहे। उन्होंने भारत की एक तस्वीर अपने मन में बनाई थी जहां समृद्धि गांव से शुरू होती थी और ग्रामीण भारत ही उनका असली भारत था। गांधी जी ने कहा कि **"मैं एक ऐसा भारत बनाऊगाँ जिसमें गरीब से गरीब लोग भी यह अनुभव करेंगे कि यह उनका देश है जिसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्त्व है।"** उन्होंने यह भी कहा था कि भारत गांवों मे बसता है। चौधरी चरणसिंह ने सन् 1925 में आगरा विश्वविद्यालय से इतिहास विषय लेकर एम० ए० की डिग्री प्राप्त की तथा एक साल पश्चात 1926 में वकालत पास करके 1928 में गाजियाबाद में वकालत शुरू कर दी। सन् 1929 में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में बुलाया गया तथा उस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य भारत भारतीयों के लिये का उद्घोष हुआ। चौधरी साहब ने सन् 1929 में गाजियाबाद जिले में काग्रेस कमेटी का गठन किया। इसका उद्देश्य भारत को गुलामी की जंजीरों

से मुक्त कराने के लिये अपने जनपद में वातावरण पैदा करना था। जीवन में निर्बलता से बड़ा कोई पाप नहीं है तथा परतंत्रता से बड़ा कोई अभिशाप नहीं है। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान पहली बार जेल गये। महात्मा गांधी ने घोषित कर दिया था कि मनुष्य जाति को मुक्ति और शक्ति दोनों दिलाने वाला एकमात्र उपाय सत्याग्रह है। सन् 1940 में चौधरी साहब ने स्वराज्य को मूर्त रूप देने के उद्देश्य से पुनः जेल यात्रा की और यह उनकी तीर्थ यात्रा थी। महान उद्देश्य के लिये यातना सहने से आत्मा बलवती होती है।

सन् 1942 में महात्मा गांधी ने करो या मरो का नारा दिया। महात्मा गांधी की मान्यता थी कि जीवन की सार्थकता जानने में नहीं करने में है। सोचने में नहीं चलने में है। अक्षरों के पूरे आकाश से आचरण का थोड़ा अभ्यास भी श्रेष्ठ है। उन्होंने कहा था कि सत्याग्रही के शब्द कोष में पराजय जैसा शब्द होता ही नहीं है। सन् 1942 से पूर्व ही चौधरी साहब 1932 में मेरठ जिला बोर्ड के उपाध्यक्ष चुने जा चुके थे और इस पद पर वे निरन्तर 1936 तक बने रहे।

सन् 1937 में वे कांग्रेस टिकट पर उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिये चुने गये। सन् 1947 में देश स्वतंत्र हुआ। उसके पश्चात चौधरी चरणसिंह ने किसानों को संगठित करना शुरू कर दिया था। सन् 1967 में वे संयुक्त विधायक दल के नेता के रूप में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री बने। सन् 1968 में उन्होंने भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना की। सन् 1970 में वे पुनः उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री बने और लगभग छः माह तक इस पद पर रहे। सन् 1974 में उन्होंने भारतीय लोकदल की स्थापना की। 26 जून, 1975 को इन्दिरा गांधी ने देश में आपात स्थिति लागू कर दी और देश के बड़े-बड़े नेता जेल में डाल दिये गये जनता के मौलिक अधिकार निलम्बित कर दिये गये। इसी दौरान 23 मार्च 1976 को उत्तर प्रदेश विधानसभा में जो चौधरी साहब ने भाषण दिया वह मौत से खेलने की तैयारी थी परन्तु चौधरी अकम्प थे और हर चुनौती झेलने को तैयार थे। इंदिरागांधी को चुनौती देने के आशय से जनता पार्टी का गठन किया गया उसमें चौधरी साहब ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1977 के चुनाव में जनता पार्टी सत्ता में आई। चौधरी साहब गृहमंत्री बने। 24 फरवरी सन् 1979 में चौधरी साहब उपप्रधानमंत्री बने तथा 28 जुलाई 1979 को देश के प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश में पहली बार ग्रामीण पुनरुत्थान मंत्राल्य की स्थापना की जिसका उद्देश्य ही ग्राम विकास की चिन्ता

करना था और उस दिशा में ठोस कदम उठाना था। एक साधारण किसान का बेटा देश का प्रधानमंत्री को पद पर पहुंचा यह ग्रामीण भारत के लिये उत्सव का दिन था चौधरी साहब का निधन 29-5-87 को हुआ। अंसख्य लोगों ने कहा कि जब तक सूर्य व चन्द्रमा का अस्तित्व रहेगा चौ० चरणसिंह का नाम भी अमर रहेगा। किसानों व किसान नेता के संघर्ष के परिणाम स्वरूप उनकी स्मृति में, दिल्ली में उनकी समाधि को 'किसानघाट' के नाम से जाना जाता है। प्रतिवर्ष वहां हजारों की संख्या में उनके समर्थक उनको श्रद्धा सुमन-अर्पित करने जाते हैं। उनके चेहरे पर तपस्वी की चमक थी उनके भीतर त्यागी का गौरव था वे छल प्रपंच से कोसों-दूर रहते थे। वे ईमानदारी के मूर्तरूप थे। बेईमान का सुख बाहर होता है। ईमानदार का सुख उसके भीतर होता है। जब तक समाज सादगी, संयम, सरलता सहजता का सम्मान करना नहीं सीखता तब तक समाज को पतन के गर्त में गिरने से नहीं बचाया जा सकता। जो समाज व्यर्थ की चीजों को मूल्य देता है वह सही मार्ग से भटक जाता है। जो समाज आवश्यकता पर रहता है वह नैतिक तथा जो सजावट व श्रृंगार को महत्व देता है वह अनैतिक हो जाता है। चौ० चरणसिंह के सम्मान में इतना अवश्य कहा जा सकता हैं—

चौ० चरणसिंह थे समाज के सम्मानित नेता प्रणेता।
उन्होंने समय के हर संकेत को पहचाना।
आज की सर्वश्रेष्ठ क्रान्ति है मेरे मित्रों
ग्रामीण असली भारत की सेवा तथा श्रेष्ठ व शुभ को बचाना।

आजीवन वे साधारण किसान की तरह रहे कर्मक्षेत्र में जीवनभर सबलता का प्रमाण देते रहे। जब भी धार्मिक आस्था का प्रश्न आया वे सकंल्प के मूर्तरूप थे जो एक इन्च भी इधर से उधर हटने को तैयार नहीं थे।

□■□

अध्याय 3

मौलिक अधिकारों के सजग प्रहरी चरणसिंह

जो लोग आशा व आत्म विश्वास से भरे होते हैं वे अपनी जीवन शैली किसी दबाव में बदलने को तैयार नहीं होते। भारतीय गणंतत्र के संविधान में मानव के मौलिक अधिकारों का सजीव उल्लेख है। प्रजातंत्र में विरोध का स्वर उठाना अपराध नहीं है। यह एक विचारक ने सही कहा था कि जीवन में जो भी महत्त्वपूर्ण है बाजार में उसकी कोई कीमत नहीं है और मौलिक अधिकार भी उसी श्रेणी में आते हैं। धन्यभागी है वे लोग जो बोलने की स्वतन्त्रता के अधिकार को सुरक्षित रखना चाहते हैं। स्वतन्त्रता वह सर्वश्रेष्ठ उपहार है जिसकी गहराई में अमृत तथा ऊंचाई में मोक्ष है यह भारतीय मनीषा का उद्घोष है। धन्यभागी हैं वे लोग जो प्रकृति द्वारा दूसरों को स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाने के लिये पैदा किये जाते हैं। कोई भी मानव स्वेच्छा से कारागार में नहीं रहना चाहता क्योंकि वहां उसकी स्वतन्त्रता का हनन होता है। भारतीय संविधान में स्पष्ट उल्लेख है कि बिना कानून की प्रक्रिया अपनाये किसी से भी उसकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नहीं छीनी जा सकती। मानव का यदि कर्म अधूरा रह जाता है तो वह अधूरा रह जाता है यदि उसकी स्वतन्त्रता अधूरी रह जाती है तो वह अधूरा रह जाता है। परंतत्र जीवन जीने योग्य नहीं है। इसी कारण स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान यह नारा लगाया गया था कि 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। पशु तक परंतत्र रहकर सुखी नहीं रहता तब मानव के सुखी होने की कल्पना ही व्यर्थ है।

जब कोई आदमी विरोधी हवा में अकम्प खड़ा होता है, यातनाओं के सामने नहीं झुकता तभी उसके भीतर आत्मा का जन्म होता है। जिस प्रकार दो पत्थरों के टकराने से अग्नि पैदा होती है उसी प्रकार चुनौती का सामना करने से आत्मा का जन्म होता है। जब बाहर की कोई हवा भीतर लहर पैदा नहीं कर पाती तब साधक के भीतर योगी का जन्म होता है और अब विरोधी हवा में कोई आदमी आगे बढ़कर मोर्चा सभालंता है तो नेतृत्व शक्ति का जन्म होता है। किसी भी देश के लिये यह सौभाग्य ही है कि वहां की हवा में राजनीतिक स्वतन्त्रता की गन्ध हो और एक ठोस आधार हो अन्यथा आदमी जीते हुये भी एक मशीन होता है और मशीन जैसा जीवन एक दुर्घटना है। चौधरी साहब में एक विलक्षण नेतृत्व शक्ति थी और प्रजातंत्र के प्रति एक वचनबद्धता भी थी जिसको उन्होंने आजीवन निभाया।

भारतीय मनीषा ने उन्हें देश का सच्चा सपूत बताया। वे पिचासी वर्ष से भी अधिक दिनों तक जिन्दा रहे तथा आजीवन देश व धर्म से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करके समाधान सुझाते रहे। उन्होंने किसान को देश का भाग्य विधाता माना तथा श्रमिक के हाथों को मशीन से अधिक सम्मान दिया। वे व्यक्ति को स्वार्थ व संकीर्णता से ऊपर उठाकर सादा जीवन व उच्च विचार में आस्था रखने वाला समाज सेवक बनाना चाहते थे। देश के भविष्य को देहात से जोड़कर उन्होंने शहरी लोगों को स्पष्ट बता दिया था कि उनके लिये किसान का हित सर्वोपरि है। गांवों की उपेक्षा करके शहरों के विस्तार करने व सम्पन्न बनाने की हर नीति आत्मघाती है। देश का आर्थिक विकास कृषि से जुड़ा है। जब तक कृषि के क्षेत्र में समृद्धि नहीं आती तब तक गरीबी हटाने का नारा खोखला सिद्ध होगा। देश के कर्णाधारों को सपने से जागना होगा तथा अपनी दृष्टि गाँवों की ओर उठानी होगी। कृषि हर उद्योग की आधारशिला है। उन्हीं के शब्दों में "**कृषि प्राथमिक तथा मूलभूत उद्योग हैं।**" स्वतन्त्रता प्राप्ति के तुरन्त बाद लालकिले से उद्घोष हुआ था कि "हमें हर आँख से आसू पोंछना है" परन्तु जैसे जैसे समय बीता हर आश्वासन सपना सिद्ध हुआ। उसका एकमात्र कारण यही था कि कृषि के महत्व को स्वीकार करने में अतिशय विलम्ब हुआ और जब किसी पेड़ की जड़ों की उपेक्षा कर दी जाती है तो उस पर फल फूल नहीं आते। अत: चौधरी चरणसिंह दुखी होकर बोल उठते हैं कि कृषि क्षेत्र में सरकार की असफलता ने देश के हितों को गम्भीर हानि पहुँचाई है। बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि कायर एक ही जीवन में हजार बार मरता है। सच तो यह है कि कायर प्रतिपल मरता है। कायर हर पल अपने आपको शत्रुओं से घिरा पाता है। उसे जन्म तो मिलता है परन्तु जीवन के शिखर पर वह नहीं चढ़ पाता। अपने अदम्य साहस व विपरित परिस्थितियों में न झुकने की वृति के कारण चौधरी चरणसिंह ने अपनी अलग पहचान बना ली थी। वेदों में कहा गया है कि जो वीर व बलिष्ठ है मेधावी है अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। चौधरी चरणसिंह अपने भीतरी सद्‌गुणों के कारण इतिहास में अमर हो गये। जीवन में जो भी घटनाएं घटती हैं वे मानव को कायर अथवा साहसी नहीं बनाती वे तो उसकी असली स्थिति को उजागर करती हैं।

सन् 1975 में देश में आपातकाल की घोषणा कर दी गई तथा देश के बड़े बड़े नेताओं को रातो रात जेलों में ठूस दिया गया। चौधरी भी उनमें से एक थे। पूरे देश पर आंशका व भय के काले बादल मडराने लगे। जो नेता बढ़ चढ़ कर

बोलते थे उन्हें साँप सूंघ गया वे अज्ञात स्थानों पर जा छुपे तथा उनका असली रूप उजागर हुआ। दूसरी ओर चौधरी चरणसिंह ने उस समय जो सिंह गर्जना की उसको इतिहास आज तक भी नहीं भूला है। उन्होंने लखनऊ विधान सभा में एक जोशीला तथा अनूठा भाषण दिया जिसने देशवासियों की मुर्दा नशों में नवजीवन का संचार किया। वास्तव में जब शासन पर जनता का कोई अंकुश नहीं रहता तब जनमानस दमन की चक्की में पिसने लगता है। शासन की हिटलरशाही जनता को बहुत महंगी पड़ती है। जब आदमी की जुबान पर ताले जड़ दिये जाते हैं तो मानवता अपनी गरिमा खो देती है और जीवन अंधकार की अमावस से घिर जाता है। शासन की निरंकुशता जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई तथा जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। जहाँ आदमी की चेतना पर चारों तरफ से पहरा लगा दिया जाता है वहाँ श्रेष्ठ व शुभ खोने लगता है। जहाँ कठोरता है वही मृत्यु को बुलावा है जहाँ प्रजातंत्र का लचीलापन है वही जीवन्त लहर उठती है। चौधरी चरणसिंह प्रशासन के मामले में कोई ढिलाई सहन नहीं कर सकते थे परन्तु प्रजातंत्र व व्यक्ति के मौलिक अधिकारों के सजग प्रहरी बनकर आजीवन अपने पक्ष पर अडिग रहे। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन का विकास अपने बल पर करे। मानव मशीन जैसा नहीं है उसमें विकास की सम्भावना है तथा इस विकास के लिये उसे स्वतन्त्रता की हवा चाहिये। व्यक्ति समाज के ऊपर बलिदान होने के लिये नहीं भेजा गया समाज व्यक्ति के उद्धार के लिये बनाया गया है। भारत के आकाश पर भी कुछ दिनों के लिये आपतकालीन शासन के काले बादल मँड़राते देखे गये। देश के सारे प्रसिद्ध नेता जेलों में निरूद्ध थे। भारत देश जिसने सदा से मुक्ति के मंत्र पढ़ाये थे वही पर लोग अपनों के कानूनी बन्धन में बंधे थे। चारों ओर घनघोर निराशा का वातावरण था। लोग सड़कों पर राजनीति की चर्चा करने में हिचकने लगे थे। उसी समय चौधरी चरणसिंह ने जिस बुलंदी व आत्मविश्वास के साथ विधानसभा में 23 मई 1976 को भाषण दिया, वह इतिहास की पवित्र धरोहर है।

उन्होंने कहा कि "आज लाखों आदमी आजाद देश की जेलों में पड़े हुये हैं। आज प्रजातंत्र का दम निकला जा रहा है दूसरी ओर एक लाख से ज्यादा आदमी जेल में है वे किस तरह जेल में डाले गये हैं? महीनों उनके परिवार वालों को यह मालूम नहीं हो पाया कि वे कहाँ बन्द किये गये हैं? दो महीने तक उनके अजीजो उनके बच्चों उनके घर वालों को मुलाकात का मौका नहीं दिया गया बल्कि

यह भी नहीं बतलाया गया कि क्या जुर्म उनसे हुआ है? इस बार जरूर मेरा पाप था कि इदिंरागांधी से हम लोग इस्तीफा माँग रहे थे क्योंकि हाई कोर्ट में आप हार गई हैं इसलिये इतनी बड़ी प्राईम मिनिस्टर को यह शोभा देता है कि वह इस्तीफा दे। जून माह में मेरे दिये हुये बयान दिल्ली के कुछ अखबारों मे प्रकाशित हुये। मैं जानने का बहुत प्रयास करता हूँ तो मैंने इन वक्तव्यों को ही अपना जुर्म पाता हूँ, खैर मेरा यह जुर्म हो सकता है लेकिन सैकड़ों हजारों लोग है जिन बेचारों ने कोई बयान नहीं दिया फिर भी उन्हें जेलों में डाल दिया। नजरबंदी का क्या कारण है? गिरफ्तारी के क्या कारण हैं? यह उनको नहीं बताया गया। इससे ज्यादा तानाशाही, स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता इतिहास में नहीं मिलेगी। दूसरी बात जो हर आदमी को खटकेगी यह है कि सारे मौलिक अधिकार जो कि एक नागरिक के होते हैं सब निलम्बित हैं। अब पंजाब जाने का अधिकार या बंगाल जाने का अधिकार या किसी तरह का व्यापार करने का अधिकार, सभा करने का अधिकार, बोलने का अधिकार, जोकि एक व्यक्ति की स्वतन्त्रताएं होती हैं वह सभी ले ली गई हैं। अध्यक्ष महोदय पुलिस को कितने अधिकार हैं। सारे अधिकार उनको दे दिये गये हैं। यदि आपको नागरिकता के सारे अधिकार लेने ही थे और व्यक्तिगत आजादी को खत्म करना ही था तो सत्ता अपने हाथ में ही रखनी चाहिये थी। लेकिन ऐसा नहीं किया गया। आज बड़े से बड़ा संगीन मामला गृहमंत्री, मुख्य मंत्री व प्रधानमंत्री से कह लीजिये लेकिन कोई सुनवाई नही है। किसी भी सब इन्सपेक्टर या पुलिस वाले को सजा नहीं मिलेगी क्योंकि सरकार उन्हीं के बल पर चल रही है। देश के राजनैतिक बन्दियों के साथ जो वर्ताव हुआ वह अच्छा नहीं था। आपके और हमारे दृष्टिकोण में अन्तर हो सकता है लेकिन यह क्या कि जो आपसे मतभेद रखते हैं वह देशभक्त नहीं हो सकते? वे देश के दुश्मनों से मिले हुये हैं।" उनके कहने का अर्थ यही था कि विरोधी भी देशभक्त हैं तथा प्रजातंत्र में पृथक् विचार रखना मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है। चौधरी साहब ने अपने भाषण में अकारण गिरफ्तारी, जजों की नियुक्ति, वरिष्ठ जजों का नम्बर काटकर कनिष्ठ को मुख्य न्यायाधीश तथा सरकार के विरूद्ध फैसला देने वाले जजों के उत्पीडन का मामला उठाया। रेडियों से सिर्फ सरकार का प्रचार होता है। अखबारों पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। अग्रेंजों के जमाने में भी ऐसा प्रतिबन्ध नहीं था जैसा आज है। चौधरी चरणसिंह ने टाटा-बिरला की बढ़ती सम्पत्ति, मीसा कानून का दुरूपयोग, संचार

साधनों पर एकपक्षीय प्रचार तथा देश की बिगड़ी दशा पर विस्तार के साथ भाषण देते हुये अन्त में कहा कि—

"ठन्डे दिमाग से सोचना चाहिये कि हमारे देश में क्या हो रहा है? यह देश किसी के बाप दादों का नहीं है किसी एक के परिवार का नहीं है यह सबका है साठ करोड़ लोगों का है। अब जो हो रहा है आप सबको क्यों नहीं अखरता है? व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिये गांधी जी ने कितना कहा है लेकिन आप लोग आवाज ही नहीं उठा सकते हैं। क्या चीज आड़े आ रही है?"

चौधरी साहब ने प्रेस को प्रजातंत्र का प्रमुख स्तम्भ माना तथा पंडित नेहरू के महत्त्वपूर्ण शब्दों को बताते हुये अपना भाषण समाप्त किया। सन् 1936 में पंडित नेहरू ने कहा था कि—

"साथियों मनोविज्ञान में रुचि होने के कारण मैंने नैतिक ओर बौद्धिक पतन की प्रक्रिया को गौर से देखा है और पहले से अधिक महसूस किया है कि किस प्रकार निरंकुश सत्ता किसी को भ्रष्ट करती है, पतित करती है और असभ्य बनाती है। जो सरकार फौजदारी कानून और उसी प्रकार के अन्य कानूनों पर निर्भर रहती है, प्रेस और साहित्य का दमन करती है बिना, मुकदमा चलाये लोगों के जेल में बन्द करती है तथा इसी प्रकार की अन्य कार्यवाहियाँ करती है जैसी कह कि आज भारतवर्ष में रही हैं, तो ऐसी सरकार को सत्ता में रहने का लेशमात्र भी अधिकार नहीं रह जाता है।"

चौधरी चरणसिंह बोल उठते है कि सन् 1936 में जो पंडित जी ने कहा था वह आज के हालात पर ठीक उतरता है। इतना मैं अपने अपने दोस्तों से कहूंगा कि वे अपना दिल टटोले देश की बात सोंचे।

चौधरी को इस भाषण का व्यापक असर हुआ। शास्त्रों में कहा गया है कि जो अन्याय व दमन के सामने घुटने टेक देता है उसकी आत्मा सदा के लिये निर्बल हो जाती है। एक प्रसिद्ध विचारक स्टेट मार्डन ने कहा है कि जो तुच्छ विचारों का दास है वह अग्रणी नेता नहीं बन सकता। जीवन में केवल वे ही महान बनते हैं जो बराबर संघर्ष करने की क्षमता रखतें हैं। वास्तव में जब तक मानव स्वार्थ से ऊपर नहीं उठता उसके हाथ में आई शक्ति जीवन का विकास नहीं विनाश ही करती है। प्रजातंत्र का केवल इतना ही अर्थ है कि असली स्वामी जनता है तथा

सरकार उनकी सेवक है। प्रजातंत्र में व्यक्ति की स्वतन्त्रता को बहुत महत्त्व दिया जाता है। राज्य को तभी हस्तक्षेप करना चाहिये तब स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता बनने लगे तथा दूसरे के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होने लगे। शासन जितना कम हो उतना ही शुभ है। जिस प्रकार थोड़ी चर्बी शरीर की सुरक्षा करती है अधिक चर्बी आत्मघाती बन जाती है ठीक उसी प्रकार थोड़ा शासन सुख, सुरक्षा व सम्पन्नता लाता है अधिक शासन अभिशाप बन जाता है। अधिक शासन शोषण, शठता व स्वार्थपरता बन जाता है। व्यक्ति जब अपना पूरी गरिमा में खिलता है तो अपने भाग्य का विधाता बनता है जब शासन का शिंकजा पूरी तरह कस जाता है तो व्यक्ति एक मशीन से ज्यादा नहीं रह जाता है। थोड़ा बन्धन अनुशासन है अधिक बन्धन अपशकुन है, अभिशाप हैं। चौधरी चरणसिंह आदमी की आत्मा की गरिमा के सबसे बड़े हितैषी थे।

□■□

अध्याय 4

ग्रामीण भारत के सच्चे हितैषी चरणसिंह

चौधरी चरणसिंह ने गाँव में जन्म लिया। वे एक छोटे किसान के पुत्र थे। उन्होंने गाँव व किसानों के हितों की सुरक्षा के लिये आजीवन संघर्ष किया। उनका हर शब्द ग्रामीण भारत के उत्थान की भावना उजागर करता है। उनका अर्थशास्त्र ग्राम उत्थान व कुटीर उद्योगों के विकास का अर्थशास्त्र है। उनका पूरा राजनैतिक जीवन गाँवों के हित में शहरी शोषण के विरूद्ध संग्राम का इतिहास है। जो चलता है वही पहुँचता है जो संघर्ष करता है वहीं विजय उत्सव मनाता है। उनकी मान्यता थी कि किसान ही यथार्थ में जन समाज के प्रतीक हैं। किसान किसी भी राष्ट्र का प्रमुख आधार है, राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का प्रमुख सूत्र है। भारत शहरों में नहीं गाँवो में निवास करता हैं। वास्तव में उनके अनुसार यदि गाँव नीचे गिरते हैं तो देश नीचे गिरता है यदि गाँव ऊपर उठते हैं तो देश उपर उठता है। जिस देश में पूंजीपतियों की पूँजी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही हो वहाँ पर केवल दो प्रकार के आदमी रहेंगे। एक वे जिनके पास पेट है पर रोटी नहीं है दूसरे वे जिनके पास रोटी तो है पेट नहीं है अर्थात् पेट रोगग्रस्त है। अगर एक भी आदमी भूखा सोता है तो पूरा देश ही देशद्रोही बन जाता है। पेट की भूख किसी नियम व अनुशासन को नहीं मानती। पेट की भूख किसी धर्म को नहीं मानती। यदि गाँव गरीब रहते हैं तो देश व धर्म दोनों को खतरा पैदा होता है। यदि किसान सम्पन्न होता है तो उसके साथ शहरी उद्योगों का भी विकास होता है। किसान की क्रय शक्ति बढ़ने का लाभ सभी को मिलता है।

चौधरी चरणसिंह ने अपना बचपन किसानों के बीच रहकर बिताया था। उन्होंने कहा था कि—

"मेरे संस्कार उस गरीब किसान परिवार के संस्कार हैं जो धूल और कीचड़ के बीच एक छप्परनुमा झोपड़ी में रहता है। मैंने अपना बचपन उन किसानों के बीच बिताया है जो खेतों में नगें बदन अपना पसीना बहाते हैं।"

इन शब्दों से यही उजागर होता है कि किसान के लिये उनके ह्रदय में सम्मान था तथा वे उसके कठिनाई भरे जीवन को अपनी आंख से देख चुके थे। किसान प्रकृति के साथ खेलता है उसके साथ संघर्ष करता है। किसान के धैर्य की रोज परीक्षा होती है। उसमें दृढ़ता, आत्मविश्वास व सहनशीलता के गुण अपने आप विद्यमान हो जाते हैं। आकाश की ओलावृष्टि उसकी सहनशीलता की परीक्षा लेती

है। आंधी व तूफान उसके धैर्य की परख करते हैं। सूखा व बाढ़ उसके भीतर तूफान खड़ा करना चाहते हैं परन्तु इन सबके बीच किसान असहाय खड़ा रहता है। चौधरी चरणसिंह सत्कर्मी थे। सत्कर्म वही है जो श्रेष्ठ पुरूषों के आचरण के अनुकूल हैं। सुख देने वाला है तथा कीर्ति को बढ़ाने वाला है। तुच्छ हृदय की दुर्बलता त्यागकर अपना कर्त्तव्य पालन ही जीवन का सन्देश है। मोह महत्त्व सब अनार्यों की बाते हैं। अतः चौधरी चरणसिंह गीता के अर्थों में भी आर्य थे। अपने सत्कर्मों से उन्होंने आजीवन अपनी कीर्ति बढ़ाई तथा श्रेष्ठ पुरूषों के बताये नैतिकता, चरित्र, ईमानदारी व आर्य आस्था के मार्ग पर अकम्प होकर चले। वे आजीवन किसान के शुभचिंतक ही नहीं रहे वरन् उसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। वे किसान के दिशा निर्देशक थे जिन्होंने किसान को सचेत करते हुये कहा था कि उसकी एक आंख खेत की मैड पर होनी चाहिये और दूसरी आंख दिल्ली की राजगद्दी पर। महात्मा गांधी ने कहा था कि उनका सपना तभी पूरा होगा जब भारत का प्रधानमंत्री किसान तथा राष्ट्रपति कोई हरिजन बनेगा।

चौधरी चरणसिंह के सपनों का असली भारत अपना खोया गौरव तभी प्राप्त कर सकेगा जब इस देश में जातिवाद का दुर्ग ध्वस्त होगा, धर्मनिर्पेक्षता का महत्त्व समझा जायेगा तथा देश का कल्याण किसान के भाग्य से जुड़ा होगा। वे उच्च स्वर में उच्चार करते पाये जाते हैं कि किसान के उत्थान पर ही देश का कल्याण निर्भर है। देश की गरीबी का उन्मूलन कृषि की समृद्धि के बिना नहीं हो सकता। देश की अर्थव्यवस्था का उत्कर्ष उन्नत कृषि पर निर्भर है। कृषि की उपेक्षा वास्तव में भारत के भाग्य की उपेक्षा है, गाँवों की उपेक्षा भारत के गौरव की उपेक्षा है। ग्रामीण भारत ही उनका असली भारत है। देश की समृद्धि का मार्ग गाँवों के खेत खलिहान के अतिरिक्त अन्य जगहों से नहीं गुजरता है। गाँव सम्पन्न होंगे तो देश सम्पन्न होगा। गाँव पतन की ओर खिसक जायेंगे तो देश पतन के गर्त में गिर जायेगा। गरीबी से तभी बचा जा सकता है जब खलिहान व खेत अन्न से भरे होगे। किसान की कृय शक्ति बढ़ने का लाभ शहरों को निश्चित रूप से मिलेगा। किसान के पास संग्रह शक्ति नहीं होती। उसे भविष्य की चिन्ता नहीं होती। वह अक्सर कहता हुआ सुना जाता है कि जब पुत्र कपूत हो तो धन का संचय बेकार है क्योंकि वह थोड़े ही दिन में संचित पूँजी को ठिकाने पर लगा देगा। यदि पूत सपूत है तो भी धन संचय बेकार है क्येंकि सपूत अपनी तिजोरी अपने मस्तिष्क में साथ लेकर

चलता है। वह खुद अपना तथा अपने परिवार के पालन में समर्थ होगा। जो बिना सहारा मांगे अपने बल अपने पैरों पर खड़ा होता है उसके जीवन में बेहद निखार आता है और जो बाप दादों की पूंजी पर पलते हैं वे भीतर से सदा कमजोर, कायर तथा पैरों व प्राणों मे कम्पन लिये अपना जीवन जीते हैं। एक विचारक ने सही कहा था कि सत्पुरूष अपने लिये संग्रह नहीं करते वे दूसरों के लिये जीते हैं। यह जीवन का महत्त्वपूर्ण नियम है कि जिसके जीवन में त्याग नहीं है वह अग्रणी नेता नहीं बन सकता जिसके जीवन में चुनौती नहीं है वह सबल नहीं बन सकता। आवश्यकता से अधिक धन सग्रंह आत्मा पर बोझ बन जाता है। अति सदैव वर्जित है। धन का अभाव आदमी को दीन बनाता है धन की अधिकता आदमी को आत्मा से दुर्बल बना देती है। चौधरी चरणसिंह ऐसी अर्थव्यवस्था चाहते थे जिसमें कोई भी बच्चा भूखे पेट न सोये तथा किसी भी परिवार को अगले दिन की रोटी की चिन्ता न करनी पड़े तथा कुपोषण किसी मानव की भविष्य की क्षमताओं के मार्ग में अवरोध बनकर खड़ा न हो। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "यदि एक भी बच्चा भूखा सोता है तो पूरा देश ही देशद्रोही है।" वास्तव में हर मानव अगणित सम्भावनाओं को लेकर पैदा होता है तथा उसके शरीर के लिये यदि सन्तुलित आहार नहीं मिलेगा तो वह बीज रूप में ही नष्ट हो जायेगा।

नेतृत्व का दायित्व है कि वह देश को अति की आंधियों से् बचाये तथा किसी भी नागरिक की रोटी, कपड़ा व मकान की मूलभूत आवश्यकताओं के कारण चिंता में डूबने से बचाये। यह तभी सम्भव होगा जब देश गांधी जी के बताये मार्ग पर चलेगा। चौधरी चरणसिंह ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "**यदि देश को बचाना है तो गाँधीवादी दृष्टिकोण का अनुसरण करना चाहिये तथा गांधी जी की नीतियों पर चलकर ही हम देश को समृद्धि के रास्ते पर ले जा सकते हैं उन्होंने जीवन भर इसी दिशा में संघर्ष किया।**" वास्तव में भूखा पेट नैतिकता के उपदेश नहीं सुनता। भूखा पेट धर्म की बातों को कपोल कल्पना मानता है। भूखा पेट पवित्र प्रवचनों की अनदेखी करता है इसी कारण वे चेतावनी भरे स्वर में बोल उठते हैं कि "**भूखे लोग अधिक दिनों तक सिद्धान्तों की प्रतीक्षा नहीं करेंगे। अगर देश ने तुरन्त इस ओर ध्यान नहीं दिया तो बहुत बड़ी उथल पुथल होगी।**" यह उथल पुथल केवल सत्ता की भागीदारी तक सीमित रहने वाली नहीं है। गरीब की भूख कभी कभी सारे शास्त्रों की होली जलाने को तत्पर हो जाती है। जिन देशों में गरीबों ने क्रान्ति करके सत्ता परिवर्तन

किया वहाँ धर्म का भी लोप होने लगा। भूखा पेट महापुरूषों पर अवश्य ही उंगली उठाता है। अतः उन्होंने इस विषय पर जो भी कहा वह केवल उपदेश नहीं एक चेतावनी है। जीवन के यथार्थ का उद्घोष है। देश की प्रगति का अनुमान पृथ्वी से लेकर चाँद तक की उड़ान से नहीं लगाया जाना चाहिये। साधारण लोगों का जीवन इन बातों से प्रभावित नहीं होता। देश में कार, स्कूटर व अन्य सुख सुविधा के साधन थोड़े लोगों की पहुँच के भीतर होते हें इसी कारण वे बोल उठते हैं कि देश की प्रगति के लिये रोटी, कपड़ा व मकान की उपलब्धि देखनी होगी। समाज के सबसे बड़े कृषक व मजदूर वर्ग के लिये स्वास्थय व शिक्षा सुविधाओं की उपलब्धि देखनी होगी। असन्तोष का ज्वालामुखी भीतर ही भीतर सुलग रहा है और यदि यह असन्तोष सीमा पार कर गया तो देश की शान्ति व चैन दोनों को ध्वस्त कर देगा। इसी कारण देश का भाग्य गांव से जुड़ा है तथा उसका समस्त विकास ग्रामीण भारत के उत्थान में निहित है। चलना तभी सार्थक है जब कही पहुँचना हो। मार्ग तभी सही है जब वह समाधान दे। धर्म तभी सफल है जब वह धन्यता की वर्षा करे। अतः चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि सही साधनों व तरीकों के बिना मंजिल हासिल नहीं की जा सकती। जिसने गरीबी नहीं देखी वह गरीबी तथा जिसने भूख नहीं देखी वह भूख नहीं मिटा सकता।

किसान का बेटा उनकी समस्याओं को अच्छी तरह समझ सकता है तथा मिटा सकता है। किसान अपने एक बच्चे को कृषि कार्य में लगाये तथा अन्य को शहरों में अन्य पेशों में लगाये। इसी से कृषि पर भार कम होगा। सरकार का दायित्व है कि वह किसानों के बेटों को सार्वजनिक नियोजनों में उनके पिछड़ेपन के आधार पर आरक्षण दे। उन्हें राज्य के प्रशासन मे उतनी भागीदारी अभी भी नहीं मिल पाई है जितनी मिलनी चाहिये थी। यह गलती आज भी दोहराई जा रही है। अतः वे हर अवसर पर गाँव व किसान के उत्थान के गीत गाते मिलते हैं।

हीरे की परख के लिये जौहरी की आंख चाहिये। इसी तरह किसान की समस्याओं की समझ किसान के बेटे के पास ही होती है। शहरी वातावरण में पला अधिकारी अपनी ही जड़ों को सींचता है अपने ही वर्ग के हितों की रक्षा करता है। शहर में पैदा हुये तथा पाले-पौसे व्यक्ति का जीवन-दर्शन, ग्रामीण परिवेश में पाले व्यक्ति से पूर्ण रूप से पृथक होता है उनकी विचारधारा भिन्न ही नहीं अक्सर विपरीत होती है। वे बोल उठते हैं कि "जिसकी सोच वस्तुओं के प्रति किसान जैसा होती है वही उनकी समस्याओं का समाधान दे सकता है। शहर का आदमी सोचता

अधिक है समझता कम है गाँव का आदमी सोचता कम है समझता ज्यादा है। शहरी आदमी के जीवन में गति होती है गाँव के आदमी के जीवन में गहराई होती है। शहरी आदमी मशीन की तरह गणना करता है गाँव का आदमी मौसम की तरह धीरे धीरे बदलता है। शहरी आदमी रात में ताजा लगता है सुबह थका उठता है गाँव का आदमी रात थका सोता है सुबह ताजा उठता है।" इसी कारण चौधरी सोचते थे कि सरकारी नौकरियों में किसान पुत्रों को प्रवेश दिलाया जाये तभी किसानों की अंधेरी रात समाप्त होगी। उन्होंने कहा था कि—

"किसान वर्ग से भरे इस देश मे उस व्यक्ति जिसने किसान जीवन के दुःखद अनुभवों को भोगा है और जिसे देहात क्षेत्र के वातावरण के अनुभव का श्रेय प्राप्त है, के अधिक सफल प्रशासक तथा कानून का व्याख्या होने की सम्भावना है, क्योंकि अन्यों की अपेक्षा, उसके जीवन मूल्य उन लोगों के अधिक अनुरूप होते हैं।"

शहरी लोगों ने योजना तो बना डाली परन्तु उसका परिणाम दुखद ही रहा। यही कारण था कि भारतीय गणतंत्र में जिन लोगों ने पंचवर्षीय योजनाओं का ढाँचा तैयार किया वे कृषि के महत्त्व को भूल गये अतः चौ० साहब की नजर में उनका अपराध यही था कि उन्होंने कृषि की उपेक्षा कर दी जिसका परिणाम पूरे देश को भुगतना पड़ रहा है।

चौ० चरणसिंह गरीबों के पक्षधर थे, उन्होंने स्वयं कहा था कि—

"यह बड़े दुख की बात है कि हमारे देश में भूखे बच्चे की आँख में केवल निराशा ही झलकती हैं।"

इन शब्दों में यही प्रकट होता है कि वे गरीबों के शुभचितंक थे तथा उनके अनुसार गरीबी वही मिटा सकता है जिसने गरीबी देखी।

"गाँव व गरीब का जिस दिन उत्थान होगा।
मात्र उसी दिन यह देश पुनः महान होगा।
गाँव के खेत व खलिहान होंगे जब समृद्ध
यह अवरुद्ध कालचक्र उस दिन गतिमान, होगा।"

एक विचारक ने सही कहा था कि महान वही है जिसके माध्यम से लोगों के हृदयों का सम्मेलन होता है। चौधरी साहब ने असंख्य ग्रामीणों को एक मंच पर जोड़ा जो हृदय से उनके साथ थें इसी कारण वे सच्चे अर्थों में युगपुरूष थे। उनके ग्रामीण परिवेश में पले लोगों का इससे बड़ा गुणगान और क्या हो सकता है कि उन्होंने साफ शब्दों में कह दिया कि—

"केवल वो ऑफिसर, जो किसानों द्वारा लपेटे जाने वाले कपड़े में पले हैं, किसान के जीवन के अंग बन सकते हैं और उनके पास रात ठहर सकते हैं। एक ग्रामीण किसान का दिल वही जीत सकता है जिसकी प्रतिक्रिया वस्तुओं के प्रति किसान के समान होती है, कोई दूसरा नहीं।"

जो पला है पेडों की छाया में
जो खादी की मोटी चादर
में लपेट पाला पोसा है।
केवल उस ग्रामीण परिवेश
में पले अधिकारी पर
मुझे भरोसा है।
यह थी उनकी अपनों पर गहरी
आस्था, यह था उनका ग्रामीण
परिवेश में पले लोगों पर
उनका अटूट विश्वास।
चरणसिंह के साथ ही
शुरु होता है एक नया किसान युग
एक नया किसान इतिहास।

उनके लिये देश की हर समस्या किसान से जुड़ी समस्या थी और देश का हर विकास देहात से जुड़ा विकास था। देश का हर उत्थान खलिहान में जुड़ा उत्थान था। यथार्थ में किसान ही जन समाज के प्रतीक हैं। किसान पुत्रों के लिये सरकारी नौकरियों में पचास प्रतिशत आरक्षण की वकालत करते हुये उन्होंने कहा था कि—

"देहात तथा किसान समाज, जो हमारे पूर्वजों के बलवान स्वास्थ्य का प्रतीक है और राष्ट्र की युवा शक्ति को जन्म देने वाला है, उसको किसी बहाने के आधार पर देश के प्रशासन में समुचित एवं अन्य शक्ति और अधिकारों से वंचित कर देना एक बहुत बड़ा अपराध मानता हूँ।"

इन शब्दों में झलकता है उनका ग्रामीण समाज के लिये अनन्त विश्वास अखण्ड प्रेम। वास्तव में वे ग्रामीण भारत के सच्चे हितैषी थे।

□■□

अध्याय 5

जातिवाद के घनघोर विरोधी चरणसिंह

चौधरी चरणसिंह पर दो आरोप लगाये गये प्रथम यह कि वे बड़े किसानों के हितैषी हैं तथा दूसरा यह कि उन्होंने राजनीति में जातिवाद को बढ़ावा दिया। दोनों ही आरोप मिथ्या न मनगढ़न्त हैं क्योंकि चौधरी साहब ने अपनी वाणी व कर्म से ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि वे किसानों को भी वर्गों में बांटते हैं जब भी उन्होंने बात उठाई पूरे किसान वर्ग की आवाज उनके मुख से बुलन्द होती थी। उन्होंने जाति प्रथा को भारत की लम्बी दासता का मुख्य कारण बताया। जाति प्रथा समाज का कोढ़ है जिसने पूरे समाज को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया था अतः भारत के लोग एकजुट होकर शत्रु के विरूद्ध नहीं लड़ सके और उन्हें पराजय का मुँह देखना पड़ा। जिस देश में विभिन्न जातियों में द्वेषभावना रहती है तथा उनके हित आपस में टकराते रहते हैं वहा पर राष्ट्रीयता की भावना उजागर नहीं हो पाती। एक दूसरे से घृणा करके प्रत्येक जाति पतन की ओर अग्रसर होती है जो घर लड़ता है वह घर गिरता है जो घर प्रेम व सद्भाव के वातावरण में पलता है वह घर उभरता है। जाति प्रथा प्रत्येक जाति को भीतर से खोखला करती है तथा जहाँ विघटनकारी शक्तियां सक्रिय होती हैं वहाँ राजनीतिक एकता स्थापित नहीं हो पाती है। जब बाहरी आक्रमण होता है तो पूरा देश वीरासन में खड़ा नहीं हो पाता है और उसका परिणाम पराधीनता के रूप में भुगतना पड़ता है। भारत के दुर्भाग्य की कहानी का एक बहुत बड़ा भाग जाति प्रथा की दोषपूर्ण प्रणाली से जुड़ा है। भाई चारे की भावना के बिना राष्ट्रीयता की जड़े नहीं जमती तथा जहां हृदयों में दरार होती है तथा राष्ट्रीय पर्व सभी जातियों के सम्मेलन नहीं बनते तब तक देशभक्ति एक थोथी कल्पना बनकर रहती है। देश की जड़े तभी खोखली होती है जब देश में रहने वाले कुछ लोग इस देश का अन्न खाकर विदेशों के गीत गाते हैं अथवा इस देश में रहने वाला एक वर्ग अपने को अलग थलग मानकर देश की समस्याओं की अनदेखी करता है। जाति प्रथा के विकराल रूप के कारण ही देश के न्यायालयों में मुकदमों के अम्बार लगे पड़े हैं। स्वार्थी राजनेताओं के कारण जातिवाद ने और उग्र रुप धारण कर लिया था तथा घृणा का धन्धा करके लोग ऊंचे पदों पर पहुँचने की योजना से कटुता पैदा होती है। समय समय पर इस दिशा में जिन जिन महापुरूषों ने सुधार करने का प्रयास किया उनके मार्ग में अवरोध पैदा किये गये

तथा जाति प्रथा चट्टान की तरह मजबूत होती चली गई और महापुरूषों के भाव फूल की तरह इस चट्टान से टकराकर बिखर गये। अतंरिक्ष की ऊँची उड़ान भरने वाली सभ्यता मानव के सीनों में लगे घाव ठीक करने में असमर्थ प्रतीत होती है। मानव से मानव को बांटने वाली सबसे फौलादी दीवार जातिवाद है। इसी कारण चौधरी चरणसिंह ने कहा था कि "जातिवाद समाज का कलंक है तथा जाति प्रथा ही हमारी राजनीतिक दासता का मूल कारण है। जाति प्रथा भारतीय समाज को प्रत्यक्ष रूप में टुकड़ो टुकड़ों में विभाजित कर रही है जो आर्थिक विकास में बहुत बड़ी बाधा बन रही है अतः इस बुराई को जड़ से समाप्त करना होगा। जाति प्रथा के कारण ही भारत शताब्दियों तक राजनीतिक रूप से गुलाम रहा है।" वे आगे कहते हैं कि "जाति प्रथा में जकड़ा देश कभी भी शक्तिशाली नहीं हो सकता। इस तरह के उन्नत विचार रखने वाले मनीषी की जातिवादी कहकर आलोचना करना मानसिक दिवालियापन तथा सामाजिक अपराध है।" सूर्य बहुत देर मिथ्या प्रचार के बादलों से नहीं ढका रहता। चौधरी चरणसिंह किसान वर्ग के तो सच्चे हितैषी थे परन्तु जातिवाद के प्रबल विरोधी थे। यह चौधरी ही थे जिन्होंने कहा था कि सरकारी नौकरी को दरवाजे केवल उनके लिये खुले जो दूसरी जातियों में विवाह करने को तैयार हो। यह थी जीवन के राजपथ पर उनकी व्यापक दृष्टि।

□■□

अध्याय 6

गान्धी जी की तीन भूलें गिनाने वाले चौधरी चरणसिंह

गाँधी जी ने कहा था कि जब तक एक भी आंख में आंसू है मेरा संघर्ष समाप्त नहीं होगा। उन्होंने यह भी कहा था कि भारत गाँवों में बसता है। गान्धी जी उस सभ्यता के विरोधी थे जिसमें पचास प्रतिशत साधन युद्ध सामग्री की खरीद पर खर्च होते हो, चालीस प्रतिशत सौन्दर्य प्रसाधन पर व्यय होते हो और केवल दस प्रतिशत मानव कल्याण के लिये बचते हो। वे सादा जीवन उच्च विचार तथा कुटीर उद्योगों का जाल बिछाने के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि देश के नेता आजादी के बाद गाँवों के झोपड़ों में सादगी से रहें ताकि वे जीवन की मूलभूत समस्याओं से अवगत होकर उसका समाधान दे सकें। गान्धी जी के अनुसार श्रेष्ठ व शुभ को बचाना ही जीवन की असली क्रान्ति है। विदेशी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिये परम्परागत सरलता, समता, सजहता सादगी व सत्यनिष्ठा के मूल्यों को सर्वोपरि महत्त्व देना होगा। वे कहा करते थे कि उन्हें छोटे से छोटे व्यक्ति को साथ लेकर चलना है और उन्हें यह अनुभव कराना है कि भारत उनका देश है। गान्धी जी के जीवन, उनके दर्शन उनकी ग्राम उत्थान की भावना से चौधरी साहब अभिभूत थे। परन्तु सरदार पटेल को वे नेहरू से कुशल प्रशासक मानते थे और जब देश के प्रधानमंत्री बनाने का समय आया तो गान्धी जी नेहरू की ओर झुक गये और सरदार पटेल प्रधानमंत्री नहीं बन पाये यह चौधरी साहब को आजीवन अखरता रहा। सरदार पटेल ने अपने जीवनकाल में एक बार कहा था कि पूरे देश को आज जान लेने दो कि मैं नेहरू जी अर्थ नीति का समर्थन नहीं करता। स्वयं गान्धी जी ने कहा था कि आजादी के बाद मैं एक खोटा सिक्का हो गया हूँ मेरी कोई नहीं सुनता। पहले मैं सो वर्ष जीना चाहता था अब मेरी इच्छा और अधिक जीने की नहीं है। चौधरी चरणसिंह कहा करते थे कि देश का विभाजन स्वीकार करना तथा सरदार पटेल के स्थान पर नेहरू को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर आसीन करना गान्धी जी की दो भूले थी जिन्हें वे बताते थे तीसरी भूल वे बताते नहीं थे और वह तीसरी भूल बुढ़ापे में गान्धी जी की तंत्र साधनो से जुड़ी थी जिसकी खुली चर्चा वे नहीं करना चाहते थे। गान्धी जी ने तंत्र साधना करने से पूर्व अपने कुछ शिष्यों को पत्र लिखे थे जिसमें एक पत्र कृपलानी जी को भी लिखा था। उसके उत्तर में कृपलानी ने कहा था कि बापू आप साधना करें। साधना तो क्या यदि में

आपको अपनी आँखों से व्यभिचार करते भी देख लूंगा तो मुझे अपनी आँखों पर अविश्वास होगा आप पर नहीं होगा आप निःसंकोच साधना में उतरें। गान्धी जी ने यह साधना की और चौधरी साहब यह जानते थे परन्तु गान्धी जी के प्रति अपार सम्मान के कारण इसे किसी को बताते नहीं थे। चौधरी साहब की निष्ठा वेदों में थी, जहां ध्यान के समान पवित्र करने वाला दूसरा कुछ भी नहीं माना गया था, जहाँ कहा गया था कि जो वीर है, बलिष्ठ है एवम् तीव्र बुद्धि वाला है वहीं लक्ष्य प्राप्त करता है। वेदों में जो दुख, अज्ञान, अविद्या व अभाव को दूर करने के उपाय बताये गये है उनमें तंत्र के लिये कोई स्थान नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश तंत्र साधना का विरोधी है। इस प्रकार चौधरी चरणसिंह गान्धी जी की भी तीन भूलें उजागर करने में नहीं हिचकते थे।

□■□

अध्याय 7

जनसंख्या विस्फोट एक गम्भीर समस्या

भारत के दुर्भाग्य की कहानी जहाँ एक और संसार को माया मानने के सिद्धान्त के कारण है वही दूसरी ओर जनसंख्या की भीषण समस्या उसके सारे प्रयासों को मिट्टी में मिलाने के लिये पर्याप्त है। हिंसा, आतंक, बेरोजगारी आदि की सभी समस्याऐं जनसंख्या की बढ़ती दर से जुड़ी हैं। एक अरब की सीमा को पार करती यह समस्या देश के लिये गम्भीर चुनौती है। जब भी इस दिशा में चेष्टा की जाती है तो या तो धर्म आड़े आ जाता है अथवा जनता का आक्रोश सरकार को बदलने में देर नहीं करता। देश की भूमि को रबड़ की तरह नहीं खींचा जा सकता। कृषि के उत्पादन की दर में वृद्धि हुई है परन्तु यह भी एक सीमा तक आकर रुक जाती है। जिस प्रकार नदी का पानी खतरे के बिन्दू पर पहुँचकर सबके लिये संकट की घड़ी लाता प्रतीत होता है उसी प्रकार जनसंख्या का सैलाब भी अशुभ व भयावह भविष्य की ओर इशारा करता है। धार्मिक मान्यता रखने वाले लोग अकसर कहते सुने जाते हैं कि प्रकृति स्वयं सन्तुलन करती है। परन्तु वही लोग बीमार होने पर अस्पताल, ओलावृष्टि होने पर अपने मकानों की छतों को मजबूत बनाते देखे जाते हैं। मानव अपने हर कर्म के लिये स्वयं उत्तरदायी है तथा सही समय पर सही निर्णय लेने पर बहुत सी समस्याओं का समाधान खोजा जा सकता है और जनसंख्या की समस्या भी उनमें से एक है। यह मानव के हाथों पैदा की हुई समस्या है तथा इसका निदान भी मानव को ही खोजना होगा।

चौधरी चरणसिंह इस दिशा में कठोर कदम उठाने के पक्षधर थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि—

"जब तक हम जन्मदर को कम नहीं कर लेते तब तक देश दुर्दशा की खाई से नहीं निकल सकता।"

इन शब्दों से यह प्रकट होता है कि देश की दुर्दशा का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या है। इस देश में करोड़ो बच्चे दोनों हाथ उठाकर नौकरी माँग रहे हैं। इस देश में कृषि भूमि आपस में इस सीमा तक बट चुकी है कि अब ज्यादातर किसान हाथ से सब्जी इत्यादि उगाकर ही अपना पेट पाल सकते हैं। जो लोग यह सोचते हैं कि यह बढ़ती जनसंख्या देश के लिये गौरव की बात है वे इस देश को रसातल में ले जाना चाहते हैं। वे यह अनुभव करने लगे थे कि बढ़ती जनसंख्या

की स्थिति हमारे लिये खतरनाक हो चुकी है तथा सरकार की पंचवर्षीय योजनाओं का कोई परिणाम दिखाई नहीं देता है। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया था कि जनसंख्या का महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपलब्ध भूमि के प्रकाश में हल किया जाना चाहिये। यह पृथ्वी कितनी जनसंख्या का भार सहन कर सकती है इस पर विचार किया जाना आज की अनिवार्य आवश्यकता हे। वे बोल उठते हैं कि—

"जनसंख्या संवृद्धि पर नियन्त्रण राष्ट्र के हित में हैं।"

वास्तव में जब भी व्यक्ति की मूढताओं व राष्ट्र के हितों में टकराव की स्थिति पैदा होती है तब व्यक्ति की मूढ़ताओं की अनदेखी किया जाना न्यायसंगत है। मनुष्य के सुखपूर्वक रहने के लिए केवल एक चारपाई ही पर्याप्त नहीं है कुछ खुला आकाश भी होना चाहिये। देश में अल्प आय वाले लोगों की जनसंख्या में वृद्धि बड़ी तेजी से हो रही है जिसके कारण मलिन बस्तियों का विस्तार हो रहा है। लाखों लोग रेलवे स्टेशनों तथा खुले आसमान के नीचे सोने को विवश हो रहे हैं।

जनसंख्या में तीव्रगति से होती वृद्धि को अनदेखी करना भविष्य के साथ खिलवाड़ करना है। यह समस्या सरकार की नहीं पूरे देश की समस्या है अतः प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह इस दिशा में विचार करे तथा देश के भाग्य के साथ अपना भाग्य जोड़कर इसकी गम्भीरता को समझे। देश इस समस्या का उत्तर नहीं समाधान चाहता है। देश को जनमानस के सक्रिय सहयोग व समर्थन के बिना कोई ठोस परिणाम निकलने वाला नहीं है। यदि जनसंख्या की दर नीचे जाती है तो देश ऊपर जाता है यदि जनसंख्या की दर ऊपर जाती है तो देश नीचे जाता है। जिस आदमी के पैर में पत्थर बंधे होते हैं वह शिखर नहीं चढ़ सकता। जिस देश पर जनसंख्या का अतिशय दबाव होता है वह उत्थान नहीं कर सकता। नैतिक व सधा हुआ आचरण व्यक्ति के उत्थान की प्राथमिक शर्त है। जनसंख्या नियन्त्रण देश के उत्थान की अनिवार्य आवश्यकता है। अब या कभी नहीं आज दीवारों पर लिखा है इसका समाधान आज ही खोजना है अन्यथा बहुत देर हो जायेगी। विज्ञान ने बहुत प्रगति की है तथा जन्मदर व मृत्युदर में बहुत बड़ा अन्तर पैदा हो गया है। यह भी जनसंख्या वृद्धि का एक कारण है। सरकार केवल नियम बना सकती है व्यवहार में लाना जनमानस का काम है। वह घोषणा व्यर्थ है जो कागजों तक सीमित रहती है। वह आदर्श व्यर्थ है जिसे व्यवहार में नहीं लाया जाता। जनसंख्या नियंत्रण के लिये लोगों की मनोवृत्ति में बदलाव लाना बेहद

जरुरी है तथा इस विषय पर प्रचार भी लाभकारी सिद्ध हो सकता है आज का युग प्रचार का युग है तथा संगठन का भी युग है। इस दिशा में उन्होंने कहा था कि जनसंख्या नियन्त्रण के लिये आवश्यक कानून का सृजन करना होगा जो प्रत्येक व्यक्ति के लिये बाध्यकारी हो तभी देश की तेजी से बढ़ती जनसंख्या को नियन्त्रित किया जा सकता है। इस दिशा में संगठित प्रयास किया जाना बेहद जरुरी है। मस्तिष्क में सरकते विचार तब तक धरती की धूल में नहीं उतारे जाते तब तक वे भीतर ही उपद्रव करते रहते हैं। जो चलता है वही पहुँचता है। वे बोल उठते हैं कि—

"आवश्यकता यह है कि सभी सम्भव उपायों को व्यवहार में लाया जाये।"

इस विषय पर गान्धी जी के उपाय संयम से ही काम नहीं चलेगा। बल पूर्वक शल्य चिकित्सा का भी सहारा लेना चाहिये। कोई भी देश गणना से नहीं श्रेष्ठता से महान बनता है। कोई भी देश बौने लोगों के बहुमत से नहीं बाहुबल व बलिदान की शक्ति से महान बनता है। पृथ्वी पर कोई भी समस्या ऐसी नहीं जिसका निदान सम्भव न हो। चौधरी चरणसिंह के सपनों को साकार करने के लिये जनसंख्या नियन्त्रण आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती तथा आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता है।

भारत की जनसंख्या सन 1856 में तेरह करोड़ छियेत्तर लाख थी जो 1930 में बढ़कर सत्ताईस करोड पचास लाख हो गई थी 1981 में 69 करोड़ हो गई थी और आज एक अरब की संख्या को पार कर गई है जो एक समस्या बनकर खड़ी है। इसका समाधान आज और अभी होना चाहिये क्योंकि इसको कुछ वर्षों तक टालना भविष्य के साथ खिलवाड़ करना होगा। हमें चौधरी साहब के इस सन्देश को जन जन तक पहुँचकर जनसंख्या पर नियन्त्रण के लिए देश व समाज को तैयार करना होगा अन्यथा हमारा देश हमारा समाज अत्याधिक पिछड़ जायेगा। चीन का उदाहरण हमारे सामने है जिसने जनसंख्या नियन्त्रण के विषय में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की हैं।

□■□

अध्याय 8

बेरोजगारों का बढ़ता असन्तोष

जिस देश की जनसंख्या अधिक हो तथा हाथ खाली हों वहां पर बड़े उद्योगों का जाल बिछाना निपट मूढ़ता है क्योंकि जिस गति से विज्ञान व तकनीक का विकास हो रहा है वह अधिकतर लोगों को बिना रोजगार छोड़कर जीवन में निराशा और अंधकार के अतिरिक्त अन्य विकल्प नहीं छोड़ेगा। यह सही है कि पुराने अस्त्रों से नये युग का युद्ध नहीं जीता जा सकता। यह भी सही है कि विज्ञान के चमत्कारों की अनदेखी नहीं की जा सकती परन्तु वास्तविक मनुष्य वही है जिसके नेत्र जीवन सत्य की परख कर लेते हैं। मानव जीवन में व्यक्ति का सुख ही अन्ततः समाज का सुख बनता है क्योंकि समाज व्यक्तियों के जोड़ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। जहाँ जनसंख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही हो वहाँ पर लघु व कुटीर उद्योगों की अनदेखी समाज के लिये अभिशाप है। भारी उद्योग ऐसे देश के सर पर पत्थर से भी भारी हो जाते हैं जहाँ लोग खाली हाथ चौराहों पर काम की खोज में खड़े मिलते हैं। स्वचालित यंत्र मानव को दूर ही रखना चाहते हैं तथा एक हजार की जगह एक ही आदमी काम संभाल लेता है। चौधरी चरणसिंह देश को शहरी करण से खिन्न हो उठते है तथा रोष भरे स्वर में बोल उठते है कि **"बढ़ती हुई बेरोजगारी और अल्प रोजगारी की समस्या ने देश की प्राणाधार शक्ति को खा लिया है।"** उनके अनुसार यह भारी उद्योगों का संकटसूचक परिणाम है।

एक बार एक विचारक ने कहा था क जो लोग रोजगार को उद्योगों से पहले रखते हैं वे लोग यह देखने के लिये जीवित रहेगें कि उन्हें न उद्योगों का लाभ मिलेगा और न रोजगार मिलेगा। चौ० चरणसिंह इस कथन से सहमत नहीं है तथा वे मानव व उसके दो हाथों के श्रम को निर्णायक मानते थे। लघु उद्योगों का जाल बिछाकर हम हर हाथ को काम देने में सफल होगे। मानव की जगह यन्त्रों का उपयोग दुर्भाग्यपूर्ण है। बड़े उद्योग केवल तभी लगाये जाने चाहिये जब लघु उद्योग किसी विशिष्ट वस्तु को बनाने में असमर्थ हो अन्यथा नहीं। देश में सड़कों, चिकित्सालयों, पुलों का निर्माण करके बेरोजगारी की समस्या को हल किया जा सकता है तथा हमारी प्रतिभा को देश छोड़कर बाहर जाने से रोका जा सकता है। एक ओर गाँव के लिये कृषि को छोड़कर दूसरा धन्धा ही नहीं बचा है दूसरी ओर गाँवों की उपज पर आधारित उद्योग शहरों में पनप रहे हैं। आज गाँवों से जूता,

मिट्टी के बर्तन बनाने, बढ़ई तथा जुलाहों से सम्बन्धित उद्योग समाप्त हो चुके हैं जिसके भयंकर परिणाम सामने आ रहे हैं। आज गरीबी व भुखमरी की समस्याएं गाँवों में जड़ जमा चुकी हैं। श्रम प्रधान उद्योगों का जाल बिछाना हर समस्या का निदान है। बेरोजगारी भत्ता देना निपट मूढ़ता है, भत्ता माँगने वालों की संख्या इतनी बढ़ जायेगी जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। उनके अनुसार देश में लगभग तीस करोड़ लोग या तो बेरोजगार है अथवा अल्प रोजगार हैं। आज कुटीर उद्योगों पर आधारित अर्थनीति ही क्रान्तिकारी कदम है जिसमें और देरी आत्मघाती है। बड़े उद्योगों से पूँजी कुछ ही हाथों में केन्द्रित हो जाती है जो दुःखदायी है। पूँजीपतियों के महल और बड़े होते जाते हैं, गरीब का झोपड़ा भी सुरक्षित नहीं रहता। गलत उद्योग नीति के कारण आधा हिन्दुस्तान आधा पेट भोजन खाकर जिन्दा है। मानव-मानव के बीच असमानता की बढ़ती खाई बड़े उद्योगों की नीति के कारण हैं और यह असन्तोष को जन्म देता है। भूखा पेट धर्म की बात नहीं सुनता। भूखा पेट अमीरों के प्रति रोष से भरा होता है और धर्म को व्यर्थ की बकवास कहकर उसकी उपेक्षा करता है। जो लोग नास्तिक होते हैं उनमे से अधिकतर लोग गरीब वर्ग के होते हैं जिनके लिये वेद वचन भी वन्दनीय नहीं होते। वे लोग धर्म को अमृत नहीं अफीम का नशा मानते हैं बड़े उद्योग जिन वस्तुओं का निर्माण करते हैं वे केवल शहर में रहने वाले लोगों के साज श्रृंगार तक सीमित होता है गाँवों में बसने वाले बहुमत का उनसे कोई हित नहीं होता।

आज के विश्व में जो भी आय सरकार को होती है उसका आधा भाग युद्ध सामग्री की खरीद तथा देश की सुरक्षा व्यवस्था सेना के रख रखाव पर खर्च होता है। लगभग चालीस प्रतिशत के सामान इत्र, क्रीम पाउडर साबुन शैम्पू अदि के निर्माण पर खर्च होता है शेष दस प्रतिशत जनता के लाभ के लिये बचता है। उसमें से भी शहरी लोगों का हित साधन किया जाता है। इस अवस्था में आर्थिक ढांचा चरमरा कर टूटने लगता है गरीबी बढ़ने लगती है देश का विकास शहरों तक सीमित रहता है। गाँवों में रहने वाले असंख्य लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जीते हैं। जब वे मरने के करीब पहुँचते हैं तब उनको पता चलता है कि वे जिन्दा थे। चौधरी चरण सिंह दुखी होकर बोल उठते हैं कि—

"बेरोजगारी का कैंसर हमारे राष्ट्र की शक्तियों को खाये जा रहा है।" इन शब्दों से यही उजागर होता है कि जब देश का नवयुवक ही हताश व निराश हो जाता है तो देश की रीढ़ ही टूट जाती है। देश का उत्थान पुराने की

समझ व नये की शक्ति के मेल से होता है। जब समाज अपने बुजुर्गों की सही परामर्श तथा नवयुवकों के बाहूबल व श्रमशक्ति के सहयोग से आगे बढ़ता है तो उसके पास भविष्य को देखने वाली पारखी आंख भी होती है तथा नवयुवकों के मजबूत हाथ व पैर भी होते हैं। बड़े उद्योगपति अपने धन को तिजोरी में बन्द कर देते हैं तथा गाँव व शहरों के बीच एक बहुत बड़ी खाई पैदा हो जाती है। जिस देश में जितने अधिक बेरोजगार होते हैं वहाँ उतनी ही अधिक गरीबी होती हैं। जब सत्ता, सुविधा के साधन, संचार साधन व सरकारी तंत्र शहरों की ओर झुके कुछ लोगों के हाथों में केन्द्रित हो जाता है तो शहर ही देश बन जाते हैं जबकि देश का भविष्य देहात से जुड़ा है। यह विकास उसी प्रकार का होता है जैसे किसी आदमी का मस्तिष्क तो ठीक हो परन्तु हाथ पैरों को लकवा मार गया हो तथा दिल के दौरे पड़ते हो। इस स्थिति में देश में जितने भी चालाक लोग हैं वे शहरों में बसने लगते हैं तथा शहरों में जो भले लोग हैं उनकी आवाज़ सुनने वाला कोई नहीं होता। चालाक लोगों के शोर में भले लोगों की आवाज दब जाती है। मनुष्य इस धरती का सबसे बड़ा फूल है। परमात्मा का सबसे बड़ा उपहार है। पत्थर चल नहीं सकता, पौधा आगे पीछे हट नहीं सकता। पशु सोच नहीं सकता। मनुष्य ही अपना भला भुरा सोच सकता है। हर मानव कि यह चाह होती है कि वह इस पृथ्वी पर सम्मानूपर्वक रहे। कोई भी मनुष्य अपने लिये दुख नहीं चुनता। हर मानव बीज की तरह बड़ा होने की सम्भावना लेकर पैदा होता है। वह सफलता व पहचान बनाकर ही संसार से विदा होना चाहता है। हर नवयुवक के मन में कुछ सपने होते हैं तथा इन सपनों को पूरा करने की आशा में वह जीता है। जब जीवन के यथार्थ से उसकी मुठभेड़ होती है तो यह सपनें ध्वस्त होते हैं और वह निराशा व विषाद से भर जाता हैं। चौधरी चरणसिंह इस स्थिति को प्रगट करते हुये कहते हैं कि—

"मनुष्य की आयु एक समय में ऐसी होती है कि जब वह अत्यधिक महत्वाकांक्षी होता है। कुछ न कुछ करने के लिये सबसे ज्यादा लालायित रहता है और अपने जीवन को सर्वोत्तम आदर्श की अवस्था में बिताना चाहता है। ऐसे मनुष्य को बेरोजगार रहने से घोर अपमान सहना पड़ता है और वह अपने जीवन में असफल रह जाता है। यह स्थिति और कुछ नहीं है। यह बेरोजगारों में केवल फूट व असन्तोष के बीज होती है।"

चौधरी साहब जीवन के मनोविज्ञान के बहुत बड़े पारखी थे। मनुष्य की प्राणशक्ति को यदि किसी काम या सृजन में नहीं लगाया गया तो यह विध्वंस में लग जाती है। आज छात्र बसों के सीसे तोड़ रहे हैं या रेलों पर पत्थर फेंक रहे हैं, विद्यालयों में हड़ताल व आन्दोलन कर रहे हैं, उसका केवल मात्र कारण यही है कि उन्हें अपना भविष्य अंधकार से भरा लगता है तथा वे उस व्यवस्था को तोड़ना चाहते हैं जिसके कारण यह स्थिति पैदा हुई। असन्तोष का ज्वालामुखी भीतर ही भीतर सुलगता रहता है तथा एक दिन भीषण विस्फोट होता है। भूखा पेट मर्यादा नहीं जानता निराशा से भरा हुआ मन नीति नियम नहीं मानता। चिन्ता में डूबा हृदय अच्छा बुरा नहीं पहचानता। चौधरी चरणसिंह यथार्थवादी थे। उन्हें आंकाशी सपने पसन्द नहीं थे। वे बहुत बड़े वायदों पर भरोसा नहीं करते थे। आज की बीमारी का अभी इलाज खोजना है अन्यथा बीमारी बढ़कर विकराल रूप ले लेती है। सुख बहुत आस-पास है समाधान भी दूर नहीं है परन्तु सत्ता पर बैठे लोगों की नजरें विदेशों में चल रहे उद्योगों पर लगी हैं जबकि हर देश की समस्यायें अलग हैं। भारत की हर समस्या कृषि की अनदेखी तथा बेरोजगारी से जुड़ी है। चौधरी साहब कहते हैं कि—

"यदि अपने देश में सभी कामगारों को रोजगार मिल जाता है तो गरीबी अपने आप ही मिट जायेगी।"

वास्तव में सौ योजन की बात व्यर्थ है। एक एक कदम चलकर यात्रा पूरी हो जाती है। प्रत्येक यात्रा पहले पग से ही शुरू होती है। जो लोग मंजिल पर पहुँचने की बहुत जल्दबाजी करते हैं वे अक्सर रास्ते में ही दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। आंख में एक छोटा तिनका भी पड़ जाये तो हिमालय पर्वत भी ओझल हो जाता है। जब दृष्टि ही दोष से भरी हो तो सही पहचान नहीं हो पाती। व्यक्ति के लिये शान्ति तथा समाज के लिये नीति में क्रांतिकारी परिवर्तन होने पर ही देश का कल्याण हो सकता है। जब तक हर हाथ को काम नहीं मिल जाता तब तक यन्त्रों का विस्तार आत्मघाती है उससे देश व समाज का भला होने वाला नहीं है। जब पेड़ की जड़े ही विषाक्त हो गई हो तब उनकी पत्तियों पर पानी छिड़कने से कोई लाभ नहीं होता। गन्दी बस्तियों को सफाई अभियान, गाँवों में सड़कों की मरम्मत, स्कूल जैसे वायदें लोगों का ध्यान बाँटने के लिये हैं। मूल बीमारी बेरोजगारी है जिसने समाज की जड़ों को विषाक्त कर दिया है।

जिस दिन मानव दो पैरों पर खड़ा हो गया उसी दिन से उसका विकास शुरू

हुआ क्योंकि उसके दो हाथ खाली हो गये। जानवर आज भी चारों पैरों पर चलता है इसी कारण वह सभ्यता व संस्कृति पैदा नहीं कर पाया। मानव के दो खाली हाथों ने खेती करना व अन्य कुटीर उद्योगों में अपने आप को लगाया। अपने लिये मकान बनाये। जब तक मानव के इन हाथों को काम मिलता रहा तथा वह कुटीर उद्योगों तक सीमित रहा उसके चेहरे पर प्रसन्नता का भाव रहा तथा समाज में सुख शांति रही। जब से मशीनों का शोर शुरू हुआ तथा इन हाथों को सृजन का अवसर नहीं रहा, मानव खिन्न व उदास रहने लगा। आज निर्धन खिन्न है व धनी उदास है। आदमी प्रकृति से बुरी तरह टूट गया है। इसके घाव जगह-जगह दिखाई दे रहे हैं। गाँवों में कुटीर उद्यागों का जाल बिछाकर हम गाँवों को सम्पन्न बनाने में समर्थ होंगे। अपनी हर गलत धारणा को हमे तोड़ना होगा। अगर हमारी गलत धारणा टूट जाये तथा हमारा घर उजड़ने से बच जाये तो यह सौदा महंगा नहीं है। जिस प्रकार बादल दूर-दूर तक बरस कर पृथ्वी को हरियाली से भरते हैं उसी प्रकार कुटीर उद्योगों का जाल दूर-दूर तक फैलना चाहिये। कृषि व उद्योगों में सन्तुलन पैदा करना होगा। चौधरी चरणसिंह समाधान सुझाते हुये लिखते हैं कि—

"अगर भारत से बेरोजगारी व गरीबी मिटानी है और भारतीय जनता के रहन सहन को ऊँचा उठाना है तो जरुरी है कि कृषि को प्राथमिकता दी जाये, किसानों को सुविधाएं प्रदान की जाये उनको सस्ते मूल्य पर कृषि यन्त्र व उर्वरक दिये जायें, सिचांई के लिये नहरों तथा नलकूपों के जाल बिछाये जाये और आई० सी० ए० आर० जैसी संस्थाओं की सेवाओं को दिल्ली तक केन्द्रित न रखकर दूर देहातो तक पहुँचाया जाये।"

इन शब्दों से यही झलकता है कि चौधरी चरणसिंह के मन में ग्रामीण भारत के लिये उत्थान की प्रबल कामना थी। वे गाँवों को ही असली भारत मानते थे। वे आर्थिक नीतियों पर कुटीर उद्योगों के प्रबल समर्थक थे तथा वे मशीनों के स्थान पर व्यक्ति की कर्मठता व उसके दो हाथों को अधिक महत्त्व देते थे। वे बेरोजगारों के लिये समाधान लेकर आये तथा बेरोजगारी के कारणों को उजागर किया। उन्होंने जो भी कुछ इस विषय पर कहा वह सच्चा समाधान है। जो समाज व्यक्ति व उसके हाथों का सम्मान करता है वह स्वतः ही उन्नति के शिखर पर चढ़ने लगता है। समझदार वहीं है जिसके नेत्र असली नकली को पहचानते हैं। पहुँचता वही है जो सही दिशा में कदम उठाता है। जिस नीति से बहुसुख्यक का हित साधन हो वह

स्वागत योग्य है जिस नीति से पूँजी कुछ हाथों में केन्द्रित हो वह पैरों की उंगली से भी छूने योग्य नहीं है। कर्म का मूल्य परिणाम में है नीति का मूल्य प्रगति व उत्थान में है। विदेशों की अन्धी नकल महंगा सौदा है। यह देश के लिये आत्मघाती तथा व्यक्ति के लिये पीडादायक है। जिस देश में किसान व श्रमिक सुखी होता है वह महानता की सीढ़ी चढ़ लेता है। धन्यभागी है यह देश जिसे चरणसिंह जैसे पारखी की वाणी सुनने का अवसर मिला जिन्होंने पुनः-पुनः एक ही मंत्र दोहराया कि देश की समृद्धि का मार्ग गाँव के खेत व खलिहान से होकर गुजरता है।

अध्याय 9

देश की अखण्डता के पुजारी चरणसिंह

पूरे विश्व में जब भी कभी कोई व्यक्ति सत्य के लिये प्यासा होता है उसके चरण किसी अज्ञात प्रेरणा से भारत की ओर बढ़ने लगते हैं। भारत ने अतीत में एक शिखर छुआ था और उस शिखर पर फिर कोई दूसरा देश चढ़ने में समर्थ नहीं हो पाया था। भारत को एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति उसकी संस्कृति रही है परन्तु कालान्तर में विघटनकारी शक्तियां उभरने लगी तथा देश की अखण्डता को खतरा उत्पन्न होने लगा। देश के एक कोने से पृथक खालिस्तान तो दूसरे कोने से पृथक नागालैण्ड की आवाज उठ खड़ी होती है। काश्मीर समस्या का अभी तक समाधान नहीं हो पाया है। चौधरी चरणसिंह देश की अखण्डता के पुजारी थे। लोकतंत्र में विरोधी स्वर का होना एक सामान्य घटना हैं परन्तु जिस देश में मानव रहता है उसके विरोध में षड़यन्त्र करना लोकतंत्र नहीं अपराध है। भारत एक अनूठी संस्कृति का जन्मदाता है जिसने लोगों को पृथ्वी पर सही तरह से रहना सिखाया। आदमी पानी पर मछली की तरह तैरना सीख ले तथा आकाश में पक्षी की तरह उड़ना सीख ले तो भी जब तक पृथ्वी पर सही मानव की तरह जीना न सीखे उसका शेष ज्ञान व्यर्थ जाता है। अपने देश को छोड़कर विभीषण जैसा भला आदमी भगवान राम की शरण में आया था परन्तु फिर भी पृथ्वी पर कोई आदमी अपने पुत्र का नाम विभीषण नहीं रखता। देशद्रोही को समाज ने कभी भी सम्मानित नहीं किया। प्रत्येक देश को अपने नागरिकों को एक सन्देश देना होता हैं। प्रत्येक देश को एक उद्देश्य पूरा करना होता है। प्रत्येक देश को अपने हाथों अपने भाग्य को उजागर करना होता है और भारत ने जो संदेश दिया है वह है देश की अखण्डता की रक्षा तथा भारतीय संस्कृति का सम्मान। इस देश में आज विदेशी गुप्तचर संस्थाऐं सक्रिय हैं तथा भारत में भीतरी उपद्रव कराने के लिये हर सम्भव प्रयास करती रहती हैं। भारत में कुछ यहाँ के नागरिक भी विदेशों को गुप्त सूचनाएं भेजते हैं। भारत में कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनका पूरा जीवन ही विदेशों के यहाँ गिरवी रखा हुआ है। वे विदेशी दर्शन से अति प्रभावित हैं तथा प्रत्येक कार्य के लिये वहाँ के आदेशों की प्रतीक्षा करते रहते हैं। कभी भाषा के कारण, कभी जल के बटँवारे के कारण कभी रंगभेद व धर्म विवाद के कारण देश की अखण्डता को खतरा पैदा हो जाता है। मनुष्य क्षुद्र बातों के कारण अपने ही राष्ट्र से विश्वासघात

करने पर उतारु हो जाता है। जो विचार देश को तोड़ता है निन्दनीय है जो जोड़ता है, स्वागत योग्य हैं।

मनुष्य के ज्ञान, उसकी सफलता उसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं है। यह भी सत्य है कि मनुष्य ने जो ऊँचाई पाई है वह कोई पशु नहीं पा सकता परन्तु मनुष्य जितना नीचे गिर सकता है कोई पशु नहीं गिर सकता। पशुओं ने महापुरूष पैदा नहीं किये परन्तु कोई भी पशु हिटलर, चगेंजखॉ व स्टालिन जितना हिसंक भी नहीं हुआ है। आदमी अपने मनोरंजन के लिये पशुओं का शिकार करता है तथा अपने स्वार्थ के लिये अपने देश के साथ विश्वासघात करता है। चौधरी चरणसिंह ने एक अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा था कि—

"भारत एक ऐसा देश है जो विघटनकारी प्रवृत्तियों से भरा है। यहाँ साम्यवादियों जैसी विध्वंसक शक्तियां भी है जो अराजकता फैलाने के लिये निरन्तर कार्यरत हैं यदि काग्रेंस को भारत के राजनीतिक परिदृश्य से हटाया गया तो राज्य रुपी भवन कल ही भरभरा कर नीचे गिर पड़ेगा। विघटनकारी तत्व देश के उस हिस्सों या अर्थव्यवस्था के उस क्षेत्र में ज्यादा सक्रिय हैं जहाँ भारतीय राष्ट्रीय काग्रेंस कमजोर है।"

इन शब्दों से यही उजागर होता है कि चौधरी साहब देश की अखण्डता के पुजारी थे। वे अपने दल का शासन अवश्य ही चाहते थे परन्तु किसी भी रूप में विघटनकारी शक्तियों से समझौता करने के पक्ष में नहीं थे। उनके भाषणों में राजनीतिक झुकाव तो देखने को मिलता है परन्त कूटनीति की कोई छाया नहीं है। खालिस्तान की मांग का उल्लेख करते हुये उन्होंने कहा था कि खालिस्तान की मांग के पीछे बाहरी हाथ होने की बात की जाती हैं। एक दो देशों के नाम भी गिनाये गये हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि कुछ देश हमारे भारत के टुकड़े-टुकड़े देखना चाहते हैं। बड़े आत्मविश्वास भरे स्वर में कहा था कि भारत देश को कोई नहीं बांट पायेगा। सिख और हिन्दू दो नहीं एक हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि देश को वहीं नेता जगा सकते हैं जो मातृभूमि की परिस्थितियों को समझते हैं। मातृभूमि की परिस्थितियां केवल वही समझ सकता है जो स्वार्थ से ऊपर उठ गया है जिसके लिये भारत भाषा, प्रान्त जाति व साम्प्रदाय सबसे बड़ा है। यदि देश संगठित रहता है तो देशवासियों का मस्तक ऊँचा उठता है यदि देश का विघटन होता है तो देश का विनाश होता है तथा देश को पतन के गर्त में गिरने से कोई नहीं रोक सकता।

आज आशावादी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। देश की अखण्डता पर आंच आने की अब कोई सम्भावना नहीं है। भारत फिर एक बार विश्व का शिरमौर बनेगा। चौधरी चरणसिंह का हर शब्द आज सत्य हो रहा है।

चौधरी चरणसिंह ने प्रधानमंत्री के रूप में अपने भाषण में साफ तौर पर 15 अगस्त 1979 को कहा था कि—

"भारत आत्म निर्भर होकर रहेगा, भारत परमाणु बम बनायेगा क्योंकि इसके बिना विरोधी कभी भी सर उठाकर भारत पर हमला कर सकते हैं।"

वास्तव में जो राष्ट्र आत्मनिर्भर है वहीं स्वतंत्र है।

□■□

अध्याय 10

जमींदारी उन्मूलन और चकबन्दी अधिनियम

जमीदारी व पूँजीवाद की विषमता को देखकर ही फ्राईड जैसे मनोवैज्ञानिक ने एक बार कहा था असमानता एक कठोर जीवनसत्य है समता एक झूठी कहानी है। यह झूठी कहानी किताबों में तो पढने को मिलती है जीवन मे कहीं भी देखने को नहीं मिलती। जमीदारी खात्मे से पूर्व जमींदार के अंकुश के नीचे खेत जोतने वाले किसान की दुर्दशा को देखकर एक विचारक ने एक बार बार कहा था कि "हे परमात्मा ! अगर मेरा वश चले तो मै तेरी दुनिया को मिटाकर दूसरी दुनिया बना दूँ मैं तुझे तो स्वीकार करता हूँ लेकिन तेरी दुनियां को स्वीकार करने को तैय्यार नहीं हूँ।" वास्तव मे जमींदार के शोषण के परिणाम स्वरुप खेत जोतने वाले किसान की काली रात कभी खत्म न होने वाली रात थी। उनका जीवन एक दुखभरी लम्बी कहानी था जिसमे सुख जुगनू की चमक की तरह भी दिखाई नहीं देते थे। एक विचारक को उसके जीवन में कभी भी हंसते नही देखा गया था। जब उससे इसका कारण पूछा तो उसने कहा था कि पूरा संसार दुःखों की आग में जल रहा है यहां हँसने की सुविधा नही है। इस संसार में ऐसा कोई रुमाल नही बना जो दुखी आदमी के आंसू पोंछ सके। जमीदारी व्यवस्था में किसान की दुगर्ति का बयान करते हुए सर छोटूराम ने एक बार कहा था कि—

"किसान क्या है ? दुख व दया की चलती फिरती तस्वीर है। सारे दुःखों का पुतला उसका दिल अनगिनत परेशानियों से छलनी हुआ पड़ा है परन्तु वह इन सबको कह नही सकता यदि उसके पास मुंह है तो जीभ नहीं है।"

किसान जमींदार द्वारा अपने स्वामीत्व में लाई जमीन पर बटाईदार, सीरीदार या पट्टेदार के रूप में खेती का काम करते थे। इन गरीब किसानों का जिस रुप में शोषण होता था वह इतना भयावह था कि उसमें किसान का स्वयं का पूरा जीवन ही गिरवी नहीं रक्खा हुआ था बल्कि उसके बच्चों का बचपन व औरतों का सम्मान भी सुरक्षित नही था। यदि कोई किसान समय पर लगान या बटाई अदा करने में असमर्थ रहता था तो उसे पेड़ से बांध दिया जाता था तथा उसके शरीर पर कोड़ों की वर्षा होती थी, उसे पेड़ पर उल्टा लटका दिया जाता था और कभी-कभी उसका एक हाथ खाट के पाये के नीचे दाब कर जमीदार उस खाट पर लेट जाता था और

बेचारा किसान दर्द से कराहता रहता था। उसके हाथ की जो दशा होती थी उसकी कल्पना ही अन्तःकरण को झकझोर देती है। जमीदारों में थोड़े इन्सान भी थे। अधिकतर शैतान की सन्तान के जैसे थे। किसान के सर पर हर रात बड़ी भारी थी, हर दिन बड़ा बोझिल था। उसकी दीवाली, दीवाले की खबर देती थी, उसकी ईद उसे नाउम्मीद बनाती थी।

वास्तव में जमींदार की आंख में आंसू की कोई खबर नहीं थी वास्तव में उसकी आंख पथरीली थी।

इसी कारण सज्जन को ही नही होती थी आन्तरिक पीड़ा आकाश में देवों की भी आंख गीली थी।

एक विचारक ने इस तरह की व्यवस्था को देखकर एक बार कहा था कि मै यह निश्चित करने में असमर्थ हूँ कि आलीशान बंगलों में रहने वाले सम्पन्न लोगों व आदिम जमाने में गुफाओं में रहने वाले कच्चा मांस खाने वाले जंगली आदमी में कौन अधिक बर्बर है? जीसस ने एक बार कहा था कि यह तो सम्भव हो सकता है कि सुंई के छेद से ऊंट निकल जाये लेकिन धनी आदमी का धार्मिक होना सम्भव नहीं है। वास्तव में अपवाद स्वरुप धनी भी धार्मिक हुए हैं जमींदार भी करुणा भरे धरती पर आकाश ने देखे हैं परन्तु अपवाद कभी भी नियम नहीं बनते।

जमीदारी उन्मूलन से पूर्व किसान न्याय व समाज की मान्यताओं की दृष्टि से बेसहारा था। उसकी दुख भरी आवाज रेगिस्तान में गूँजती बोली थी जिसे सुनने वाला दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। किसान के सुख की बात पानी पर खीची लकीर थी जो खिच भी नहीं पाती थी कि मिट जाती थी। आदमी की आदमी के प्रति अन्याय व छल की बात को उजागर करते हुए फिराक गोरखपुरी कहते हैं कि—

"आदमी का आदमी होना
नही आसा फिराक
हवा, पानी, जिन्दगी चाहे
जिससे पूछ लो"।

गरीब किसान की पीड़ा उजागर करते हुए कहा जा सकता है कि—

"जमींदार मुटठी बन्द था आकाश गरीब का।"
इसी लिये घायल था विश्वास गरीब का।

सुख भरे सौभाग्य की थी बात थोथी
दुख भरा दुर्भाग्य था इतिहास गरीब का।
अमृत बता जहर पिला गई जिन्दगी।
जीवन की जड़ें ही हिला गई जिन्दगी।
जमींदार के जाल का परिणाम तो देखो
गांव गरीब को मिट्टी में मिला गई जिन्दगी।
प्यासे अधरों से जल छीना जमींदार ने।
वेदना बयार चला हल छीना जमीदार ने।
जमींदारी के अभिशाप का परिणाम तो देखो
पंखो से उड़ने का बाल छीना जमीदार ने।
प्रीत का परिन्दा बेपर दिखाई देता था।
घर बैठा किसान बेघर दिखाई देता था।
धरती हुई है घायल इस तरह मित्रों
आकाश भी तब निरूत्तर दिखाई देता था।
पीठ पर प्रहार से घायल था हर किसान
कर्जभार से दबा हर पल था हर किसान
वक्त की मार ने इस तरह बेहाल किया
गीता के इस देश में अति दुर्बल था हर किसान।
कभी तनाव कभी दबाव दिया जिन्दगी ने।
विकृति वजनी दुख बेहिसाब दिया जिन्दगी ने।
शोषण के तंत्र का पड्यन्त्र तो देखो
हर दिन किसान को गहरा घाव दिया जिन्दगी ने।"

ज्ञानीजन कहते रहे हैं कि सहयोग करने की कला शत्रु को भी बदल देती है, परन्तु किसान का लम्बे समय का सहयोग भी जमींदार को नहीं बदल पाया। ज्ञानीजन कहते रहे हैं कि संघर्ष करते-करते कोयला भी हीरा बन जाता है परन्तु किसान की किस्मत का कोयला कभी भी हीरा नहीं बन पाया। किसान का जमींदार के खेत में किया श्रम उसकी मुसीबत बनकर खड़ा हो गया था। चौधरी चरणसिंह को उनके एक मित्र ने एक औरत का अखबार में छपा चित्र दिखाया था जिसमें उसको केवल एक धोती से सारे बदन को ढकने की चेष्टा करते दिखाया गया था

उस चित्र को देखकर वे किसान की दुर्दशा पर मित्र के सामने बहुत देर तक रोये थे तथा कहा था कि इस चित्र को देश के कोने कोने में कार्यकत्ताओं को भेजा जाये ताकि वे गरीबी मिटाने का संकल्प लेकर जीवन संग्राम में उतरें।

अकेला आदमी जिस दिन ठोस निर्णय लेकर उसको साकार करने का सपना सजो लेता है उसक भीतर आत्मशक्ति जगने लगती है। यह जीवन उत्तर नहीं समाधान चाहता है। चौधरी चरणसिंह ने गाँवों में शोषण का खेल अपनी खुली आँख से देखा था। वे यह मानने को तैय्यार नहीं थे कि जो हुआ अच्छा हुआ जो हो रहा है अच्छा हो रहा है वे यह जरुर मानते थे कि जो होगा वह अच्छा हो सकता है।

शेष भारत जब आजादी के बाद भूमि सुधारों के विषय में केवल सपने ही देख रहा था, कल्पना की करवटें बदल रहा था चौधरी साहब ने जमीदारी उन्मूलन अधिनियम पारित करा दिया और इस विधेयक के परिणाम स्वरूप उत्तर प्रदेश में इतना अन्न पैदा हुआ कि वह आत्मनिर्भर हो गया। जमींदारी उन्मूलन से पूर्व यह प्रदेश अनाज की कमी से बेहाल था। इस कानून की प्रशंसा करते हुए एक विचारक ने सही कहा था कि—

"भारत में सुधार कानून अभी बना ही है लेकिन उत्तर प्रदेश में यह कानून लागू हो गया है तथा महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ चल रहा हैं। इससे एक ही शिक्षा मिलती है कि भूमि सुधार तभी हो सकता है जब उसके करने के लिये बलवती इच्छा शक्ति हो"।

यह सदैव याद रखना चाहिये कि जो संकल्प के धनी हैं, वे आधी लड़ाई बिना चले ही जीत लेते हैं शेष आधी के लिये उन्हे संघर्ष करना पड़ता हैं। यह भी सदैव याद रखना चाहिये कि जो समाज उन लोगों की उपेक्षा करता हो जो श्रम से सृजन करते हैं वह शहर में रहने वाले उन थोड़े लोगों को भी नहीं बचा पायेगा जो कुर्सी पर बैठकर वेतन बटोरते हैं या दुकान पर बैठकर हेराफेरी करते हैं। यह भी सदैव याद रखना चाहिये कि जड़ें बिना फूल के जिन्दा रह सकती हैं परन्तु फूल बिना जड़ के जिन्दा नहीं रह सकते। गान्धी दर्शन पर गहनता से विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अहिंसा के इस पुजारी ने उस अवस्था के विरुद्ध चेतावनी दी थी जिसमे धन कुछ हाथों में केन्द्रित हो जाता है उन्होने कहा था कि अगर धन का उपयोग सर्वहित में नही किया गया तो देश खूनी क्रान्ति के दौर से भी गुजर सकता है। चौधरी साहब ने आजादी के तुरन्त बाद भांप लिया था कि

बाहरी देश के बन्धन कटने भर से देश स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता जब तक कि यह स्वतन्त्रता आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश करके हलधर के हितों की सुरक्षा प्रदान करे और जमीदारी उन्मूलन इस दिशा में निसन्देह एक क्रान्तिकारी कदम था। चौधरी साहब की पारखी नजर ने पहचान लिया था कि जब तक किसान के सर पर जमींदार का भार है, पूरा प्रदेश बीमार है।

सदियों तक चौधरी चरणसिंह जिस साहसी व जनहित कार्य के लिये स्मरण किये जायेंगे वह उत्तर प्रदेश का जमींदारी उन्मूलन है जिसने किसानों को सदियों से चलते शोषणतन्त्र से मुक्त किया। उन्होने किसानों की दुर्दशा किताबों में नहीं पढी थी अपनी आँख से देखी थी। उन्होनें जो भी लिखा जो भी किया वह उनकी आंखन देखी पर आधारित था कानों सुनी पर वे विश्वास नहीं करते थे। सन् 1936 में वे बागपत निर्वाचन क्षेत्र से प्रान्तीय धारा सभा में चुनकर पहुचे तो उन्होने सर्वप्रथम किसान हित में कार्य करते हुए उन्होने कर्ज विमोचन विधेयक पास करा दिया जिससे किसानों के खेत व घर नीलाम होने से बच गये। भारत स्वतंत्र हुआ परन्तु गांव व गरीब की उदासी कम नहीं हुई। इस विषय पर एक कवि रंग ने कहा था कि—

मुक्त हुआ आकाश देश का
पर छाई है सर्वत्र उदासी।
ऊपर मेघ घिरे बैठे हैं
किन्तु धरा प्यासी की प्यासी॥
जब तक नंगे बदन बिहारी
या गोपी मोहताज है।
कोई किस मुंह से यह कह दे
सचमुच यहां सुराज है॥

चौधरी चरणसिंह कवि तो नही थे परन्तु संवेदनशील थे। किसान की दुर्दशा देखकर उनकी आत्मा रोती थी। देख मुक्त हुआ परन्तु किसान का चेहरा खुशी से नहीं खिला उसका एक मात्र कारण यही था कि किसान की गर्दन पर जमींदार का शिकन्जा था। उन्होने जमीदारी उन्मूलन का बीड़ा उठाया। आजादी के बाद बनी उत्तर प्रदेश विधान सभा में गोबिन्द बल्लभ पंत मुख्य मंत्री थे। उन्होने चौधरी चरणसिंह की प्राणशक्ति व किसान प्रेम को पहचान लिया था। उनकी दृष्टि में चरणसिंह का जादू किसानों के सर पर चढकर बोलने लगा था। उनकी कार्यशैली

अदम्य साहस से भरी थी। उनके चेहरे पर तपस्वी की चमक थी। उनका जीवन निष्काम कर्म की साधना था। उनमें समय की सुगन्ध थी कर्मक्षेत्र में कुशलता का प्रणाम उन्होने समय-समय पर दे दिया था। जाट, यादव कुर्मी, काछी लोधी, गुजर व अन्य ग्रामीण किसान मजदूर उनके आस-पास इकट्ठे हाने लगे थे। मुख्य मंत्री ने उनकी प्रतिभा पहचान कर उन्हे जमींदारी उन्मूलन का विधेयक तैय्यार करने का उत्तरदायित्व सौंपा। इस कार्य को अपना दायित्व मानकर उन्होने गांव का दौरा किया। किसानों से परामर्श किया। किसानों को पुरातन शोषणतन्त्र से मुक्ति दिलाने के लिये उन्हाने विधेयक तैय्यार किया। जो इतना सटीक व पूर्ण था कि उसमे किसी संधोधन की आवश्यकता नही पड़ी तथा उस विधेयक को पारित किया गया। पूरे भारतवर्ष में उनका यह कार्य सराहा गया तथा कुछ विदेशी विद्वानों ने भी उस विधेयक की भरपूर प्रशंसा की। खेत जोतने वाला खेत का स्वामी बन गया तथा उच्चतम न्यायलय ने अपने एक निर्णय में एक बार कहा था कि इस विधेयक के आने के साथ ही पुराने अधिकार ध्वस्त हो गये हैं और किसानों को एकदम नवीन अधिकार प्रदत्त किये गये हैं।

इस विधेयक का प्रभाव इतना व्यापक था कि जमीदारों के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई और उन्हे दिन में भी तारे दिखाई देने लगे। उन्होनें जमींदारी उन्मूलन विधेयक को न्यायालय में चुनौती दे डाली। न्यायालय ने न्याय की तराजू पर विधेयक को तोला तर्क की कसौटी पर उसको कसा संविधान की पृष्ठभूमि में उसको परखा परन्तु कही भी प्रश्नचिन्ह लगाने का मौका नहीं मिला। किसान भूमि का स्वामी हुआ तथा एक जुलाई 1952 से जमीदारी उन्मूलन कानून यू०पी० में लागू हो गया ; उत्तर प्रदेश ही वह पहला राज्य था जिसमें इस प्रकार का जांचाण् परखा व किसानों के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए कानून पास किया गया था। अब किसानों को मनमाने ढंग से बेदखल नहीं किया जा सकता था।

जमींदार चुप बैठने वाले नहीं थे। उन्होंने लगभग अट्ठाईस हजार पटवारियों को भड़का दिया। चौधरी चरणसिंह ने पटवारियों से कोई समझौता नहीं किया और सभी को कार्यमुक्त कर दिया। अब चरणसिंह लौह पुरुष माने जाने लगे थे। वे साहस व दृढता के प्रतीक बन चुके थे। नौकरशाही उनको स्वरुप को पहचानने लगी थी। नौकरशाही उनसे बचकर चलने लगी थी।

चौधरी चरणसिंह ने जमींदारी उन्मूलन को किसानों के लिये वरदान मानते हुए स्वयं कहा था कि—

"जमींदारी के उन्मूलन ने प्रोत्साहन के रूप में जिन शक्तियों को मुक्त किया उनका उत्पादन की वृद्धि में बहुत बड़ा योगदान रहा हैं।"

उनके कहने का आशय था कि अपने खेत में किसान जिस हौसले से काम करता है जमींदार के खेत में नही कर सकता। प्रोत्साहन से पैदावार बढ़ी। आगे चलकर देश अनाज के बारे में आत्मनिर्भर हुआ उसके पीछे चौधरी चरणसिंह का ही बल है।

सन 1953 में चौधरी साहब ने चकबन्दी कानून पारित कराया। इस कानून के सम्बन्ध में एक विदेशी विचारक ने कहा था कि यह विधेयक कृषि उत्पादन में क्रान्ति लाने वाला सिद्ध होगा। यह इस कानून पर अमल का ही परिणाम था की देश अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हुआ। बाहर.से अन्न मंगाना बन्द हुआ।

भारत का समग्र विकास ग्रामीण भारत के उत्थान पर निर्भर है तथा भूखे लोग बहुत देर तक सिद्धान्तों की प्रतीक्षा नहीं करेंगे इस तरह की धारणा के धनी चौधरी चरणसिंह ने जन्म से ही किसानों के कष्टों को बड़े निकट से देखा था। उन्होने अपने बचपन में ही परख लिया था कि असंख्य किसानों के खेत गांव में चारों दिशाओं में छितरे थे जिसके कारण वह हर दिन कठिनाई का सामना करता था। वह दूर-दूर फैले खेतों की न ठीक से बुवाई कर सकता था न जुताई ही कर सकता था न ही पानी की ठीक व्यवस्था कर सकता था। फसल की रखवाली करना उसके लिये सम्भव नहीं था। छोटे-छोटे टुकड़ों में खेतों के बटे रहने के कारण मेड़ों में बहुत सी भूमि घिरी रहती थी और किसानों में मेंड़ व नाली पर बहुत से विवाद उठ खड़े होते थे। इन मुकदमों का निबटारा वर्षो में भी नहीं हो पाता था। कचहरी की हर ईंट पैसा मांगती है यह चौधरी साहब को प्रत्यक्ष अनुभव था। किसान को कर्जा लेकर जेवर बेचकर भी मुकदमा लड़ना पड़ता था। किसान के सर पर हर रात बड़ी भारी थी जिसे देखकर उन्हे बेहद कष्ट होता था। उनका पूरा चिन्तन चिन्ता से उपजा था। किसान व राष्ट्रहित साधन ही उनकी सोच के केन्द्र बिन्दू थे। चिन्तन व मनन उनकी जीवन शैली में समाये थे। उन्होने एक जीवन दर्शन विकसित किया था जिसकी यह मान्यता थी कि मानव इस धरती पर प्रकृति की कठपुतली नहीं है जिसकी डोर भाग्य के द्वारा निर्धारित है वह श्रम व साधना के बल पर अपने जीवन को जैसा चाहे ढाल सकता है। उनके विचारों का सार निम्न शब्दों से उजागर होता है—

"लोगों को यह महसूस करना होगा कि हमारा भौतिक वातावरण अपरिवर्तनीय कारक नहीं है बल्कि यह संसार व्यवस्थित है जिसे बदल कर अच्छा बनाया जा सकता है। भगवद्कृपा का ऐसा कोई विधान नहीं है जिससे हमारे बच्चे अभाव व दीनता में जीवित रहें"। वास्तव में इस धरती का अणु-अणु क्रियाशील है, गतिशील है। यहां सब कुछ बदल रहा है। मानव शरीर ही नहीं बदलता पत्थर के भीतर अणु भी गतिशील हैं। इस परिवर्तित जगत में कर्मशील बनकर अपनी तकदीर बदलना ही समझदारी है। चौधरी साहब के विचारों को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता हैं कि—

"नेता को बदलो नारे बदल जाते हैं।
धार को बदलो किनारे बदल जाते हैं।
वस्त्र बदलने से नहीं होता कुछ हासिल
सोच को बदलो सितारे बदल जाते हैं।

जो भी शुभ करना है आज और अभी करो क्योंकि आने वाले कल से आज का मूल्य अधिक होता है। खोये अवसर खोया जीवन बन जाते हैं। खोये अवसरों की कभी-कभी जीवन भर प्रतीक्षा करती पड़ती है।

परम मूल्य मानव के आचरण की नहीं अन्तःकरण की आवाज का है। परम मूल्य आने वाले कल का नहीं असली मूल्य तो इसी क्षण आज का है।

इस तरह की मान्यता रखने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि—

"हमारा यह उद्देश्य है कि हम यह जांच करें कि जो भूमि हमें प्रकृति ने प्रदान की है उसका सबसे अच्छा उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है। भूमि की वे कौन सी शर्तें अथवा परिस्थितियां होनी चाहियें जिनसे हम भूमि के स्वामी बने ताकि उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।"

चकबन्दी किसान की परम हितैषी बनेगी ऐसी विचारधारा रखने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि—

"चकबन्दी तितर-बितर खेतों की समस्या का निराकरण कर सकती है"।

चकबन्दी के बाद के लाभों को गिनाते हुए उन्होनें कहा था कि—

"चकबन्दी के फलस्वरुप जल निकासी का नियन्त्रण और सिंचाई जल की आपूर्ति अपेक्षाकृत अधिक आसान हो गई जिसके कारण भूमि का उपेक्षाकृत अधिक उपयोग हो सका।"

यह थी उनकी दूर दृष्टि।

अध्याय 11

सरकारी खेती के प्रबल विरोधी हलधर हितैषी चरणसिंह

चौधरी चरणसिंह का व्यक्तित्व बादाम की तरह था। ऊपर से बहुत कठोर भीतर सद्‌भावों से भरा हुआ। पण्डित जवाहरलाल नेहरु देश के प्रधानमंत्री थे कांग्रेस दल में उनका बोलबाला था। नागपुर में कांग्रेस दल का अधिवेशन था। पण्डित नेहरु सहकारिता के प्रबल समर्थक थे। यह बात सबको विदित थी कि पण्डित नेहरु सहकारी खेती लागू करना चाहते हैं। पार्टी के प्रमुख नेता पण्डित नेहरु का आशीष लेने को आतुर थे परन्तु उत्तर प्रदेश सरकार का एक मंत्री उठ खड़ा होता है तथा प्रस्ताव का प्रबल विरोध करता है। उसका दुस्साहस सबको आश्चर्य में डाल देता है। यह वक्ता ओर कोई नहीं उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री चौधरी चरणसिंह थे। उन्होने कहा कि सहकारी खेती एक अव्यवहारिक व हानिकर प्रस्ताव है। इसका देश में लागू किया जाना दुर्भाग्य का सूचक होगा। दो भाई भी शामिल रहकर खेती करने में असमर्थ हैं। उनकी मान्यता थी कि एक व्यक्ति एक किसान अपनी खेती पूरी मेहनत व पूरा मन लगाकर करता है दस आदमी मिलकर खेती नही कर सकते। हल बैल से खेती अच्छी तरह की जा सकती है। उनके इस विरोध के बाद उन्हे मंत्री पद से अवश्य की त्यागपत्र देना पड़ा परन्तु जनमानस के वे प्रिय नेता बनने लगे तथा गांव का किसान उन्हें अपना परम हितैषी मानने लगा। जब भी कभी पुलिस अत्याचार या अन्य दमन की सूचना चौधरी साहब को मिलती तो वे बेहद दुखी हो जाते थे। एक अवसर पर उन्होंने यहाँ तक कहा था कि "यदि उनकी उम्र दस वर्ष कम हो जाती तो वे उन लोगों की सेवा और सक्रिय रूप से करते जिनकी सुनने वाला कोई भी नही है।" इन शब्दों से यही प्रगट होता है कि वे गाँव में पैदा हुए तथा आजीवन गावों के दुःख दर्द में भागीदार रहकर चले गये। यदि वे प्रदेश के मुख्यमंत्री कुछ लम्बे समय तक रहते तो पूरा ढांचा ही बदला जाता।

चौधरी चरणसिंह क रोम-रोम में किसानों के लिये अथाह उत्साह व प्रेम था। वे किसानों को देश का कर्णाधार बनाकर शिखर पर बिठाना चाहते थे। वे मात्र किसानों के हितैषी ही नहीं उनके उद्धारक भी थे। उन्होने किसानों को अपनी शक्ति और स्वरुप पहचानने को कहा था। मानव की असली शक्ति बाजू से नही अन्तःकरण से आती है। महान व्यक्ति वही होता है जिसके पास पहुँचकर भी दोषों

की खबर नहीं मिलती और जिसके दूर रहकर उसके गुणों की चर्चा सुनने को मिलती है। सच्चे मित्र की पहचान संकट में तथा सच्चे नेता की पहचान उस समय होती है जब वह विपक्ष में बैठकर भी हताश-निराश नहीं होता तथा विपरित हवा उसको कम्पित नही करती। प्रलोभन जिसे तिलभर भी नहीं डिगा पाता। जो विपरित हवा में दुगने वेग से बढ़ते हैं वे नेतृत्व के अधिकारी बन जाते हैं। चौधरी देश के उन थोड़े नेताओं में से थे जो आजीवन रीढ़ झुकाकर नहीं बैठे। जिन्होने अपने जीवन की छोटी मोमबत्ती को मशाल बनाया जो साधारण से महान बने एक छोटे कृषक के पुत्र होकर भी देश के प्रधानमंत्री बने। एक विचारक ने एक बार कहा था कि राजनीति असत्य के सिहांसन पर विराजमान होती है व झूठ तथा कपट के दो पंखो पर उड़ती है तथा आत्मा बेचकर जवान होती है। चौ० चरणसिंह ने अपने आचरण से यह सिद्ध कर दिया कि राजनीति भी गंगा की तरह निर्मल हो सकती है तथा सत्य व सेवा के दो पंखो पर उड़ सकती है तथा अपनी आत्मा बचाकर भी जवान हो सकती है। प्रतिभाशाली का यही लक्षण है कि वह अपने विचारों से जन-जन को आन्दोलित कर देता है तथा मूढ मान्यताओं पर तीव्र प्रहार करके देश में विचार क्रान्ति का भूचाल खड़ा कर देता है। उन्होंने आजीवन किसान व कृषि देहात व खलिहान का पक्ष लिया। उन्होंने किसान को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आधार बताया। जिस प्रकार बिना मजबूत नींव कोई विशाल भवन खड़ा नहीं होता उसी प्रकार बिना किसान देश नहीं बनता। जो सृजन करता है वह सर्वप्रथम सम्मान का अधिकारी है जो पेट की भूख मिटाने के लिये अन्न पैदा करता है वह धरती का भव्य जीव है। वे कृषि को प्राथमिक तथा मूलभूत उद्योग घोषित करते है तथा बोल उठते हैं कि देश का आर्थिक विकास कृषि की समृद्धि के बिना नहीं हो सकता। जब गाँव सम्पन्न बनेंगे तभी देश सम्पन्न बनेगा। शहर का व्यापारी वर्ग किसान को सम्मान नहीं देता उसका शोषण करता है। किसान के साथ पग-पग पर धोखा होता है घाट-घाट पर छीनाझपटी होती है। सेठों के महल बन जाते है गरीब का झोपड़ा उजड़ जाता है। शहरों में हर प्रकार की सत्ता केन्द्रित हो जाती है गाँवों में सूखा पड़ जाता है। शहरों में सडकें बन जाती हैं गावों में सूनापन बना रहता है। शहरों और गाँवो की प्रगृति में यह बढ़ती खाई उनको जीवनभर दुख देती रही तथा वे इस खोई गरिमा को पुनः पाने के पावन कार्य में जुट गये। सर्वप्रथम उन्होने गांवो में रहने वालो को चेताया कि बिना सत्ता ग्राम सुधार एक कल्पना है उनकी एक आँख खेत की मेड़ पर तथा दूसरी लखनऊ की राजगद्दी पर होनी चाहिये। शहरों

में रहने वाले गांवो का विकास उसी सीमा तक देखना चाहते हैं जब तक उनके हितो पर आँच नहीं आती। यदि किसानों को अपनी उन्नति करनी है तो अपनी नीद को तोड़ना होगा। जीवन के यथार्थ को परखना होगा। अपने नेता पैदा करने होंगे तथा लखनऊ व दिल्ली की सत्ता अपने हाथ में लेनी होगी।

लोगों का विश्वास जीतना सरकार का प्रथम कर्म है उसके पश्चात जो सबसे महत्वपूर्ण बात है वह है देश के खाद्यान्न पर विचार। उनके कहने का यही अर्थ था कि सरकार को सबसे पहले अपने पैर मजबूती से जमाने चाहिये, उसके बाद अन्नदाता किसान की ओर ध्यान देना चाहिये जिसके उत्थान में ही देश का उत्थान है। यदि किसान ऊपर उठता है तो देश ऊपर उठता है यदि किसान नीचे गिरता है तो देश नीचे गिरता है। यदि किसान के जीवन में हरियाली है तो देश के जीवन में हरियाली है यदि किसान के जीवन से सूखा है तो देश के जीवन में सूखा है। किसान देश की अर्थव्यवस्था का स्रोत है यदि स्रोत ही बन्द हो गया तो कुंआ सड़ जाता है यदि किसान ही सूख गया तो देश भुखमरी के कगार पर खड़ा होगा। जिस देश में लोगों को भरपेट खाने को नही मिलता वहा अन्दर ही अन्दर असन्तोष उबलने लगता है अतः चौधरी साहब के अनुसार अन्न की कमी से राजनैतिक अस्थिरता पैदा होने की सम्भावना बढ़ जाती है। भूखे पेट न मजदूर काम कर सकता है और न ही सिपाही युद्ध लड़ सकता है। भीतर व बाहर दोनो मोर्चो पर हार का सामना करना पड़ता है। अन्न की कमी से देश के चरण दासता की ओर बढने लगते हैं। जिस प्रकार मनुष्य के लिये सबसे पहले स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार राष्ट्र के लिये सबसे पहले सुरक्षित अन्न भण्डार की आवश्यकता है। पदार्थ मनुष्य की बाहरी जरुरत है अन्न मनुष्य की भीतरी अनिवार्य आवश्यकता है। जो देश अन्नदाता को पूरा सम्मान नहीं देता उसे अपने लोगों के जीवन में कोई आस्था नहीं होती और जहाँ जीवन का सम्मान नहीं है वहाँ देश को पतन के गर्त में गिरने से कोई नहीं रोक सकता। एक समय था जब इस देश के कुछ विचारकों ने अन्नम बृह्म अर्थात अन्न ही बृह्म है इस तरह का उदघोष किया था क्योकि वे जानते थे कि शरीर जीवन की पहली आवश्यकता है तथा स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा रह सकती है।

जिस प्रकार अज्ञानी का शोषण कोई नहीं बचा पाता उसी प्रकार जिस देश को अन्न दूसरे देशों से मंगाना पड़ता है उसका हर प्रकार का शोषण होता है। जो

दूसरे पर निर्भर रहता है सदा ही भीतर डरा रहता है तथा आधीनता स्वीकार करने की स्थिति में होता है। जब एक देश दूसरें देश से अन्न मंगाता है तो वह उसकी नितियों का समर्थन करने को विवश होता है। जो भीतर से किसी पर निर्भर है उसकी आत्मा एक न एक दिन गिरवी रख दी जाती है इसी स्थिति के विरुद्ध चौधरी साहब ने चेतावनी दी थी कि हमे यथासम्भव शीध्रता से अन्न का उत्पादन बढाना चाहिये ताकि हम अमरीका की मनमानी का शिकार होने से अपने आप को बचा सकें। इस चेतावनी का ही परिणाम है कि आज देश के पास अन्न का सुरक्षित भण्डार है।

कृषि तथा किसान को हमें और अधिक महत्व इस कारण भी देना चाहिये क्योकि वहाँ से केवल पेट की भूख ही शान्त नहीं होती है इसके साथ-साथ वहाँ कच्चा माल भी तैयार होता है जो उद्योगो के काम आता है। उद्योग भी कृषि पर निर्भर हैं। कपड़े के लिये कपास, चीनी के लिये गन्ना व तेल के लिये सरसों खेतों में ही पैदा होती हैं।

वे किसानों को सदैव ही परामर्श देते थे कि उन्हे हलधर बनना है तथा हल बैल से खेती उत्तम ढंग से होती है। हल बैल से खेती करने में किसान की गरिमा है इससे उपज बढती है खेतों के लिये खाद मिलता है। इस देश की मिट्टी मशीनों से खेती का समर्थन नही करती। यदि मशीनों का प्रयोग किया गया तो उसका शुभ परिणाम होने वाला नहीं है। आरम्भ में भले ही यह लगता हो कि आदमी के कन्धों पर श्रम का भार कम होगा तथा फसल में कोई अन्तर नहीं है परन्तु कालान्तर में मशीनों का प्रयोग उपज को बढायेगा नहीं उसको घटायेगा। भारत में कृषि भूमि कम है आबादी बढ रही है अतः विदेशों की यहां नकल करना बुद्धिमानी नहीं है। वहाँ पर कृषि भूमि बहुत अधिक है अतः वहा पर मशीनों का प्रयोग उचित है। दूसरों की नकल करके कोई आदमी महान नही बनता तथा दूसरे देशों की अन्धी नकल इस देश को भी दुःखदायी होगी। जहां असंख्य हाथ बेकार पड़े हो वहाँ डीजल व पैट्रोल का प्रयोग करना नासमझी है जो हमारी अर्थव्यवस्था को चौपट कर देगा। यदि किसान को उसकी फसल का उचित दाम मिलेगा तथा उसकी क्रय शक्ति बढेगी तो इससे व्यापार तथा परिवहन उद्योग भी बढेगा क्योकि किसान खर्च करने में सदा से उदार रहा है। कृषि के साथ गावों में परिवहन सुविधाओं का जाल बिछाया जानां चाहिये जिससे कि गांव का निवासी शहर से जुड़ सके तथा अपनी उपज की बिक्री की व्यवस्था देख सके। जो बीत गया वह आदमी को प्रेरणा देता

है जो आने वाला है उसे आशा बधाता है वास्तविक मूल्य तो वर्तमान का है जिसका वर्तमान ठीक है वही सुखी है। वास्तविक योजना वही है जो आज के यथार्थ को सबसे अधिक मूल्य देती है। कर्म का मूल्य परिणाम मे है योजना का मूल्य प्रगृति में है। यदि देश का बहुमत त्रस्त रहता है तो योजना की हर बात अखबारी होती है जहाँ शब्द बहुत आशा भरे होते है उपलब्धि नाम मात्र होती है। जब देश का धन एक जगह इकट्ठा होने लगता है तो जीवन ही रेगिस्तान बन जाता है। चौ० चरणसिंह हर केन्द्रीकरण के विरुद्ध थे तथा उन्होने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि—

"**केवल दिल्ली शहर में ही धनी व्यक्तियों की संख्या देश भर के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले धनी व्यक्तियों की संख्या से अधिक है और राजधानी में कर देने योग्य सम्पत्ति भारत के कुल ग्रामीण क्षेत्रो में कर देने योग्य सम्पत्ति से दुगुनी है।**" चौधरी साहब के इन शब्दों से साफ प्रकट होता है कि यदि दिल्ली की सम्पत्ति को एक पलड़े में रख लिया जाये तथा शेष गांवो की सम्पत्ति को दूसरे पलड़े में रख लिया जाये तो दिल्ली का ही पलड़ा भारी होगा। सत्ता में बैठे लोगों ने दिल्ली को सागर बना दिया है तथा पूरे भारत के गाँवों को नदियों जैसा रख छोड़ा है जिनका सारा पानी दिल्ली की ओर दौड़ा चला आता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। दिल्ली को सूर्य बना दिया गया है जिसके चारो ओर सारे गाँव तारों की तरह दिन रात चक्कर लगाते हैं। शहरी विस्तार पक्षपात पूर्ण नीति का परिणाम है। गाँव के लोग शहरों में जाकर बसना चाहते है। गांवों में रहने वाले शिक्षित तथा कर्मठ व्यक्तियों पर सारी आशा टिकी हुई थी परन्तु यह आशा भी धूमिल होती जा रही है। चौधरी साहब इसका कारण बताते हुए लिखते हैं कि—

"**शिक्षित और ग्रामीण उद्यमी युवक नेतृत्व संभाल सकते थे तथा सामाजिक परिवर्तन ला सकते थे लेकिन वे गाँव छोड़कर नगरों की तरफ जा रहे हैं। इसके विपरित शहरी श्रेष्ठ व्यक्ति तथा डाक्टर गाँव को भद्दा व रहनेयोग्य न मानकर उसकी निन्दा करते हैं।**" इस प्रकार ग्रामीण भारत हर दिन एक नई समस्या का सामना कर रहा है। गांवों में प्रतिभा पलायन कर रही है। शहरी शिक्षित आदमी गांवों की ओर नजर उठा कर भी नहीं देखता इन दोनो कारणों से ग्रामीण उत्थान एक सपना बनकर रह जाता है।

चौधरी चरणसिंह की अर्थनीति में किसान का स्थान अग्रिम पंक्ति में है वह पूरे राष्ट्र को संभालने वाला मुख्य स्तम्भ है तथा राष्ट्र की उन्नति का महत्वपूर्ण सूत्र

है जिसे पकड़ कर मंजिल पर पहुँचा जा सकता है। जब तक अनाज और खेतों में पैदा होने वाली चीजें किसानों की जरुरत से ज्यादा पैदा नहीं होती तब तक औद्योगीकरण संम्भव नहीं है। जब किसान अपनी जरुरत से ज्यादा माल पैदा करेगा तभी वह अन्य जगह काम आ सकेगा। इस प्रकार जब तक किसान को पूरा सम्मान नहीं दिया जाता तथा उसके उत्पादन को प्रोत्साहित नहीं किया जाता तब तक देश में उद्योगों का भी विकास नहीं हो सकता। किसान के साथ विकास है। किसान की उपेक्षा करने में विनाश है। ऐसे देश में जहां श्रम मशीन से सस्ता है वहां अतिरिक्त उत्पादन तभी संम्भव है जब हाथ को काम व कुटीर उद्योगों को अधिक महत्व दिया जाये। चौधरी कुटीर उद्योगों के पुजारी थे। खाली हाथ क्रान्ति पर उतारु हो जाते हैं तथा खाली मस्तिष्क शैतानी का कारखाना होता है। आदमी को खाली छोड़ना तथा मशीनों को उत्पादन में लगाना खतरे से खाली नहीं हे। जब तक लोगों की क्रय शक्ति नहीं बढती उद्योगों की चर्चा व्यर्थ की बकवास है।

चौधरी चरणसिंह किसान परिवार से आये न्यायाधीशों को शहरी वातावरण में पले न्यायाधीशों से पृथक् विचारधारा वाला मानते थे तथा सरकारी नौकरियों में किसान बच्चों के आरक्षण की वकालत करते थे। पिछड़ी जाति के किसानों का आरक्षण खुद उनको हाथों हुआ था जिससे यह प्रतीत होता है कि उनके शब्दों व आचरण में लेशमात्र भी अन्तर नहीं था। वे किसान पुत्रों के गुणों की प्रशंसा करते थे तथा एक अवसर पर उन्होनें कहा था कि—

"एक किसान पुत्र में निश्चयों को मूर्त रुप देने कि शक्ति और दृढ़ता होती है जिसका अभाव प्रायः गैर किसान सन्तानों में देखने को मिलता है।" चौधरी साहब का कहने का तात्पर्य यही था कि गांव की खुली हवा में रहकर शहर आने वाला अपने बचपन को नहीं भुला पाता। गांवों में बचपन में ही वह आंधी औलों से संघर्ष करना सीख लेता है। विपरित परिस्थतियों से उसे जूझना पड़ता है। वह उत्साही होता है तथा काली रात में भी प्रभात की आशा से भरा होता है। अपनी इच्छाओं को वह सीमित बनाता है परन्तु उसका उद्देश्य विशाल होता है विपरीत हवा देखकर वह दुगने वेग से आगे बढ़ता है। जो निश्चय वह मन में कर लेता है उसे साकार करने में अपने प्राणों की बाजी लगा देता है। वह अपनी जीवन की मशाल को दोनों तरफ से जलाकर जीता है जबकि शहरी वातावरण में पले व्यक्ति की प्रमुख भावना जीवन की सुरक्षा होती है उसके प्राणों में भय तथा रगों में रक्तचाप होता है। अतः सरकारी प्रशासन में शहरी लोगों का एकाधिकार

नहीं होना चाहियें। यथार्थ में किसान ही देश का सच्चा प्रतिनिधित्व करते हैं। चौधरी साहब बोल उठते हैं कि **"यथार्थ में किसान ही जन समाज के प्रतीक हैं। देहात तथा किसान समाज हमारे पूर्वजों के बलवान स्वास्थ्य का प्रतीक है।"** उनके अनुसार उनको प्रशासन में समुचित भागीदारी से वंचित करना एक बहुत बड़ा अपराध है।

देश की प्रगति किसान हितों की अनदेखी करके नहीं की जा सकती। देश की प्रगति बिना उन्नतिशील कृषि असम्भव है। कृषि पर किया गया हर आघात देश पर किया आघात है। किसान तथा गांव के आत्मनिर्भर होने से पूरा देश आत्मनिर्भर होगा। उनके अनुसार भारत की समस्या कृषि से जुड़ी समस्या है किसान का विकास अर्थात् देहात का विकास, देहात का विकास ही देश का विकास है। यह किसान से अभिन्न है। किसान व मजदूर को देश के विकास का लाभ बराबर मिलना चाहिये। वे ओज भरे स्वर में बोल उठते हैं कि

"खेत में अपना खून पसीना बहाने वाला तथा सीमाओं की रक्षा करने वाला किसान जिस दिन संगठित हो गया, दुनियां की बड़ी से बड़ी ताकत उसके सामने झुकेगी"।

किसान को सहकारिता व सामूहिक खेती से दूर ही रक्खा जाए। एक आदमी काम करता है और जब दस आदमी इकट्ठे हो जाते हैं तो उपद्रव शुरु होने लगता हैं। एक आदमी खेत कों अपना समझकर उसमें एकचित होकर निष्ठा से लगा रहता है। दस आदमियो को एक धारा में बहाना बहुत कठिन होता है। इसी कारण चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि—

"सामूहिक खेती मानव स्वभाव के विरुद्ध है। सामूहिक खेती या सहकारी खेती से उत्पादन पर बुरा असर होगा और देश विनाश की ओर अग्रसर होगा।"

हम अपने नित्य प्रतिदिन के जीवन में देखते हैं कि जब बसें सरकारी विभाग के रुप में सामूहिक रूप से चलाई जाती हैं तथा अन्य कार्य उत्पादन भण्डारण इत्यादि किये जाते हैं तो अकसर उनमें घाटा ही घाटा होता है। वही काम जब टाटा-बिरला इत्यादि व्यक्तिगत रुप में करते हैं तो उन्हे लाभ ही लाभ होता है। हर सरकारी विभाग घाटे में ही चलता दिखाई देता है कभी-कभी अपवाद सुनने को मिल जाते हैं परन्तु अपवाद नियम नहीं बनते और न ही अपवाद औचित्य सिद्ध

करते हैं। जो अपवादों को नियम बनाकर नीति बनाते है वे समाज को मुश्किल में डा़ल देते हैं। कानों से सुनी पर विश्वास करने वाला सही आदमी नही अपनी खुद की आँखों पर विश्वास करने वाला सही आदमी है। देश के कर्णाधारों का यह दायित्व है कि वे अपने पक्षपातों को एक तरफ हटाकर रखदे तथा निष्पक्ष होकर यह खोज करें कि हमारे पास जो भी भूमि उपलब्ध है उसका उपयोग किस प्रकार से किया जाये कि वह अधिक से अधिक लाभकारी बन सके। जब आदमी के मन में यह भाव होता है कि वह किसी सम्पत्ति का स्वामी है तो उसकी देखभाल अच्छी तरह करता है। जो जीवन के मनोविज्ञान की अनदेखी करते हैं वे मुश्किल में पड़ जाते हैं।

संयुक्त फर्मों में उत्पादन बढ़ता नहीं गिरता है तथा इससे बेराजगारी की समस्या बढ़ने का खतरा बना रहता है। जो लोग विदेशी पुस्तकों का अध्ययन करके भारत की कृषि की समस्या का निदान खोजते हैं वे आँख वाले होकर भी अन्धे हैं तथा अकसर पूर्वाग्रहों से ग्रसित रहते हैं। भारत जिसने सदियों से पूरे विश्व का मार्गदर्शन किया है उसके निवासी जब अपने भाग्य को विदेशी लेखकों से जोड़ते हैं तो शर्मनाक स्थिति बनती है। जब समस्या ही अपनी हमारी है, तो समाधान भी हमे खुद ही खोजना होगा। प्रत्येक बच्चा जब माँ का दूध पीता हे तभी वह एक प्रकार का जीवन जीने का ढंग भी सीखता है जो उसके रक्त के साथ मिल जाता है। भारतीय संस्कृति ने व्यक्ति की स्वतंन्त्रा तथा उसके सम्पत्ति के अधिकार को सदा से मान्यता दी है। व्यक्ति को उसके छोटे आंगन तथा छोटे खेत में अपनी मर्जी के अनुसार श्वांस लेने से रोककर उसको सहकारी खेती के लिये मजबूर करना मूढ़ता ही नहीं एक अपराध है। इसी कारण चौधरी चरणसिंह रोष भरे स्वर में बोल उठते हैं कि—

"सहकारी कृषि भी एक ऐसी योजना है जो असफल हो चुकी हे और कभी भी सफल नहीं होगी"।

उनकी यह भविष्यवाणी समय की कसौटी पर खरी उतरी है। वे जो कुछ लिखकर या बोलकर गये हैं वह सत्य के इतना निकट हे कि वे कभी-कभी धरती की धूल से बहुत ऊपर उठकर भारतीय संतो के बहुत करीब बैठे मिलते हैं। वे जब वनस्पति पौधों की बात करते हैं तो उन्हें जीवित जीव की भाँति मानते हैं। पौधों में प्राण होते हैं तथा उन पर यदि मंगलकामना से जल भी छिड़का जाये तो

वह खाद का काम करता है। वे मित्र व शत्रु की पहचान करने लगे हैं तथा जहाँ ओमकार का जाप या मधुर संगीत बजता है, जल्दी बढ़ते हैं और जहां शोरगुल अराजक संगीत बजता है वहाँ उगने से भी इन्कार करते हैं। पौधें की अच्छी तरह देखभाल की जाये तो वह ज्यादा फल देता है। आज की शोधों में यह निष्कर्ष निकाला जा चुका है कि पौधा सज्जन आदमी के आने पर प्रसन्न होता है तथा दुर्जन के आने पर कम्पित हो जाता है। चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि—

"एक पौधा सजीव अवयव है। इस पौधे का उतनी ही व्यक्तिगत देखभाल और ध्यान की जरूरत है जितनी कि किसी पशु या मानव को होती है"। इन शब्दों से यही उजागर होता है कि वे बड़े संवेदनशील थे। वास्तव में जो बच्चा माँ की छाया में नहीं पलता उसमें आजीवन एक कमी रहती है। वह ठीक इसी प्रकार दुर्बल रह जाता है जिस प्रकार कि किसी छोटे पौधे को शुरू के काल में ही पानी न मिला हो शुरु के काल ने पानी की कमी में रहने वाला पौधा सदैव दुर्बल रहता है अथवा सूख कर नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार जिस बच्चे को बाल्यकाल में माँ की छाया अर्थात माँ का प्रेम न मिले वह सदैव किसी न किसी काम में दुर्बल ही रहता है। क्योंकि माँ का ममता भरा निस्वार्थ प्रेम बाल्यकाल में उसे सींचकर उसे बुद्धिबल व शारारिक बल प्रदान करके उसक मस्तिष्क व शरीर को सबल बल देता है। माँ बच्चे को केवल दूध ही नहीं पिलाती उसके साथ भाव भी पिलाती है जो दूध से ज्यादा सुखद होता है। आज की शोधों से यह सिद्ध हो गया है कि भोजन बनाते समय जो आदमी या औरत भोजन बना रहा है, उसकी भावदशा भी भोजन में प्रविष्ट हो जाती है। यही कारण है कि बराबर का आटा एक जैसी दाल, घी, मसाले आदि दो औरतों को देने पर वे दो प्रकार का खाना बना देती हैं। एक के हाथ का बनाया भोजन स्वादिष्ट बनता है दूसरी के हाथ का बेस्वाद हो जाता है। यह भीतर की भावदशा के कारण होता है। इसी भीतरी भावदशा के कारण आदमी को किसी के पास बैठकर दूर हटने को मन करता है। हर मानव के कार्य करने का एक क्षेत्र होता है। एक निश्चित परिधि के भीतर काम करके वह प्रसन्न व दक्ष बना रहता है तथा उस सीमा से बाहर पहुँचते ही उसकी कार्यक्षमता शून्य हो जाती है। वह बड़ा होकर भी नादान बच्चों जैसा हो जाता है। एक आदमी अपनी चौपाल पर थोड़े आदमियों के बीच बिना झिझक बोलता रहता है परन्तु उसी आदमी को जब साधारण बाते कहने के लिये भीड़ के सामने मंच पर खड़ा कर दिया जाता है तो वह घबराने लगता है, उसका कंठ सूख जाता है,

पैर कापने लगते हैं तथा वह धन्यवाद तक नहीं दे पाता। इसी कारण सहकारी खेती मानव के स्वभाव के प्रतिकूल है। चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि—

"जिस प्रकार कोई भी पुरुष या महिला दो दर्जन गायों या दो दर्जन बच्चों की सन्तोषजनक ढंग से देखभाल नहीं कर सकती उसी प्रकार कोई भी किसान किसी भी निर्धारित सीमा की भूमि से परे, दक्षता से फसलें नहीं उगा सकता।"

ये शब्द जीवन के मनोविज्ञान की परख के प्रतीक हैं जिनसे उनकी पैनी नजर का आभास मिलता है। भूमि से अधिक से अधिक पैदावार तभी ली जा सकती है जबकि व्यक्ति को ध्यान में रखकर कृषि नीति बनाई जायें। विदेशों की नकल हमारे लिये आत्मघाती है। जो मशीन किसान की कार्यकुशलता बढ़ाती हैं उसका उपयोग करना हितकर है जो उसके हाथों को बेकार कर देती है उसका उपयोग नहीं होना चाहिये।

संत की परीक्षा संसार में है, सिपाही की परीक्षा युद्ध भूमि में है तथा किसान की परीक्षा उसके खेत में है। चौधरी साहब के अनुसार किसान को कठिन परिश्रम करके अपनी जीविका कमानी है किसान चाहे रुढ़िवादी हो, परन्तु शोषक नहीं हैं। किसान किसी का भी शोषण नहीं करते। वे शरीर की आवश्यकता पूरी करके सन्तुष्ट रह जाते हैं। कृषि क्षेत्र में उन्नति तभी हो सकती है जब किसानों को सस्ती दरों पर दीर्घकालीन कर्जे दिये जायें ताकि अधिक उपज हो तथा कृषि देश के विकास में अग्रदूत की भूमिका निभा सके। चौधरी चरणसिंह कभी भी भारी उद्योगों के विरोधी नहीं रहे उनका मात्र यही कहना था कि जो वस्तु कुटीर उद्योगों में आसानी से बनाई जा सकती है उसके लिये बड़े उद्योग न लगाये जाये।

इस प्रकार चौधरी चरणसिंह किसानों को जगाकर, योजना बनाने वालों को जगाकर तथा योजना बनाने वालों को सचेत करके चले गये। उन्होनें कहा था कि दानशीलता हमेशा घर से शुरु होती है जिन्हे दूसरों की सहायता करने का अधिकार है वे सबसे पहले उनकी सहायता करेंगे जिनके साथ उनका खून का रिश्ता है या आर्थिक हित जुड़े हैं। इसी कारण किसान पुत्रों को आगे बढकर सत्ता पर अधिकार करना होगा। चौधरी साहब आजीवन किसानों की समस्याओं से जूझते रहे, उनके हित में बोलते रहे, उन्हे आगे बढ़ने व जीवन के यथार्थ को पहचानने का सन्देश

देते रहे। वे इन्हें स्वावलम्बी बनने का मंत्र सुझाते रहे। हर विदेशी सहायता आदमी को अपनी ही नजरों से गिरा देती है। समाज आदमी का उससे अधिक मूल्य नही लगाता जो वह स्वयं अपना लगाता है। भारत सदा से कृषि पर निर्भर रहा परन्तु एक दिन यह सोने की चिड़िया कहलाता था तथा भारत ने एक ऐसा स्वर्ण युग जाना था जिसके सामने आज का हर उत्थान फीका है। भारतीय संस्कृति ने एक ऐसा शिखर पार किया था जिसकी आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते। वे बोल उठते हैं कि **"पूर्णतया कृषि पर निर्भर रहने वाला भारत सदैव न तो गरीब था और न ही अविकसित देश था।"** इस प्रकार कृषि को सर्वोपरि मूल्य देने वाले चौधरी चरणसिंह ने इस विषय पर हर पहलू से विचार किया तथा एक आर्थिक दर्शन को जन्म दिया जिसकी अवहेलना भारत को पतन के गर्त में गिरा देगी। उन्होने एक सपना देखा था जो आज के सत्य, जीवन के सत्य पर आधारित था। उन्होनें गांव की धूल से ही समृद्धि का विशाल भवन बनाने की योजना दी थी जिसकी नींव गाँवों के खेत खलिहान पर रखनी है। समृद्धि की धारा गांवो से शहरों की ओर बहे तो ही सरिता बनती है शहरी समृद्धि गन्दी तलैया बनकर रह जाती है। गांव उपेक्षित पड़े रहते हैं। शहरों में आलीशान बहुमंजिला भवन आकाश की ओर उठने लगते हैं गावों के झोपड़े उजड़ जाते हैं। भारत का हितसाधन गांवो के साथ जुड़ा है। यह दर्शन समस्या का समाधान देता है। स्वयं कहा था कि—

"मेरे संस्कार उस गरीब किसान परिवार के संस्कार हैं जो धूल और कीचड़ के बीच एक छप्पर नुमा झोपड़ी में रहता है। मैने अपना बचपन उन किसानों के बीच बिताया है जो खेतों में नंगे बदन अपना पसीना बहाते हैं। खेती एक ऐसा व्यवसाय है जहा प्रकृति के साथ संघर्ष में किसान को धैर्य एवं अध्यवसाय के पाठ रोजाना पढ़ने पड़ते हैं फलतः उसमें दृढता और सहनशीलता उत्पन्न हो जाती है। इससे एक ऐसे चरित्र का निर्माण होता है जो अन्य किसी व्यवसाय में नहीं होता"।

इन शब्दों से उनकी किसानों के लिये किसानों के प्रति अथाह भक्ति प्रकट होती है। जो व्यक्ति जीवन में संघर्ष करता है वह भीतर से शक्तिशाली हो जाता है। सेठों के बच्चे इसी कारण अधिकतर कायर रह जाते हैं क्योकि उनके जीवन में कोई चुनौती नहीं होती हैं। पंजाब व उत्तर प्रदेश के रहने वालों के जीवन में चुनौती बार-बार आती रही है। सीमाओं में हमले हुए है हरियाणा ने महाभारत का

युद्ध देखा है राजस्थान ने अनेक सपूत वीरों को जन्म दिया है तथा अनेक युद्ध देखे हैं। वहा हर दिन चुनौती से भरा है इसी कारण वहा का आदमी वीर व बलिष्ठ है। मध्य प्रदेश ने इस तरह की चुनौती का सामना नहीं किया है उत्तर प्रदेश से लगे गोंहद क्षेत्र को छोड़कर शेष स्थानों पर जो आदमी रहते हैं, ढीले-ढाले व कमजोर शरीर वाले हैं। जहाँ मनुष्य बलिष्ठ होता है वहाँ पशु भी बलिष्ठ होता है। परन्तु इन अन्य स्थानों पर रहने वालों में भी व्यापारी से किसान का शरीर बलिष्ठ है। इस प्रकार चौधरी चरणसिंह ने जीवन का एक अनूठा शास्त्र दिया तथा हर पल किसान का साथ दिया। यदि किसान ऊपर उठता है तो देश ऊपर उठता है यदि किसान नीच गिरता है तो देश नीचे गिरता है। पूरे देश का भाग्य किसान के भाग्य से जुड़ा है। इस तरह की भावभरी वाणी कहने वाले चरणसिंह एक किसान नेता के शब्दों में केवल किसानों के मसीहा ही नहीं कलियुग के अवतार थे और किसान की अंगड़ाई से युग परिवर्तन होने वाला है। जो अपनी जड़ों के बाबत सोचता है अपनी जड़ों की जरुरत समझता है तथा आजीवन अपनी जड़ों को सींचता है धन्यभागी है। जो अपनों से बहुत ऊपर देश की सर्वोच्च कुर्सी पर पहुँचकर भी अपनों को एक पल के लिये नहीं भूला वह मर कर भी आज जिन्दा है। जिस प्रकार ताजमहल की तुलना केवल ताजमहल से तथा गंगा की तुलना केवल गंगा से तथा गौरीशंकर की तुलना गौरीशंकर से की जा सकती है उसी प्रकार चरणसिंह की तुलना केवल मात्र उन्हीं से की जा सकती है। जब तक आकाश में ध्रुवतारा चमकता रहेगा तब तक उसे देखकर किसानों को चौधरी चरणसिंह की याद आती रहेगी। किसानों के लिये उनका प्रेम ध्रुवतारे की तरह अटल था। उन्होंने किसानों के केवल दिल्ली की सत्ता तक पहुँचने का मार्ग ही नहीं दिखाया था वरन् उन्हें दिशा भी दी थी यही उनकी महानता है। यही उनका चमत्कार है।

□■□

अध्याय 12

भ्रष्टाचार का विषैला जाल

मानव शरीर ही नहीं मन भी है उसके पास सोचने समझने की शक्ति के रूप में बुद्धि भी है। अपनी झूठी शान दुनिया को दिखाने के लिये अहंकार भी है। यदि मानव सन्तोष को जीवन में धारण करे, शरीर की आवश्यकताओं को पूरा करने पर ध्यान रखने तथा बापू की सादा जीवन उच्च विचार की नीति का अनुकरण करे तो उसको भ्रष्टाचारी होने का कोई कारण शेष नहीं रह जाता। सदाचारी का सुख उसके भीतर मानसिक शांति में होता है। बेईमान का सुख बाहर उसकी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में होता है। महत्त्वाकांक्षा तो सिकन्दर भी पूरा नहीं कर पाते तथा सभी सिकन्दर आधी यात्रा में मर जाते हैं। जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य तभी शुरू होता है जब आदमी मन की इच्छाओं व वासनाओं को पूरा करने में खुद खण्डहर हो जाता है। उसको भ्रष्टाचार धन तो जुटा देता है पर जीवन की धन्यता छीन लेता है। उसे बदले में मिलता है मस्तिष्क का तनाव, उच्च रक्तचाप, रात की अनिद्रा व दिन की बैचेनी। इन सबको सहते हुए भी आदमी अपने ऊपर मन की मनमानी चलने देता है। चौधरी चरणसिंह ने अपनी पैनी दृष्टि से जीवन के यथार्थ को भाँप लिया था। जब ऊपर बैठा नेता ही दुर्बल विचारों का दास हो जाता है, तब साधारण जन को भटकने से नहीं रोका जा सकता। गीता में कहा गया है कि अग्रिम पंक्ति में खड़े लोग नेतृत्व देते, जन जैसा आचरण करते हैं साधारण जन उनका अनुसरण करते हैं अर्थात उनके पीछे-पीछे चलते हैं। यथा राजा तथा प्रजा अर्थात जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है। यदि राजा अपने को अधिक नहीं उछालता तथा अपने आचरण से दूसरों को यह भरोसा दिला देता है कि सन्तोष में ही सुख है तो प्रजा भी साधारण जीवन जीकर प्रसन्न रहने लगती है। एक विचारक ने एक बार कहा था कि—

"एक महान देश का सम्राट अपने राज्य में कैसे अपने शरीर को उछालता फिर सकता है इसके छिछोरेपन में केन्द्र खो जाता है जल्दबाजी में स्वयं पर मालकियत नष्ट हो जाती है।" इस विचारक के कहने का तात्पर्य यही था कि जो लोग संसार में अपने शरीर को उछालते फिरते हैं वे इसे दुख से भर देते हैं। कपड़े शरीर को ढकने के लिये नहीं शरीर को दिखाने के लिये प्रयोग किये जाते हैं। जीवन से सादगी व सरलता लुप्त होती जा रही है। मानव ने अपने हाथ का बना कपड़ा पहनना बन्द कर दिया है। महँगे कपड़े, जेवर आदि

पहनना आज का आम चलन हो गया है। आज आदमी अपनी नजरों में चढ़ने के बजाय दूसरों की नजरों में ऊपर चढ़ना चाहता है जबकि दूसरों की नजरों में आदमी उसी समय चढ़ता है जब वह अपनी नजरों में चढ़ जाता है। एक विचारक ने सही कहा था कि समाज आपका उससे अधिक मूल्य नहीं लगा सकता जितना आप स्वयं अपना लगाते हैं। इस प्रकार भीतरी अर्जन ही असली है। बाहरी चमक धमक आदमी को एक न एक दिन कुमार्ग पर ले जाती है। एक समय था कि इस देश में जो आदमी गद्दी पर बैठा होता था वह उस आदमी से जीवन रहस्य सीखने जाता था, जो सर्वस्व त्यागी था। सही मन्त्रणा वही दे सकता था जो स्वार्थ से ऊपर उठ गया हो। इस देश में एक समय था जब लोग सम्पत्ति उसे मानते थे जो बांटने पर बढ़ती थी जो बांटने पर घट जाये उसे विपत्ति मानते थे। जब से संग्रह वृत्ति बढ़ी तथा नेतृत्व भटकने लगा तभी से इस देश के दुर्भाग्य की कथा शुरू होती है। साधारण आदमी अपने आस-पास के वातावरण व रहन-सहन से सीखता है। जीवन में बड़ों के प्रभाव में आना एक सामान्य घटना है। आज हर मानव प्रतियोगी बना हुआ है वह सफल होकर अपने होने की घोषणा करना चाहता है। उसे अपना कुछ कर दिखाने का बुखार चढ़ा हुआ है और इससे शुरू होती है महत्त्वांकाक्षा की दौड़। चुनाव का व्यय, मकान बनाने में लगने वाली धनराशि, लड़की की शादी अपने लिये वाहन व अन्य सुविधा जुटाना आदि आज राजनीति के प्रमुख अंग बन गये हैं। चौधरी चरणसिंह का मानना था कि भ्रष्टाचार सदा ही ऊपर से नीचे की ओर फैलता है यदि शीर्ष नेतृत्व अर्थात ऊपर के लोग ईमानदारी से आचरण करें तो नीचे के लोगों में स्वतः ही ईमानदारी आ जायेगी। प्रकृति ने जीवन की तीन प्रमुख चीजें जल, प्रकाश तथा वायु हर मानव को मुफ्त में उपहार स्वरूप दी हैं औरयदि वह सादा रहकर अपने स्वास्थ्य, अपनी शक्ति तथा अपने गुणों से सुख लेने लगे तो वह बेईमान नहीं हो सकता। आदमी बेईमान तभी बनता है जब वह मानता है कि सुख बाहर हीरा-मोती व अन्य सम्पत्ति में है। चौधरी चरणसिंह की मान्यता थी कि यदि दिल्ली की गद्दी पर आसीन नेता भ्रष्टाचार में डूबा तो बाकी देश को फिर भ्रष्टाचारी होने से नहीं रोका जा सकेगा। अधिकतर लोग केवल नकल से ही सीखते हैं। आदमी नकल करने में महारथी है, वह भीड़ में रहना चाहता है और भीड़ में भी भेड़चाल है आगे चलने वाली भेड़ यदि खड्डे में गिर जाये तो पीछे चलने वाली भेड़ें फिर अपना भला बुरा नहीं सोचती। यह तो भेड़ों की बात

है जिनमें सोचने समझने की शक्ति नहीं है मानव भी भीड़ में यही करता है वह आगे चलने वालों के हाथ का यन्त्र बन जाता है। भीड़ में आदमी अपना विवेक खो देता है तथा भीड़ वही करती है जो नेता चाहते हैं। अतः जब तक राजनेता का दामन साफ नहीं होता तब तक छोटे-छोटे विभागों में चल रहे भ्रष्टाचार की चर्चा ही व्यर्थ है। चौधरी चरणसिंह ने एक बार कहा था कि—

"जब तक देश में राजनैतिक भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो जाता तब तक नौकरशाही से भ्रष्टाचार के खात्मे की बात बेमानी है।"

इन शब्दों से यह उजागर होता है कि चौधरी चरणसिंह मूल बीमारी को मिटाने के पक्षधर थे। जब पेड़ की जड़ें ही विषाक्त हो गई हों तब पत्तियों को साफ पानी से धोने से कोई लाभ नहीं होगा। हर मानव को कोई न कोई दोष होता है कोई क्रोधी तो कोई लोभी है। काम, क्रोध, लोभ व मोह में से एक बीमारी प्रबल होकर मानव पर बन्धन कसने लगती है यदि मानव उस मूल बीमारी को छिपाकर छोटी बीमारी से लड़ने लगे तो उसे कोई लाभ नहीं होता इसी प्रकार यदि सबसे ऊपर की गद्दी पर आसीन लोगों का ही सुधार नहीं किया जाता तो छोटे लोगों की गर्दन पकड़ने से आँकड़े भर ही इकट्ठे होगें। देश का कोई लाभ नहीं होगा। वह आदमी मूढ़ है जो अपनी मूल बीमारी का इलाज नहीं कराता। वह नेतृत्व भटका हुआ है जो बड़ों के भ्रष्टाचार को सरंक्षण देकर निम्न की गर्दन की ओर हाथ बढ़ाता है। हर आदमी को अपनी परामर्श का स्वयं गवाह होना चाहिये। जो परामर्श अपने ही काम नहीं आता उसे दूसरों को बताने में कोई लाभ नहीं है। दूसरों को उपदेश देने में कुशलता तभी सार्थक है जब अपना भी आचरण अपने शब्दों की गवाही देता हो। जब अपना ही हृदय अपनी बातों के समर्थन में खड़ा होता है तभी सफलता प्राप्त हो सकती है। चौधरी चरणसिंह जब तक सत्ता की कुर्सी पर बैठे रहे और जो विभाग उन्होंने संभाले यह सभी का अनुभव है कि उन विभागों में भ्रष्टाचार पर अंकुश लग गया। जब ऊपर बैठा मंत्री स्वच्छ हो तो नीचे बैठे लोग अपने आप बदलने लगते हैं। जब सूर्योदय होता है तो फूल अपने आप खिलने लगते हैं। उनमें गजब की प्राण शक्ति तथा अपनी पुरूषार्थ भरी प्रबल हवा थी जिसका प्रभाव तुरन्त पड़ने लगता था। जब कोई विचार किसी व्यक्ति के भीतर पूरी निष्ठा के साथ केन्द्र पर बैठ जाता है तो उसकी किरणें बाहर भी निकलकर लोगों को प्रभावित करने लगती हैं यही नेतृत्व शक्ति का राज है। जो अपनी आस्था

को गिरगिट की तरह सुबह शाम बदलते रहते हैं उनमें नेतृत्व शक्ति का उदय नहीं होता है। नेतृत्व शक्ति आत्मविश्वास व गहन निष्ठा से पैदा होती है। चाहे प्राण चला जाये परन्तु अपनी अमृत भरी आस्था को जो नहीं छोड़ता वह शनैःशनै नेता बनने लगता है। स्वेट मार्टेन ने सही कहा था कि जो दुर्बल विचारों का दास है वह अग्रणी नेता नहीं बन सकता। चौधरी चरणसिंह ने आदमी को उसके गौरव का स्मरण दिलाया। जब आदमी पागल होकर पदार्थ के पीछे दौड़ता है तो जीवन में जो भी श्रेष्ठ व शुभ है वह सब खोने लगता है। घरों के भीतर व्यापार तथा घरों के बाहर भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। पैरों में पत्थर बाँधकर शिखर नहीं चढ़ा जाता। पत्थर की नाव बनाकर नदी में नहीं उतरा जाता। छाती पर पत्थर रखकर रात को नहीं सोया जाता और जब भूख लगती है तो अन्न, दूध व फल खाया जाता है पत्थर नहीं। जहाँ आपसी भाईचारा व सद्‌भाव नहीं होता वह आदमी केवल पत्थर पर सर पटक-पटक कर मरता है। भारत के चेहरे पर उस समय तक रौनक नहीं आ सकती जब तक किसान का चेहरा बुझा-बुझा व उदास रहता है। भारत के चेहरे पर रौनक उसी दिन आ पायेगी जब अन्तिम पंक्ति में खड़ा किसान भारत के विकास का समर्थन करेगा। बिना भ्रष्टाचार मिटाये भारत के चेहरे पर रौनक नहीं आ सकती। भ्रष्टाचार तभी मिट सकता है जब लोग पदार्थ को कम तथा जीवन को अधिक मूल्य देंगे। भ्रष्टाचारी जीवन भर भोजन की व्यवस्था जुटाने में लगा रहता है वह अपनी आने वाली सात पीढ़ियों तक का इन्तजाम करके पृथ्वी से विदा होना चाहता है। यह जीवन से सादगी, समता व सरलता के विदा होने के कारण हुआ है। जहाँ सादगी है वही शिष्टाचार है, जहाँ आडम्बर है वही भ्रष्टाचार है। जहाँ सादगी है वहाँ सुख है, जहाँ शोषण है वहाँ संकट है। जहाँ सादगी है वहाँ सद्‌गुणों की प्रतिष्ठा है, जहाँ दिखावा है वहाँ सामान के लिये छीना झपटी है। चौधरी चरणसिंह जीवन गाड़ी को गुणों की ओर मोड़ना चाहते थे। जो भीतर से दरिद्र होते हैं बाहर से दिखावा करते हैं, जो आत्मा के स्तर पर हीनता की ग्रन्थि से पीड़ित होते हैं वे उस कमी को पदार्थ से पूरा करना चाहते हैं। जिनके भीतर अंधकार होता है वे बाहर बड़ी चमक-धमक का आयोजन करते हैं। जो भीतर से धनी होते हैं उनके हाथ में भिक्षापात्र नहीं होता जो भीतर से उजड़े होते हैं वे बाहर बड़े महल बनाना चाहते हैं। झोपड़े में रहने वाला एक गांधी, एक गौतम, एक महावीर, एक दयानन्द हजारों महलों में रहन वाले राजाओं को अपने चरणों में झुकाने

में समर्थ होता है। चौधरी भीतरी समृद्धि के पुजारी थे तथा भ्रष्टाचार को जड़मूल मिटाना चाहते थे। जो भीतर भव्य नहीं है वही बाहर भ्रष्टाचारी है। अभागा होगा वह दिन जब देश में ऐसे जीवन्त नेता पैदा होना बन्द हो जायेगें। चौ० साहब की सच्चाई, चरित्र, ईमानदारी व देशप्रेम पर विपक्षी भी कभी उंगली नहीं उठा पाये। अन्य देश के बड़े नेताओं पर जनता के बीच उनके चरित्र व ईमानदारी पर आम जनता प्रश्नचिह्न लगा देती है परन्तु चौ० साहब के चरित्र ईमानदारी व सच्चाई पर आम जनता में भी कोई उंगली उठाने का साहस नहीं करता। यही उनके सच्चे इंसान व सच्चे देश प्रेमी होने का प्रमाण है। वे आज भी देश की जनता में भ्रष्टाचार के प्रबल विरोधी समझे जाते हैं। जो मानव को अपनी गरिमा पहचानने तथा अपनी दुर्बलता त्यागने का संदेश ही नहीं देते वरन् उनके सामने अपने जीवन का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। जब मानव की चेतना का तीर पृथ्वी से आकाश की ओर उठता है तथा अपना मस्तक ऊँचा करके चलने का उत्साह पैदा करता है तभी चरणसिंह का सपना साकार होने लगता है। जिस दिन यह समाज शोषण व भ्रष्टाचार से मुक्त होगा उस दिन यह धरती स्वर्ग बनेगी। चौधरी साहब के ये शब्द सदैव याद किये जाने योग्य हैं—

"जिसका आचरण उदाहरण प्रस्तुत नहीं करेगा वह किसी को क्या प्रेरणा देगा।"

दूसरों को उदाहरण देते हुये जीना ही यज्ञमय प्रेरणादायी जीवन है। एक विचारक ने सही कहा था कि अच्छा बोलना अच्छा है अच्छे कर्म करना और भी अच्छा परन्तु कभी भी ऐसा नहीं होना चाहिये कि शब्द बड़े हों और जीवन छोटा हो। प्रत्येक मानव को अपने शब्दों को आचरण में उतारना चाहिये।

□■□